॥ हरि:ॐ ॥

श्रीमोटावाणी

३-४

પૂજ્ય શ્રીમોટા
હરિ:ૐ
હરિ:ૐ આશ્રમ-સુરત

॥ हरि:ॐ ॥

श्रीमोटा-वाणी [३]

गुरुपूर्णिमा के कौटुम्बिक उत्सव प्रसंग पर श्रीमोटा की पावन ध्वनिमुद्रित वाणी

(कुंभकोणम्, ता. २१-७-१९६८)

: अनुवाद :

भास्कर भट्ट

रजनीभाई बर्मावाला 'हरि:ॐ'

हरि:ॐ आश्रम प्रकाशन, सूरत

❑ प्रकाशक : हरि:ॐ आश्रम, कुरुक्षेत्र महादेव मंदिर के पास में,
जहाँगीरपुरा, सूरत–३९५००५.
दूरभाष : (०२६१) २७६५५६४, २७७१०४६
भ्रमणभाष : ९७२७७ ३३४००
E-mail : hariommota1@gmail.com
Website : www.hariommota.org

© हरि:ॐ आश्रम, सूरत–३९५००५

❑ संस्करण : प्रथम प्रत–१०००

❑ प्राप्तिस्थान : (१) हरि:ॐ आश्रम, सूरत–३९५००५. वेबसाईट

❑ **मुख पृष्ठ :** मयूर जानी, मो. : ९४२८४०४४४३

❑ **अक्षरांकन : अर्थ कोम्प्यूटर**
२०३, मौर्य कोम्प्लेक्स, सी. यू. शाह कोलेज के सामने,
इन्कमटेक्स, अहमदाबाद–३८० ०१४
भ्रमणभाष : ९३२७०३६४१४

❑ **मुद्रक : साहित्य मुद्रणालय प्रा. लि.**
सिटी मिल कंपाउन्ड, कांकरिया रोड,
अहमदाबाद–३८० ०२२ दूरभाष : (०७९) २५४६९१०१

॥ हरिःॐ ॥

• निवेदन •

(प्रथम संस्करण)

श्रीमोटा क्वचित् ही प्रवचन करते थे । उनकी पावन वाणी यानी उत्सव प्रवचन या कहीं किसी स्वजन के यहाँ घर में निजी बातचीत हुई हो और उस स्वजन ने ध्वनिमुद्रित कर ली हो वह वाणी । ऐसी ध्वनिमुद्रित वाणी को हमारे ट्रस्टीमंडल के एक ट्रस्टी श्री रजनीभाई बर्मावाला ने अक्षरशः सुनकर उसकी पाण्डुलिपि अथाक परिश्रम से तैयार की थी और मई १९९२ से मार्च १९९६ दरमियान चौदह पुस्तकों की एक श्रेणी का प्रकाशन मुख्यतः स्वजन श्री यशवंतभाई ए. पटेल (बापु), अहमदाबाद के आर्थिक सहयोग से कराया था । वे सभी पुस्तकों का पुनः प्रकाशन का कार्य अब हमारे ट्रस्ट ने संभाल लिया है ।

श्रीमोटा की पावन बोधदायक वाणी का लाभ बिनगुजराती भाषियों को भी मिल सके, उस हेतु से उसका अनुवाद हिन्दी और अंग्रेजी में करने का आयोजन हमारे ट्रस्ट द्वारा किया गया है ।

श्रीमोटा जैसे भगवान के अनुभवी पुरुष की वाणी सरल लोकभाषा में होते हुए भी बड़ी मार्मिक है और उनके मुख से निकला एक-एक अक्षर, शब्द गहन आध्यात्मिक रहस्यवाला होता है । इससे साहित्यिक दृष्टि से यह वाणी ठीक नहीं लगेगी । आपश्री कहते थे के 'मेरे लेख में अल्पविराम को भी आगेपीछे करना नहीं । और कितनी ही बार एक ही एक बाबत का पुनरावर्तन होता हो तो उसे भी वैसा ही रहने देना । इस आज्ञा को ध्यान में लेकर

श्रीमोटा की यह ध्वनिमुद्रित वाणी जैसे बोले हैं, वैसे ही मुद्रित की है । इसमें कोई सुधार नहीं किया गया है ।

इस श्रेणी के असल गुजराती पुस्तकों के पुनः प्रकाशन के कार्य दरमियान भी हमारे ट्रस्टी श्री रजनीभाई बर्मावाला ने पू. श्रीमोटा की पूरी ध्वनिमुद्रित वाणी फिर से सुनकर यह लेख अक्षरशः वाणी अनुसार है, यह मिलाकर ट्रस्ट के ट्रस्टी की हैसियत से उनका फर्ज पूर्ण किया है, इससे उनका आभार मानना आवश्यक नहीं है ।

इस पुस्तक का मुद्रणकार्य एवं चतुरंगी मुखपृष्ठ श्री श्रेयसभाई पंड्या, मे. साहित्य मुद्रणालय प्रा. लि., अहमदाबाद ने पू. श्रीमोटा के प्रति अत्यंत भक्तिपूर्वक, प्रेमभाव से किया है । हम उनका खूब-खूब आभार मानते हैं ।

समाज का विशाल वर्ग श्रीमोटा की इस वाणी द्वारा अपना जीवनविकास कर सके और श्रीमोटा का आध्यात्मिक विज्ञान को सरलता से समझ सके, ऐसी शुभ भावना के साथ यह पुस्तक समाज के करकमलों में अर्पण करते हैं ।

– ट्रस्टीमंडल

हरिःॐ आश्रम, सूरत

‘‘मैं सर्वत्र विद्यमान हूँ’’

– मोटा

॥ हरि:ॐ ॥

• विषय-सूचि •

१. धार्मिक भावना की विशेषता दक्षिण भारत में है ७
२. हरियाली रमणीयता का प्रदेश दक्षिण भारत है ८
३. कुंभकोणम् में आश्रम की स्थापना ८
४. एकांत, जलाशय के पास आश्रम की स्थापना का रहस्य १०
५. वेदकाल में गुरु की प्रथा नहीं थी ११
६. मूर्तिपूजा की उत्पत्ति का कारण—भावना का पतन रोकने के लिए १२
७. सकल ब्रह्मांड—सिर्फ अणु-परमाणु का खेल है १४
८. वेदकाल में ऋषिमुनियों के जीवन में चेतन का ही महत्त्व १४
९. गुरुप्रथा का उद्‌भव—जीवन की भावना का पतन रोकने के लिए १६
१०. महादेव के मंदिर में नंदी—कछुए का रहस्य १७
११. चेतनानिष्ठ निरीच्छ है १८
१२. चेतनानिष्ठ शरीरधारी भगवान नहीं है १९
१३. चेतनानिष्ठ शरीरधारी और ब्रह्म—भगवान के बीच का फर्क २०
१४. चेतनानिष्ठ— अनुभवी का मुख्य कर्तव्य और पहचान के लक्षण २२
१५. चेतनानिष्ठ जड़ में चेतना प्रकट कर सकता है २३
१६. चेतनानिष्ठ को समय और स्थल की मर्यादा नहीं होती २४
१७. **मोटा** का और आश्रम का प्रचार मौनार्थी-स्वजन करते हैं...... २६
१८. **मोटा** का मुख्य कर्तव्य—पैसे इकट्ठे करना नहीं है २७
१९. धर्म के लक्षण—समाज में गुण और भावना का प्रकट होना .. २९

२०. पुनर्जन्म की साबिती २९
२१. उत्तम दान—समाज में गुण और भावना प्रगट करे ३१
२२. चेतनानिष्ठ का भक्तिभावपूर्ण संग जीवन-उद्धारक ३२
२३. चेतनानिष्ठ का आश्रय जबरदस्त शक्तिदायक है.................. ३५
२४. चेतनानिष्ठ का संबंध निमित्त आधारित है ३६
२५. निमित्त में चेतनानिष्ठ की शक्ति भगवान का काम है............. ३८
२६. चेतनानिष्ठ का संबंध निमित्त संयोग से होता है ३९
२७. धर्म का उदय दक्षिण भारत में से होगा ४०
२८. अराजकता का समय आनेवाला है ४१
२९. अराजकता में टिकने का सहारा सिर्फ भगवान है ४४
३०. समाज के पतन का कारण—पैसे का महत्त्व ४५
३१. भगवान के प्रतिनिधि—महात्माओं की सोबत विकसित करें ४६
३२. भगवान का सगुण और निर्गुण स्वरूप ४७
३३. भगवान शंकर का प्रतीकात्मक रहस्य ४९
३४. चेतनानिष्ठ में विरोधाभास का मेल होता है......................... ५०
३५. स्वविकास की नींव—गुरु में तादात्म्यता ५२
३६. **मोटा** आपके कुटुम्ब के एक हैं................................. ५४
३७. **मोटा** का कर्तव्य—भगवान की भावना का बीजारोपन ... ५४
३८. चेतनानिष्ठ की ऋण अदा करने की रीत ५५
३९. चेतनानिष्ठ में चार प्रकार के परमहंस ५६
४०. गुरुमहाराज की सिखावन अनुसार चलता हूँ.................. ५८
४१. मोटा—पीढ़ी के हितेच्छु हैं ५९
३५. श्री हरिभाई का उद्बोधन ६१

॥ हरि:ॐ ॥

॥ हरि:ॐ ॥

दिनांक २१-७-१९६८ के दिन कुंभकोणम् में गुरुपूर्णिमा के दिन हुए कौटुम्बिक उत्सव प्रसंग पर श्रीमोटा की पावन ध्वनिमुद्रित वाणी

• धार्मिक भावना की विशेषता दक्षिण भारत में है •

.... तब से मुझे यह देश जैसे कि मेरा घर हो ऐसा लगा हुआ है। तब मैंने भाई नंदलाल से कहा कि इस देश में बहुत भावना है। तब उनके गले बात नहीं उतरी थी। फिर जैसे-जैसे उनको समझ अनुभव के प्रदेश की होने लगी, तब उनको लगा कि **मोटा** की बात सच है कि यह दक्षिण के लोग उत्तर हिन्दुस्तान से, हमारे गुजरात से यहाँ लोग ज्यादा भावनावाले हैं और धर्म जिसे कहें धर्म का बीज यहाँ विशेष है।

यहाँ से हमारे देश में, हमारे समाज में धर्म का उदय जब होनेवाला होगा, तभी दक्षिण में से ही होनेवाला है। हिन्दुस्तान के एक-एक संप्रदाय लो। धर्म के संप्रदाय, उन संप्रदाय के आचार्यों दक्षिण में से ही हुए हैं, यह इतिहास की बात है।

इस दक्षिण को जितना महत्त्व हमारी अभी की भी देश की सरकार या अन्य देंगे तो पूरे हिन्दुस्तान देश का उसमें कल्याण समाया हुआ है। परंतु उसे बनाये रखना भी उतना ही कठिन है। यहाँ दक्षिण हिन्दुस्तान में जितनी गरीबी है, उतनी

दूसरी जगह नहीं है। इसलिए उस वर्ग को, गरीब वर्ग, निम्न वर्ग है, उसे यदि हम इस समय में नहीं संभाल सकेंगे तो बहुत भयंकर परिणाम भी आने की संभावना है।

• हरियाली रमणीयता का प्रदेश दक्षिण भारत है •

तब यह प्रदेश एक तो रमणीय, कुदरत की नैसर्गिक, कुदरत का नैसर्गिक सौंदर्य नदियों से भरपूर, खेतीबाड़ी भी बहुत अच्छी हो सकती है। दक्षिण भारत में जितना चावल पैदा होता है, उतना अन्य किसी जगह पैदा नहीं होता है। वैसे तो दूसरी जगह है, बंगाल इत्यादि प्रदेश, वहाँ भी ज्यादा पैदावार है, परंतु दक्षिण भारत जितनी कहीं नहीं है।

इससे 'शश्य श्यामलाम् मातरम्' वह जो असल के कवि ने गाया है, वह दक्षिण भारत को विशेष लागू होता है। बंगाल में हालांकि हरियाली है, सब हराभरा दिखता है, परंतु उससे भी ज्यादा रमणीय देश हमारा दक्षिण भारत है।

• कुंभकोणम् में आश्रम की स्थापना •

तब भगवान की कृपा से इस देश में मेरा आना जो हुआ, उसमें भी कोई न कोई हेतु ही रहा हुआ है। बिना किसी हेतु के कोई भी कार्य हो नहीं सकता। इससे जब यहाँ आने का हुआ, तब मुझे बहुत प्रसन्नता हुई। और तब से मुझे विचार आया कि एक आश्रम हो तो यह साधना के लिए अनुकूल हो सकेगा। तो ऐसा आश्रम बनाना और भगवान की कृपा से वह

हो तो अच्छा, क्योंकि मेरे पास पैसे तो थे नहीं। वैसे आर्थिक स्थिति तो मेरे परिवार की आर्थिक स्थिति अत्यंत गरीबी की, बहुत गरीबी और उसमें भी तो बीस वर्ष देश की सेवा में बितायें, तब हमें पगार कुछ ज्यादा नहीं मिलता था, सिर्फ पैंतालिस रुपये ही मिलते थे।

परंतु बाद में भगवान की कृपा से आश्रम के लिए ठीक-ठीक रकम इकट्ठी हुई। अंदाजन नब्बे हजार तक की कह सकते हैं, उतनी परंतु तब मुझे लगा की मेरे भगवान का हुक्म मिला नहीं है, इसलिए वह पूरी रकम वापस कर दी। फिर जब १९५० के वर्ष में मैं यहाँ था या तो '५० या '४९ '५० के वर्ष में हरि का जन्म हुआ है '४९ में। तब मामा को (श्री हसमुखभाई के पिताश्री गोपालदासभाई जो श्री नंदुभाई के मामा होते) मैंने कहा कि मुझे इस तरफ एक आश्रम बनाना है, तो कोई अच्छी जगह हम तलाश करें। बहुत मेहनत की थी। मामा इतने सारे हम और सब जगह-जगह कुंभकोणम् और आगे-पीछे बहुत भटके थे और कई जगह देखी तथा मामा भी अपना कामकाज छोड़कर यहाँ रहे हमारे साथ। और हम बहुत घूमे, फिर आखिर अभी जहाँ आश्रम है, वह जगह मुझे पसंद आई कि यह जगह मुझे बहुत पसंद है।

अब एक बात मैं कहता हूँ कि जो हमारी कल्पना में या मानने में न आये। कि अभी जो समाधि है, उस समाधि के संत की consicousness चेतना का भी मुझे अनुभव हुआ था और तब भाई हसमुखभाई को बात कही थी और उस चेतना

का संपूर्ण अनुभव उनको नहीं हुआ था, यह भी पता लगा था। तब यह जगह मैंने कहा बहुत उत्तम है और यह जगह हमें लेनी चाहिए और वह जगह लेने के लिए थोड़े ज्यादा पैसे भी हमें देने पड़े थे।

• एकांत, जलाशय के पास आश्रम की स्थापना का रहस्य •

प्राचीन समय में साधु-पुरुषों के ऐसे आश्रम थे, वह भी जलाशय के किनारे पर ही। उसका एक बड़ा रहस्य तो यह है कि हमारे वातावरण में अनेक प्रकार के उग्र विचारों के आंदोलन वातावरण में होते हैं। आज हम यहाँ बैठे हैं। इस कमरे के अंदर भी कितने सारे देशों के शब्द हैं यहाँ पर। इन्लेन्ड के हैं। चाईना के हैं। जापान है। चीन है। इन्लेन्ड है, रशिया है, जर्मनी है। फ्रांस, हिन्दुस्तान के एक-एक जहाँ-जहाँ रेडियो हैं, उस-उस स्थान के शब्द इस कमरे के अंदर हैं। यह तो आज विज्ञान ने साबित किया है।

एक काल ऐसा आएगा कि तब हमारे लोग यह भी मानने लगेंगे कि भई जैसे शब्द की तरंगे हैं, उसी तरह इस विचार की भी तरंगें हैं और यह विचार की तरंगें जैसे शहर के लोग आबादी अधिक वहाँ अलग-अलग प्रकार के, अनेक प्रकार के, टेढ़े, उलटे, खड़े, विरोधवाले उन विचारों की तरंगें हैं और वह विचार की तरंगें भी हमें स्पर्श करती हैं। जिस समय जिस-जिस प्रकार का हमारा mood हो, भूमिका हो, उस प्रकार के

विचार के आंदोलनों हमें छूते होते हैं। इस वातावरण में से। परंतु उसकी नींव हमारे में रही होती है। वे आंदोलन जरूर हमें छूते हैं; इससे जितना एकांत में, दूर से दूर आश्रम हो और जलाशय के पास देखो तो विशेष अच्छा।

प्राचीन समय में देखो तो आश्रम का वर्णन पढ़ो तो जलाशय को बहुत महत्त्व दिया गया है। वह इसलिए कि जल जलतत्त्व ऐसा है कि इन सब तरंगों को शीतलता प्रदान करता है। उनकी उग्रता का हरण करनेवाला है। इतना ही नहीं, परंतु हमें स्वयं को भी उसमें से आनंद प्राप्त होता है। जल उपयोगी है। हमें– संसार को– मनुष्यों को, जलचर प्राणियों को, पशु-पक्षी को पृथ्वी पर जो कुछ है, जड़-चेतन सब को ही पानी का बहुत उपयोग है और बड़े से बड़ा ज्यादा से ज्यादा लाभप्रद तो यह है कि ऐसे जो विचार के उग्र आंदोलन होते हैं, उसे कमजोर करता है जल-तत्त्व। यह एक बड़े से बड़ा उसका फायदा है, इसी कारण से आश्रमों के पास जलाशय होना ही चाहिए। यह प्राचीन समय से एक रूढि प्रचार हो गया था। मेरे गुजरात में जहाँ-जहाँ आश्रम हैं, वहाँ हर जगह नदी है। नडियाद में, सुरत में बिलकुल नदी किनारे है। यहाँ भी भगवान की कृपा से हमें ऐसा आश्रम मिल गया।

• वेदकाल में गुरु की प्रथा नहीं थी •

अब यह गुरु की प्रथा को, रिवाज को हम विचार करें तो प्राचीन वेदकाल के समय में गुरु नहीं है। गुरु की परंपरा

नहीं थी। इसका अर्थ ऋषिमुनि नहीं थे ऐसा नहीं। ऋषियों का अस्तित्व था। बड़े-बड़े गुरुकुल भी थे तब भी। पढ़ने के लिए ऋषिमुनियों के पास वे जाते जरूर। और यह भी संस्कृति में था कि जिसे जिसकी पास पढ़ना है, उसके प्रति यदि आदर और नम्रता हमारे में प्रकट न हुए हो तो विद्या का हृदय हमारे में प्रकट होता नहीं। इसीसे हमें यदि विद्या सीखनी हो, विद्या सीखने की गरज हो तो जिसके पास से सीखनी हो, उसके प्रति हमें आदर, सद्‌भाव, नम्रता, प्रकट हुए हों तो उसके पास से हम ज्यादा सीख सकेंगे।

संसारव्यवहार में भी किसी के वहाँ हम यदि सीखने के लिए रहे हो तो उच्छृंखलता से यदि उसके साथ व्यवहार करें, बदतमीजी से व्यवहार करें, बेपरवाही से व्यवहार करें, उसके सामने बगावत करें तो उसके पास से कुछ भी हमें सीखने का नहीं मिलेगा। अरे ! सिर्फ नौकरी भी करते हो तो भी उसके साथ यदि हमारा प्रेम का संबंध नहीं प्रकट होगा, उसके साथ यदि हमारा सद्‌भावभरा मेल नहीं होगा, सुमेल नहीं होगा तो वहाँ भी कुछ ठिकाना नहीं होगा। आप आगे नहीं बढ़ सकोगे।

• मूर्तिपूजा की उत्पत्ति का कारण– भावना का पतन रोकने के लिए •

तब हमारे ऋषिमुनियों ने देखा कि जैसे-जैसे भावना का पतन होता जाएगा वैसे-वैसे वह भावना हमारे में जागृत करने

के लिए वह जो medium साधन वह साधन धीरे-धीरे सूक्ष्म में से स्थूल होता जाता है। आज मूर्तिपूजा इसीलिए ही है। असल के समय में कोई मूर्तिपूजा नहीं थी। परंतु समाज का— समाज की भावना का जैसे-जैसे पतन होता गया तो समाज को जीवित रखने समाज की भावना को कोमल-कोमल रखने के लिए कोई साधन चाहिए। इसीसे उसके बाद यह मूर्ति का साधन हुआ।

इसी तरह वेदकाल या तो Pre-Vedic Times में अपने आप भावना की प्रचंड लहर थी और स्वयं के जीवन का— जीवन का हेतु ज्यादातर लोग समझते थे। जीवन किस लिए मिला है और उसके लिए लोगों की आतुरता भी विशेष थी। वैसे आचार्य, ऋषिमुनियों भी विशेष थे। उन लोगों ने जीवन का स्वीकार किया था। जीवन का स्वीकार किया था अर्थात् यह जीवन या संसार मिथ्या है, उस तरह की तब किसी भावना का अस्तित्व न था। उन लोगों ने जीवन का स्वीकार किया था।

उसके बाद की अवधि में यानी कि शंकराचार्य की अवधि में यह जगत मिथ्या का ख्याल हमारे समाज में प्रकट हुआ। परंतु वह भी शंकराचार्य तो relatively था। चेतन की अपेक्षा से यह जगत मिथ्या है। यह पूरा जगत जो दिखता है वैसा है नहीं। यह तो सिर्फ दृश्यमान है ऐसा। परंतु उसके पीछे का रहस्य तो अलग है।

• सकल ब्रह्मांड—सिर्फ अणु-परमाणु का खेल है •

उदाहरण के लिए हम जो कुछ भी देखते हैं, वह सब का सब अणु-परमाणु का बना हुआ है । यह सब खेल अणु-परमाणु के ratio का ही है । उदाहरण के लिए पारा और सोना लें तो उसमें ...... ratio का थोड़ा फर्क हो जाय तो सोना हो जाय पारे में से और सोने के अणुओं में से कुछ अणु कम कर दें तो पारा हो जाएगा । तब यह अणु-परमाणु का जो ratio है, वह प्रत्येक का ratio अलग-अलग है । इससे अलग स्वरूप दिखता है । है तो सिर्फ अणु का । तब अणु-परमाणु का यह खेल है और अणु-परमाणु में देखें तो अनंत शक्ति रही हुई है ।

इससे हमारे अनुभवी पुरुषों—ऋषिमुनियों कहते हैं कि यह सब जो है, वह चेतन ब्रह्म से भरा हुआ है, यह कोई अत्युक्ति की बात या गलत है या भ्रम है या लोगों ने गप मारी है, ऐसा नहीं है । यह जो कुछ भी वह कुछ सब अणु-परमाणु से भरा हुआ है और उसमें शक्ति रही हुई है । आज विज्ञान ने साबित कर दिखाया है । इससे यह सभी चेतन से ही भरा हुआ है, वह और यह चेतन के कारण ही यह सब दृश्यमान हुआ है ।

• वेदकाल में ऋषिमुनियों के जीवन में चेतन का ही महत्त्व •

इससे असल के ऋषिमुनियों ने यह जगत मिथ्या है या संसार मिथ्या है ऐसा नहीं कहा है । हम यदि देखें तो वेदकाल

के ऋषिमुनि तो सब पत्नीवाले थे। उनमें बड़े से बड़े ऋषि वसिष्ठ कहे जा सकते हैं, उनको भी पत्नी। बहुत से ऋषियों को पत्नी थी। संतान भी थी। तब कोई कहेगा कि भाई, चेतन में निष्ठा पा गये थे तो फिर संतान कैसे हो सकती हैं ? उन्हें तो कामवासना होती नहीं। ऐसा हमें एक प्रश्न ऊठे, परंतु वे उस तरह बालकों की प्रजोत्पपत्ति नहीं करते थे। कामवासना से प्रेरित होकर प्रजोत्पत्ति उन्हें नहीं होती थी।

उनको तो एक ही सिर्फ चेतन की भावना कि एक पुत्र या पुत्री या फरजंद होना चाहिए। क्योंकि यह चेतन अनंत है। संसार भी अनंत है और यह...... **यह इस संसार को चलने के लिए या स्वयं की जो स्वयं की भावना है, स्वयं के जीवन के जो संस्कार हैं, उस संस्कार को ग्रहण कर सके, वे संस्कार चलते ही रहे, वह भावना अखंडित रहा करे इससे फरजंद की आवश्यकता। और ज्ञानपूर्वक, हेतुपूर्वक जब वे संसार भोगते हो, तब भी उनके मन में वही predominant महत्त्व का विचार, भावना, कि चेतन चेतन से ही प्रकट करना। उसी भावना से ही वे संसार को भोगते थे। क्योंकि वे हमारे ..... हमारे** conception में या तो हमारी बुद्धि की समझ में शायद वह न आएगा तो वह असत्य है, ऐसा मानने का कोई कारण नहीं है। अनेक वस्तुएँ हमारी बुद्धि में न आएगी फिर भी वह सत्य हो सकती हैं। तब वह जो ऋषिमुनि सब थे, उन्होंने जीवन का स्वीकार हमने भी जीवन का तो स्वीकार किया हुआ है।

• गुरुप्रथा का उद्भव जीवन की भावना का पतन रोकने के लिए •

परंतु मूल बात पर मैं आता हूँ कि असल के समय में यह गुरु की प्रथा नहीं थी, परंतु जैसे-जैसे भावना का पतन होता गया वैसे-वैसे यह प्रथा का उद्भव हुआ । अब गुरु के बारे में मैं आपको कुछ विस्तार से कहूँ, परंतु वह शायद हम सभी को पूरी तरह से समझ में नहीं आएगा ।

क्योंकि गुरु यानी कि जिसने भगवान का अनुभव किया है । सगुण और निर्गुण दोनों पहलूओं का । किसी ने सगुण का किया हो । किसी ने निर्गुण का किया हो । सगुण का करे वह निर्गुण का अनुभव भी कर सकता है और निर्गुण का अनुभव करे, वह सगुण का भी अनुभव करता है । शंकराचार्य अद्वैत थे । अद्वैतवादी । संपूर्ण निर्गुण का अनुभव उन्होंने किया था । परंतु ऐसे महापुरुष को भी श्रीनगर में द्वैत का अनुभव होता है । शक्ति का अनुभव होता है और भक्ति के कितने सारे श्लोक अष्टक उन्होंने लिखे हैं ।

इतना ही नहीं, परंतु जो अद्वैत के– संपूर्ण अद्वैत के अद्वैतवादी ऐसे शंकराचार्य ने पंचायतन की स्थापना की । बदरीकेदार उन सब का पुनरोद्धार भी उन्होंने ही किया । वहाँ तो प्रतिमा है न ! संपूर्ण अद्वैत के ही वे आचार्य । उसके समान कोई वेदांती आज तक हिन्दुस्तान में पैदा नहीं हुआ है । संपूर्ण निर्गुण के अनुभवी, किन्तु उसे नीचे अवतरण करना ही पड़ता

है । क्योंकि उसे.... उसे.... उसे grasp उसका स्वीकार कौन कर सकेगा ? उसने देखा कि यह सब तो इतना सारा तो नहीं समझ सकेंगे । इस समाज को समाज की भावना को पकड़ने के लिए उसे कोई साधन देना ही चाहिए और वह साधन नहीं देंगे तो फिर यह भावना किस आधार पर टिकेगी ? समाज की । इससे उन्होंने यह पंचायतन की स्थापना की । गणपतिजी, पार्वतीजी, हनुमानजी, शंकर भगवान इन सब की ।

• महादेव के मंदिर में नंदी–कछुए का रहस्य •

आप देखिये हमारे महादेव के मंदिर में और वहाँ भी देखिये । मुझे यह सब कहते तो जरूर है । सब वेदांतियों मैं कोई शास्त्र पढ़ा नहीं हूँ । तो वहाँ भी उन्होंने जीवन का स्वीकार किया है उसने । कि वहाँ नंदी रखा है, तो कहे कि हाँ ऐसा है । तो नंदी वह **जीव** है । जैसे वर्षाकाल में चरकर मस्त साँड़ हो, परंतु यदि इस तरह हम यह **जीव** हैं, परंतु जैसे नंदी का मुँह भगवान की तरफ घूम गया तो वह कछुआ जैसा हो सके । कछुआ जैसा अर्थात् जिसे संपूर्ण संयम प्रकट हुआ है । स्वयं की इन्द्रियों के सामने कुछ आये तो स्वयं की इन्द्रियों को सकेल लेता है । कछुआ । उसके समान हम हो सकते हैं । वर्षाकाल में चारा खाये हुए मस्त साँड़ जैसे हम **जीव** हैं । परंतु यदि हमारी अभिमुखता– हमारा मुख यदि भगवान की ओर हो जाय तो इस कछुए जैसे हो सकते हैं । यह ज्ञान देने के लिए–यह समझ देने के लिए हमारे अनुभवियों

ने यह प्रतीक रखा है। महादेवजी में। परंतु उसका अर्थ कोई समझता नहीं है और कोई समझाते भी नहीं हैं। बहुत रहस्यवाली यह घटना है।

• चेतनानिष्ठ निरीच्छ है •

तो उस तरह गुरु की— गुरु जो है। उस चेतना में जिसे चेतना का अनुभव हुआ है। अनेक लोग कहते हैं कि भाई आप— आप तो सब जानते हो, परंतु उसे जाना यानी क्या ? जानना यानी उसके पहले जानने की इच्छा हो तब जाना जा सकते हैं न ? कुछ भी जानना हो तो पहले उसे जानने की इच्छा होनी चाहिए। तो उसे तो इच्छा है ही नहीं, वह तो निरीच्छ है। यदि इच्छा हो तो वह हमारे जैसा ही संसारी। इससे उसे कुछ जानने की इच्छा नहीं होती। वह तो जैसा होता हो वैसा होने देता है।

सुरत के आश्रम में मैंने एक शादी करवाई थी। एक बी. ए., बी. एड. बेचलर ओफ एज्युकेशन और बी. ए. पास एक बहन और एक भाई है, वह इन्जीनियरिंग की लाइन के मीकेनीकल और इलेक्ट्रीकल दोनों में डिप्लोमा में फर्स्ट क्लास फर्स्ट उत्तीर्ण हुए थे। दोनों की शादी मेरे हाथों से हुई। उनके मा-बाप मेरे पास लाये, इसके साथ शादी करें। मैंने कहा करो, आपको करना हो तो। लड़का अच्छा है। बहुत समय से मेरे अनुभव में है। मेरे आश्रम का सब काम मुफ्त कर देता है, इसलिए नहीं कहता। किन्तु वह भाई अच्छा है। फिर शादी

हुई । ढाई साल तक, फिर कुछ झगड़ा हो गया होगा । दो-ढाई साल हुए । वे एकदूसरे के पास जाते ही नहीं । लड़के की मरजी बहुत । लड़का मेरे पास आता था । सुरत में मेरे आश्रम का सब कामकाज करता था । लड़की नहीं आती थी । कुछ ऐसी गाँठ पड़ गई थी कि जो खुल नहीं सकती थी । अनेक लोग मुझे कहते, **''मोटा, आपके हाथ से शादी हुई, ऐसा ?'' मैंने कहा, ''भाई ऐसा । कहते हो तो आपको । आपको ऐसा लगता हो तो लाईए मसी की डिब्बी और मेरे मुहँ पर मल दो, मुझे कोई बाधा नहीं है ।''**

तब मूल बात ऐसी है, इस पर से उदाहरण पर से देता हूँ कि यह लोग कुछ जानते हैं, ऐसा जो सब मानते हैं, वह बात गलत है । वह तो जैसा चलता है वैसा चलने देता है । वह तो दीवार से भी टकरावे ? तो कहे दीवार से भी टकराने दे । तब कुछ सावधान न करे ? किसी समय में शायद ऐसा कोई निमित्त प्रकट हो तो कहते जरूर । परंतु वह निमित्त पर आधार रखता है । सब आधार निमित्त पर आधार रखता है । तब यह निमित्त बहुत बड़ी बात है इसमें ।

• चेतनानिष्ठ शरीरधारी भगवान नहीं है •

दूसरी एक बात है । निमित्त आया इससे मुझे दूसरी एक बात कहने की सूझ रही है । कि अनेक लोग ऐसे जो अनुभवी हो गये हैं । महात्मा—पुरुष होते हैं । साधु-महात्माओं सब भगवान की तरह कहते हैं । (कोई बालक बीच में जोर से

बोलता है। श्रीमोटा कहते हैं बोलने दो उसे, बोलने दो उसे, चाहे जो बोले) भगवान की तरह ऐसा कहते हैं। परंतु शरीरधारी चाहे जितना अनुभववाला हो, परंतु भगवान की तुलना में नहीं आ सकता। यह एक भ्रम है समाज का।

वेदांत में भी कहते हैं कि ब्रह्म का अनुभव किया इससे ब्रह्म ही है। नहीं, जहाँ तक शरीरधारी है, वहाँ तक ब्रह्म भी नहीं है। ब्रह्म की तुलना में नहीं आ सकता। परंतु मैं आपको एक उदाहरण देता हूँ कि समुद्र का पानी और उसे उस पानी को एक कुल्हिया में भरो। और उस कुल्हिया का पानी और समुद्र के पानी के गुणधर्म समान हैं। उसे आप कोई पानी को। पानी का पृथक्करण करते हो और उसे दो तो कुल्हिया में जो समुद्र का पानी है और समुद्र का पानी है दोनों के गुणधर्म समान परंतु विस्तार और मर्यादा में नहीं।

• चेतनानिष्ठ शरीरधारी और ब्रह्म–भगवान के बीच का फर्क •

उसी तरह शरीरधारी आत्मा है। जिसे अनुभव हुआ है। उसे थोड़ा–बहुत भी प्रारब्ध है। कैसा प्रारब्ध कि रस्सी को जला दो तो उसकी ऐंठन दिखेगी। उसकी ऐंठन दिखती जरूर है, परंतु उसे हाथ में लोगे तो उसका कुछ नहीं, उसका जोर कुछ नहीं। उस प्रारब्ध का उस पर कोई जोर नहीं, परंतु ऐसा थोड़ा–बहुत प्रारब्ध उसे है। और इस प्रारब्ध के कारण उसे निमित्त मिला करते हैं।

तब उसी तरह चेतन जो है, उसे कुछ ऐसा थोड़ा-बहुत, भगवान है– ब्रह्म है– उसे कोई प्रारब्ध नहीं है। उसे कोई निमित्त नहीं है। तो यह एक बड़े से बड़ा फर्क है। यह तो मैं आपको सिर्फ बुद्धि से ही समझा रहा हूँ। मैंने कोई शास्त्र पढ़े नहीं हैं। परंतु यह बुद्धि में बराबर। मैं तो अनेक महात्मा लोग से कोई मिले तब सब बातचीत हो तब कहता हूँ कि ''भाई, यह किस तरह हो सकता है ? शरीरधारी जो आत्मा है। चाहे बड़े से बड़ा, आखरी में आखरी कक्षा का उसे अनुभव हो, परंतु वह भगवान की तुलना में नहीं आ सकता। क्योंकि शरीर है वहाँ तक उसे थोड़ा-बहुत भी प्रारब्ध है, निमित्त है। निमित्त के बिना वह कुछ कदम भी नहीं चल सकता है। उसके जीवन में निमित्त बड़ी से बड़ी बात है।

उसके जीवन की बात छोड़ दो। हम संसारियों में ऐसा ही है। हम संसार लेकर बैठे हैं। उसमें भी निमित्त मिलता है, उस मुताबिक ही हम व्यवहार करते हैं। परंतु उसको निमित्त उस प्रकार का है कि उसे बंधन नहीं है। परंतु जब भगवान को तो कोई निमित्त भी नहीं और थोड़ा-बहुत बिलकुल प्रारब्ध उसे है ही नहीं। तब यह एक बहुत बड़े से बड़ा फर्क है। इससे ऐसा मनुष्य किसी भी दिन भगवान की तुलना में नहीं आ सकता। चाहे जितना बड़े से बड़ा उसने ऊँचे से ऊँची कक्षा का चाहे उसे अनुभव हो, परंतु वह भगवान की तुलना में नहीं आ सकता और यह आपकी बुद्धि में आ सके उस तरह समझाने का प्रयत्न किया है।

• चेतनानिष्ठ—अनुभवी का मुख्य कर्तव्य और पहचान के लक्षण •

दूसरा कि ऐसे पुरुषों का मुख्य कर्तव्य क्या होता है ? **मुख्य कर्तव्य तो हमारे हृदय में चेतना के संबंध में बीजारोपण करना । भगवान की भावना उनके दिल में प्रकट हो उसका बीज बोना । यही उनका कर्तव्य । तो मुख्य कर्तव्य यही है ।** इसलिए जिन-जिन के साथ वह हृदय की भावना से एकाकार हुआ करता है और उसका कोई ऐसे पुरुष का कोई लक्षण है या नहीं ? लक्षण तो है भाई । परंतु उसे पहचानना दुर्लभ है । प्रेमभक्ति के साथ लंबे समय तक का दीर्घकाल तक सद्भाव और भक्ति से सेवा करने से यदि परिचय हो तो लक्षण समझ में आएगा, नहीं क्यों आएगा ?

संसारी मनुष्य हो वह हमारे परिचय में आता है तो साला लुच्चा है । यह दयावाला है, यह करुणावाला है, यह ऐसा है, यह वैसा है— यह हम जानते हैं । उसी तरह । परंतु वह जानते है किस तरह ? लंबा परिचय होता है तब । पहले परिचय में नहीं पहचानेंगे । दस-पंद्रह बीस-पच्चीस बार उसका परिचय हुआ कि हमें कुछ उसकी समझ आती है । उस तरह ऐसे पुरुषों का भी दीर्घकाल तक, प्रेमभक्तिपूर्वक और सद्भाव से किया हुआ ऐसा यदि हमारा परिचय हो तो उसकी समझ आती है । न आये ऐसा नहीं है । तो भी दूसरे कोई लक्षण हैं ? तो लक्षण हैं । तो भी हैं लक्षण । तो कि प्रत्यक्ष देख सके ? कि हाँ, प्रत्यक्ष देख सके वैसे लक्षण हैं । नहीं ऐसा नहीं ।

• चेतनानिष्ठ जड़ में चेतना प्रकट कर सकता है •

कि हमारी संस्कृति, हमारा धर्म ऐसा कहता है कि यह ब्रह्म तो जड़ और चेतन सभी में बसा हुआ है। तब ऐसा जो अनुभवी पुरुष है, शरीरधारी ऐसी आत्मा कोई निमित्त ऐसा मिल जाय तो जड़ को भी चला सकता है। तो कि जादू है– जादू की बात नहीं है।

चबूतरा को चलाया था। आज वह भाई जिंदा है। आपने हमने सब ने ज्ञानेश्वर की बात पढ़ी है। ज्ञानेश्वर भगवान की बात पढ़ी है वह उनका चबूतरा चलाया था। तब हम अहोभाव से मुग्ध हो जाते हैं। यह तो हमने सिर्फ पढ़ी हुई बात है न ? हमने प्रत्यक्ष देखी हुई नहीं है।

परंतु इस जीवन में ऐसे है भाई। अहमदाबाद में रमाकांतभाई को जाकर पूछीये। जिंदा आदमी है। पढ़ा लिखा है। बी. एससी. पास है। उन्होंने ऐसा माना नहीं है। अभी भी। और उसे चबूतरा चला था। मेरे मौनमंदिर में। आज किसी को जाकर पूछने का इससे कहता हूँ कि आप सब मेरे स्वजन हो। अब शायद मेरा शरीर ज्यादा लंबा टिकेगा नहीं। पाँच-छ ऐसे भयंकर रोग हैं। यह तो भगवान की कृपा कि उसकी शक्ति से ही मेरे शरीर का काम चलता है।

तब मैं इसीलिए कहता हूँ। उदाहरण देता हूँ कि भाई, मैं आपमें आपके साथ रहा हूँ। आपका नमक मैंने खाया है। तो आप सब अब मेरे– मेरे शरीर का अंतकाल आया है। उस

समय मेरे में भावना रखो । और यह साबिती की बात है । मैं कोई नितान्त कल्पित गप नहीं मार रहा हूँ। आप सब भरोसा कर सको ऐसे हो ।

• चेतनानिष्ठ को समय और स्थल की मर्यादा नहीं होती •

इतना ही नहीं, परंतु चेतन जिसे अनुभव हुआ है, चेतन का जिसे अनुभव हुआ है। ऐसे चेतनवाली आत्मा सत में भी व्यवहार करे, असत में भी व्यवहार करे । तब हमारे ख्याल में न आये। उसे हम स्वीकार नहीं कर सकते । परंतु चेतन तो सब में रहा हुआ है ।

उसके उपरांत दूसरा एक है। चेतन जिसमें प्रकट हुआ है। उसे कोई स्थल, काल की मर्यादा उसे नहीं है। इससे स्वयं कहीं भी प्रत्यक्ष हो सकता हैं । यह आपके पास यह दिलीप बैठा है। यह यहीं बैठा है। उसको पूछो कि मोहनभाई के वहाँ मैं सोया था। पलंग पर मेरा शरीर और दूसरा शरीर उसे दिखा है। वह झूठ बोलता हो तो उसे पूछकर देखो। जिसको पूछना हो, वह अभी पूछ सकता है। तब एक के दो शरीर, चार शरीर भी उसको हो सकते हैं। यह बड़े से बड़ा अनुभव ।

इतना ही नहीं, यह दिलीप तो मेरे साथ जुड़ा हुआ है। परंतु मेरे साथ बिलकुल जुड़े हुए नहीं । हजार रुपये के अमलदार है पारसी । पहली बार ही मौन में बैठे थे नड़ियाद में । और मैं सुरत था । यह तो जीवित व्यक्ति है । मैं कुछ

दूसरे कहीं कोई बात नहीं करता हूँ। दूसरी कोई जगह हम पढ़े तो पहले का पढ़े तो अहोभाव हो जाता है। तब उस व्यक्ति को वहाँ मौन में नडियाद में **मोटा** दिखे। बाप रे ! उसे यह तो मालूम था कि **मोटा** तो यहाँ नहीं है, फिर भी उसको वहाँ दिखे। आज भी वह सुरत में है। आसिस्टन्ट कलेक्टर की ग्रेड के हैं। एक्साईझ में। एक्साईझ और कस्टम में, परंतु उसको मेरे प्रति भक्ति हो गई है।

इतना ही नहीं, सरकारी अमलदार होने के बावजूद वे मेरे लिए पैसे भी इकट्ठे करके लाते हैं। उसे ऐसा नहीं होता कि मेरी नौकरी चली जाएगी। मेरे साथ जुड़े हुए कई अमलदार। एक आर. टी. ओ. हैं। साहब। पारसी मौन में बैठते हैं हर साल। उसे मेरे अनुभव हुए हैं। तो पिछली बार मुझे जो लाख रुपये इकट्ठे करने थे। उसे दस-दस ग्यारह हजार रुपये उसने मुझे इकट्ठे करके दिये हैं। आर. टी. ओ. ने। दूसरे कई इन्कमटेक्ष अमलदार हैं, वे भी मुझे पैसे इकट्ठा कर देते हैं। परंतु मैं उसे कहता हूँ भाई, यदि किसी से तुम जबरदस्ती से लो तो यह मुझे मंजूर नहीं है। एक इन्कमटेक्ष अमलदार तो मेरी रसीद-बुक ही अपने पास रखता है। कोई एसेसी आये। फिर मेरे परिचित। भाई, **मोटा** के इस आश्रम में इतनी रकम देने की है, ज्यादा नहीं। सौ रख दो, सौ भर दो। रसीद उसके हाथ से ही बनाने को कहे। एसेसी के हाथ से। उस तरह।

• *मोटा* का और आश्रम का प्रचार मौनार्थी-स्वजन करते हैं •

तब इस मौन में जो लोग बैठते हैं हमारे यहाँ । उसका भी अनुभव मुझे यह दिलीप पास में है उसका भी । मौन में से मेरे साथ संबंध है । कितने सारे आदमियों को आप देखो कि मौन में बैठने से कितना संपर्क होता है । उनका किसी चेतना के साथ कि उसका मैं प्रचार करने जाता नहीं । यह अखबार में तो अभी-अभी यह आया । अभी-अभी ये लेख और मेरे बारे में प्रसिद्धि गुजरात में आने लगी है । किन्तु मैं हम स्वयं आश्रम की तरफ से या नंदुभाई हम कोई यह प्रवृत्ति करते नहीं हैं ।

एक भाई मुंबई के चार्टर्ड एकाउन्टन्ट मौन में बैठने आये । तब मेरे सभी पुस्तक उसने पढ़े । साहित्य का भी रसिक व्यक्ति । कि "**मोटा,** इतना अच्छा साहित्य है और आप क्यों कुछ देते नहीं हो ।" मैंने कहा, "यह हमारा काम नहीं है भाई ।" तब उसने कहा, "मैं दूँ ?" मैंने कहा, "दे दो भाई, तुम्हें देना हो जैसा करना हो वैसा कर ।" तब वह हमारे यहाँ प्रतिवर्ष मौन में बैठते हैं । वह चार्टर्ड एकाउन्टन्ट हैं और उसने जैसे कि यह स्वयं का मिशन हो, उस तरह यह काम ले लिया है । सब मासिक पत्रिकाओं में भेजते हैं । अखबारों में भेजते हैं । प्रश्नोत्तरी तैयार करे, उसके उत्तर लिखे हुए हो, वह पुस्तकों में लिखा हो उस मुताबिक लिखे । मुंबई समाचारवाले को ।

मुंबई समाचारवाले बदते नहीं थे । इससे उसके संपादक को मेरे पास पिछली रामनवमी को बुलाकर लाये । मेरा और उनका इतना सुंदर सत्संग हुआ । सत्संगी थे भाई । उसने meditation पर दो किताबें भी लिखी हुई हैं । इससे अब 'मुंबई समाचार' में भी मेरे लेख आते हैं । 'जन्मभूमि'वाले को पकड़ लाये । अभी 'जन्मभूमि' में मेरे बारे में एक लेख आया । वह विजयगुप्त मौर्य करके हैं । 'अखंड आनंद' में 'ज्ञानगोष्टि' लिखते हैं । तो उसने आकर मुझे पूछा, मैंने सब बात की, वे बहुत प्रभावित हुए । तो इस तरह यह प्रचार का ...... अभी इन अखबारों में, मासिक पत्रिकाओं में आता है, उसमें हमारा कोई मूल नहीं है । यह वह भाई रतिभाई (चार्टर्ड एकाउन्टन्ट) ही किया करते हैं । वे करते हो तो होने दो । हमें कोई एतराज नहीं है ।

• *मोटा* का मुख्य कर्तव्य पैसे इकट्ठे करना नहीं है •

तो मेरा कहना यह है कि ये जो लक्षण हैं अनुभववालों के यह प्रत्यक्ष । दूसरी कोई जगह बात नहीं करता हूँ । आप तो मेरा घर ही हो, कुटुंब हो । इससे आपको न कहूँ तो किसे कहूँ ? और इसको कहने का हेतु इतना ही है कि भाई, अब यह मेरा शरीर कोई अनंत काल तक तो टिकनेवाला नहीं है । अब आखरी अवधि है और अंतिम अवधि में आप सब का प्रेम प्राप्त कर सकूँ तो मुझे दूसरा कोई काम नहीं है । पैसे तो भगवान की कृपा से आप भी देते हो और गुजरात

में से भी मुझे मिलते हैं । **पैसा वह मेरा मुख्य कर्तव्य नहीं है ।**

मेरा मुख्य कर्तव्य तो जो कोई हम सभी मिले हैं, उनमें भगवान की भावना का बीज बोया जाय, यही तो मेरा मुख्य कर्तव्य है । तब यह आप जानते हो तो अभी भी आप जाओ । साबित करो । जितने सबूत ढूँढ़ने हो इतने सबूत ढूँढ़े कि एक शरीर के, एक शरीर कहीं भी होने पर भी अन्य जगह प्रकट हो सकता है । यह आप दूसरी किताबों में पढ़ते हो, परंतु यह तो प्रत्यक्ष उदाहरण है । आप कहीं भी जाकर सब को पूछकर आप विश्वास कर सको ऐसे हो । चबूतरा चला था । वह आप उस व्यक्ति से भी मिलकर विश्वास कर सकते हो । तब यह दो तो बड़े से बड़े लक्षण हैं । दूसरा कोई नहीं कर सकेगा । संपूर्ण चेतना में निष्ठा प्राप्त किये बिना कोई व्यक्ति ऐसे काम नहीं कर सकता । संभावना नहीं है । किसी ने सिद्धि प्राप्त की हो तो दूसरा कुछ भी बता सकता है, परंतु यह तो कर ही नहीं सकता । **स्थल और काल की मर्यादा—स्थल और काल की मर्यादा जो लांघ जाता है,** वह चेतना में अनुभवी । अनुभवी है उसके लिए ही संभव है । दूसरे के लिए यह संभव नहीं है यह ।

फिर आप देखिए कि प्रति वर्ष भगवान की कृपा से कोई न कोई ऐसे अच्छे काम के संकल्प, शुभ संकल्प होते हैं । वे सभी पूरे होते हैं । '६२ की साल से ही अभी मैंने तो यह काम शुरू किया है । उसके पहले तो यह मेरा आश्रम चलाने

के बारे में ही प्रयत्न हुआ करता था। Struggle हुआ करती थी। क्योंकि मकान बनाना, यह करना, वह करना सब में पैसे तो चाहिए ही। वह काम पूरे होने के बाद यह काम शुरू किया गया।

• धर्म के लक्षण–समाज में गुण और भावना का प्रकट होना •

इसीलिए मैंने शुरू किया कि समाज अगर धर्म– **धर्म जीवित है, उसके दो लक्षण कि गुण और भावना प्रकट हो, तब धर्म है ऐसा समझना। गुण और भावना न हो तो धर्म है, यह नहीं माना जाएगा। तो हमारे समाज में गुण और भावना नहीं है। वह गुण और भावना प्रकट हो तो ही धर्म टिक सकता है।** धर्म की भावना समाज में उत्पन्न हो सकती है। इसलिए ऐसे गुण और भावना के भगवान की कृपा से काम करने का सूझता रहता है वैसा करता हूँ। और दूसरी एक बड़ी बात यह है कि दूसरा आप कुछ भी करोगे, परंतु हमारे जीवन में जो गुण और भावना है, वही साथ आनेवाले हैं।

• पुनर्जन्म की साबिती •

तब किसी को– किसी की बुद्धि को यह हो कि साला दूसरा जन्म है उसकी गारंटी क्या ? तो जैसे अभी के यह वैज्ञानिक कहते हैं, वह हम सब मानते हैं या नहीं मानते हैं ?

H_2O कहते हैं कि दो हिस्से हाइड्रोजन और एक हिस्सा ओक्सिजन का हो तो पानी। उसका कोई इन्कार नहीं करता है कि नहीं होता है। वह तो मानना ही पड़ता है।

तो उसी तरह हमारे शास्त्रकारों ने, जगत के सभी धर्मों ने, उन धर्मों की नींव डालनेवालों ने, मूल पुरुष वे सभी इस बारे में सहमत हैं। तो कि Christanity कुछ सहमत है ? मुस्लिम-मुस्लिम तो ऐसा कुछ मानते ही नहीं हैं। भाई, आप विचार करो। वह भी कहता है। उसने बीच की बात नहीं की है। इस जन्म का हमारा शरीर गया। फिर Day of Judgement आएगा। और तब न्याय होगा। तब सब जागेंगे या नहीं ? तो पुनर्जन्म है या नहीं ? उसने बीच के समय की बात नहीं की है। मुस्लिम धर्म और क्रिश्चियन धर्म ने। परंतु Day of Judgement न्याय के दिन की बात की है।

तब पुनर्जन्म होगा और सब का न्याय होगा। न्याय होगा तो भोगना पड़ेगा न ? न्याय होगा तो भोगना पड़े न ? तो भोगने के लिए तो शरीर ही चाहिए। तब वहाँ है सही पुनर्जन्म की बात। वहाँ उसमें उनमें। परंतु बीच की– यह शरीर खत्म होने के बाद में और फिर इस बीच के समय की बात नहीं की है, क्योंकि वह काल अलग था। लोग समझते नहीं। हमारे– हमारी संस्कृति के शोधकर्ता बहुत गहरे गये हैं और यह बिलकुल सच्ची बात है एक। हमारा पहले भी जन्म था, अभी भी है और फिर भी होनेवाला है।

यह हमारे अनुभवियों ने, हमारे ऋषिमुनियों ने इस संबंध में प्रयोगों करके यह साबित किया है। परंतु विज्ञान के किये गये प्रयोगों को हम तुरंत स्वीकार कर लेते हैं और इन ऋषिमुनियों द्वारा किये गये प्रयोग हम स्वीकार नहीं करते। **क्योंकि हमारी बुद्धि कुंठित हो गई है। हमारे में धर्म की भावना कम हो गई है।** अबे, उसने प्रयोग किये हैं, वह आप मानते हो और इन लोगों ने प्रयोग किये हैं, वह आप क्यों नहीं मानते हो ? तब वह हमारे गले उतरता नहीं है। वह दिखाता है। ये पुरुष भी बताते हैं। किसी-किसी बाबत में। सब बातों में दिखाते नहीं है, परंतु वह बात सच है।

• उत्तम दान– समाज में गुण और भावना प्रगट करे वह •

उनके जीवन में ऐसे कई प्रसंग बनते हैं कि उसे मालूम है कि अमुक व्यक्ति के जीवन के साथ पूर्वकाल का मेरा ऐसा संबंध है। वे कहते नहीं हैं। परंतु यह संबंध है। तब पहले भी जन्म था, अभी भी जन्म है और इसके बाद भी होगा। परंतु इस जन्म का हमारा जो शरीर है, उसमें जो गुण और भाव प्रकट हुए होंगे, वे हमारे साथ आनेवाले हैं। इससे मैं जो कोई धनवान बहुत भावनावाले हो तो **मैं कहता हूँ भाई, आप धर्मादा करो। परंतु इस प्रकार का करो कि जिससे सामनेवाले व्यक्ति में गुण और भावना प्रकट हो। वह**

उसके साथ-साथ आएगा और समाज को ज्यादा कल्याणकारक है । इस प्रकार की भावना ।

तब यह जो गुण और भावना यदि समाज में हो, जागे तो ही यह धर्म फिर से उठ सके ऐसा है । मैं बिना कारण ऐसे ही कुछ नहीं करता हूँ या hapazardly या लस्टम-पस्टम मैं कुछ करता नहीं । बहुत सोच समझकर मैं मेरे काम करता हूँ और यह धर्म तभी उठेगा यदि गुण और भावना समाज में प्रकट हुए होंगे तो और फिर साथ-साथ ही आनेवाले हैं ।

• चेतनानिष्ठ का भक्तिभावपूर्ण संग जीवन-उद्धारक •

तब उसके अलावा ऐसे जो व्यक्ति हैं, वे दीप-मीनार हैं । हमारे पथदर्शक हैं । हमारा हित चाहनेवाले हैं । हमारा कल्याण करनेवाले हैं । परंतु यदि उनके साथ जुड़े रहे तो ।

पहली ही बार जब मैं मेरे गुरुमहाराज के पास गया तब । तब मैं तो बहुत raw अर्थात् मेरी बुद्धि तब धर्म की भावना से प्रेरित नहीं थी तब । मेरे में भक्ति भी नहीं थी । भावना भी नहीं थी । और गुरुमहाराज के प्रति किस तरह का attitude अर्थात् कैसा व्यवहार रखना उसकी भी मुझे समझ नहीं थी ।

तब उनके पास प्रतिदिन तीन सौ-चार सौ आदमी आते थे । वे तो नग्न रहते थे । गाँव से बाहर रहते थे । और बड़ी धूनी जिसमें प्रतिदिन दो सौ तीन सौ मन लकड़ी जलती थी, इससे धूनीवाले दादा कहलाते । तब पहली ही बार मैं तो गया

था । और मुझे तो यह सब नंगे और लस्टम-पस्टम सब बोलते । इससे मुझे यह सब अच्छा नहीं लगा । मैंने कहा, ''मैं यहाँ कहाँ आ गया ?'' मैं तो मेरा सामान, धर्मशाला में एक कमरा किराये से लिया था, वहाँ से सामान-बिस्तर बाँधकर घर वापस जाने के लिए तैयार हो गया । कहा, ''चलो, हम हमारे आश्रम में वापस चले जाँय ।''

बाद में फिर next step ऐसा हुआ कि चलो पैर पड़ते तो जाऊँ । तो पैर पड़ने के लिए गया । तब वे कुछ बोले कि, ''भई, यदि सचमुच हमारे दिल से सत्संग यदि हुआ हो, किसी महात्मा का संग हमें लगा हो और उस संग में हमारा दिल लग गया हो तो चाहे कितना पापी में पापी हो, परंतु मृत्यु के समय उसे ऐसी भावना प्रकट होती है ।'' तब उनका तो बहुत तब । कि साला, यह तो अपना महत्त्व बढ़ाने के लिए कहते हैं । गुरु सही फिर भी मेरी बुद्धि इस तरह वक्र रीति से काम करती थी । यह आपको पक्का उदाहरण देता हूँ । तब मैंने तो मन में ही ऐसा विचार किया था । तब गुरुमहाराज बोले कि, ''अबे, भाई ! कि तू यहाँ से पंद्रह मील दूर एक गाँव है । बीच में इतने इतने गाँव आते हैं ।'' उन गाँवों के नाम दिये, वे लिख लिए । उन गाँवों से होता हुआ मैं वहाँ पहुँचा । और एक आदमी मरने पड़ा हुआ है । वह कैसा सब कुछ बोलता है, वह देख । कैसे कैसे कर्म किये हैं, वह सब बोलेगा और फिर मरने के एक आधे घंटे पहले उसकी मनोदशा, उसकी भूमिका पूरी बदल जाती है । उसे तुम देखोगे तब यह मालूम पड़ेगा । कि ऐसे

किसी महात्मा का संग किया हो और उनमें हमारा दिल लग जाय, उनमें भक्ति लग जाय तो व्यक्ति का कैसा कल्याण हो जाता है, यह बात तुम्हें प्रमाणित होगी । प्रत्यक्ष देखे बिना तुम्हारी बुद्धि ठिकाने नहीं आएगी ।

इससे मैं तो गया वहाँ। मैंने कहा मेरे मन में विचार किया था और उसने मुझ जवाब दिया यह। इससे मुझे प्रयोग करना चाहिए। इससे मैं तो चला। गाँव पूछते-पूछते-पूछते उस गाँव में जा पहुँचा । वहाँ सब जगह आंगन-आंगन घूमा कि भाई यहाँ कोई व्यक्ति बहुत गंभीर बीमार हो। हिन्दी में बोलता था। कोई गंभीर बीमार हो और मृत्यु का समय आ गया हो। तो कि नहीं भाई यहाँ नहीं है। ऐसा करते-करते एक घर मिल गया। फिर वह तो ऐसा सब बोलता रहा कि उसने जो-जो सब कुकर्म किये थे, उस के गाँव में। जो कुकर्म किये थे, वह सभी बोलता ।

मैंने सोचा वे गुरुमहाराज कहते थे, वह बात सच्ची। फिर तो अचानक उसकी पूरी मनोदशा बदल गई। फिर तो भजन गाने लगा। यह गाने लगा। फिर गुरुमहाराज की प्रार्थना की। ‘प्रभु, तेरा संग हुआ और मेरा दिल लग गया।'' यह सब करके और फिर एक आखरी प्रार्थना, ‘हे प्रभु, तुम उद्धार करना मेरा ।'' यह बोलकर उसके प्राण छूट गये। उसकी कही हुई बात तो सच निकली ।

फिर गाँव में फिर से मैं निकला। मैंने पूछा, ‘‘भई, यह मर गया वह कैसा था ?'' ‘‘अरे !'' कहने लगे, ‘‘साला,

निकम्मा था, मर गया वह अच्छा हुआ। उसके गाँव में उसके सामने माँ–बेटी सलामत नहीं थी। ऐसा चरित्र का दुष्ट आदमी था। परंतु ऐसे महात्मा का उसे संग हुआ। मृत्यु के समय उसकी कैसी सुंदर गति हुई। मैंने स्वयं अनुभव की हुई बाबत है यह।

इतना ही नहीं, परंतु सूरदास तो प्रतिष्ठित हैं। बिल्वमंगल प्रतिष्ठित हैं। ऐतिहासिक व्यक्ति हो गये हैं। वेश्यागामी था वह। सब प्रतिष्ठित हकीकत। इतिहास की बात है। परंतु भगवान में उसकी लगन लग गई तो कितने बड़े भक्त हो गये। सूरदास का भी ऐसा है। बिल्वमंगल का। ऐसे कितने व्यक्ति ऐसे हैं।

• चेतनानिष्ठ का आश्रय जबरदस्त शक्तिदायक है •

तो ऐसे व्यक्ति का संग और उसमें यदि हमारा दिल प्रकट होता है। अनेक रीति से हिम्मत देता है, साहब। हमारी मुश्किल के समय में, संकट के समय में, परेशानी के समय में हमें वह एक सहारा देते हैं। ऐसा सहारा कोई भी धनवान आपको नहीं दे सकेगा।

मैं तो आपके परिवार का आदमी हूँ। आपका नमक मेरे पेट में पड़ा है। तो मैं यह सच बात कहता हूँ। कि ऐसे व्यक्ति का यदि संग हमें हो गया हो और उसमें हमारा दिल लग गया हो तो उनका सहारा बहुत जबरदस्त शक्तिशाली है। अनेक संकटों में हमें चट्टान की तरह हमें

तना हुआ रखते हैं। तो ऐसे जो पुरुष हैं, वे हमें निमित्त के कारण से मिलते हैं, हम न चाहते तो भी मिलते हैं ।

• चेतनानिष्ठ का संबंध निमित्त आधारित है •

मैं जब १९२१ के वर्ष के अंत में इस आंदोलन में कूद पड़ा । तब मेरा कोई ख्याल नहीं था कि यह भगवान की– भगवान के मार्ग का कोई बिलकुल कोई ख्याल नहीं था । मैं तो उस समय यह मानता था कि यह सब महात्मा साधुओं हैं, वे Economical Waste- Economical burden on the society आर्थिक रूप से इस समाज पर बोझ है, मैं ऐसा मानता था और सच में ऐसा मानता था ।

फिर भी एक साधु ने आकर मुझे पकड़ा । पकड़ा यानी मैं तो नडियाद होता और वह रहे अहमदाबाद । और अहमदाबाद । उसका शरीर बंगाल का था । लोग उनका नाम बालयोगी कहते थे । तो अहमदाबाद में एलिसब्रीज है न ? वहाँ से सामने टाउन हॉल की तरफ जाँय तो दाहिना हाथ की तरफ नदी में वे बैठे रहते । बहुत मस्ती, इतना ज्यादा नाचते और उँचे कूदते । मैंने स्वयं देखे थे । और इतनी सारी मस्ती कि जब नदी में नहाते, तब तो जैसे हाथी नहाता हो इतनी उनकी मस्ती ।

अनेक लोग आते उनके पास । विपुल संख्या में लोग आते । तो भी वे दिन में बीस–पचीस दफा कहते कि नडियाद से चूनीलाल भगत को बुलाओ । योगानुयोग ऐसा हुआ कि

नडियाद के एक नागर गृहस्थ नानुभाई नाम के थे। कंथारिया........ नागर । वे वहाँ गये थे । बात सुनी थी, इससे बालयोगी के दर्शन करने । तो उसने देखा कि आप नडियाद से चूनीलाल भगत को भेजो । फिर वे शाम को वापस आये ।

तब प्रतिदिन शाम को कुछ काम हो तब गोपालदास बापु, फूलचंद शाह हमारे नडियाद के दो तीन नेता हैं । तब ये मणिभाई नभुभाई थे, उनके भाई माधवदास– माधवलाल ये कंथारिया ये सब इकट्ठे होते थे । मैं वहाँ गया था । नानुभाई ने मुझे कहा, ‘‘भाई भगत, तुम्हें बुलाते हैं । एक साधु है । बालयोगी है । बहुत अलौकिक मूर्ति है । बहुत मस्तीवाले, तुम जाओ ।’’ मैंने कहा, ‘‘भाई, मुझे और साधु को मुझे क्या काम है ?’’ साहब मैं तो बिलकुल नहीं गया था, परंतु अंत में उसने मुझे खींच लिया ऐसा मुझे कहना चाहिए ।

तब वह पूर्व का संबंध है । मैं उसे नहीं पहचानता था । वह मुझे नहीं पहचानता था । यह एक सौ प्रतिशत सच्ची बात हैं यह । तब ऐसे व्यक्ति से पूर्व से हम जुड़े हुए होते हैं । यह पूर्व का जो संबंध है, उसकी श्रृंखला है, वह हम जानते नहीं हैं । यह मेरे जीवन का ही प्रसंग है । वह जानता था मुझे । मैं उसे नहीं जानता था । उसने इतनी सारी गरज । उसे ही गरज थी । वह फिर नडियाद आया । मुझे initiate किया । **पहली बार वे दो महीने– सवा दो महीने रहे । दूसरी बार डेढ़ महीना रहे । तीसरी बार एक महीना रहे मेरे साथ ।** और मुझे initiate दीक्षा में इस मार्ग पर ले जाने में यही

मूलभूत कारण । वे बालयोगी मेरे गुरुमहाराज के शिष्य थे । उन्होंने ही भेजे थे ।

• निमित्त में चेतनानिष्ठ की शक्ति भगवान का काम करती है •

तब ऐसे पुरुषों का जो संबंध है वह निमित्त । और निमित्त की एक परंपरा है । Continuity है । और उस निमित्त के कारण से हम यहाँ इकट्ठे हुए हैं । मिला हूँ । मैं आपको मिला हूँ । आप मुझे मिले हो । और मेरे जीवन के कई दूसरे उदाहरण आपको दूँ साहब ।

सूरत के आश्रम में एक Eye specialist मौन में बैठे थे– अभी भी जीवित हैं– प्रसिद्ध हैं– जगन्नाथ । डॉ. जगन्नाथ । Eye specialist मौन में बैठे थे । और फिर दूसरी कोई बात लम्बी तो नहीं कहूँगा, परंतु वह बारिश का मौसम था । नदी में तो बाढ़ आयी थी । मेरा आश्रम तापी किनारे पर ही है, बिलकुल तापी के तट पर । जिस तरह यह कावेरी पर आश्रम है उस तरह । अभी भी आपको किसी को भरोसा करना हो तो जरूर करना और उसे जाकर पूछ लेना । वे नदी में नहाने गये और गये अंदर । बाढ़ में बहने लग गये, किन्तु तैरना आता नहीं था साहब । हमने तो यह सोचा कि वे गये । खलास यह आदमी । परंतु वे पौने दो मील दूर रांदेर तक पहुँच गये । वहाँ किनारे पर लोगों ने उनको उठाकर निकाला । किन्तु तैरना आता न था । आज भी जिसे पूछना हो जाकर उसे पूछ सकता है ।

तब यह भगवान की शक्ति बिना भारी बाढ़ में जिसे तैरना न आता हो, ऐसा व्यक्ति सुरक्षित रूप से पार उतर सके वह भगवान की शक्ति बिना तो हो नहीं सकता। .... परंतु कोई लकड़ी पकड़ी थी। वह भी आप जाकर पूछ सको ऐसा है। भाई ने ऐसी एक खुद को पढ़ाई हुई ऐसी एक हकीकत लिखी है भाई ने। नंदुभाई ने लिखी है। तब ऐसे तो कई उदाहरण आपको दे सकता हूँ। उदाहरण इसलिए देता हूँ कि अभी भी आप मेरे लिए ऐसी भावना प्रकट करोगे तो अच्छा है। मुझे तो अभी कुछ नहीं है। प्रकट करो या मत प्रकट करो तो मेरा तो जो संबंध है, वह है। आपके साथ का मेरा संबंध आपके साथ का कभी कुछ भी हो जाय तो भी ऐसा का ऐसा ही रहनेवाला है।

• चेतनानिष्ठ का संबंध निमित्त संयोग से होता है •

और यह जो मेरा संबंध है, वह भगवान का दिया हुआ है। मैं कुछ नंदुभाई को ढूँढ़ने नहीं गया था, या नंदुभाई को कहने नहीं गया था कि भाई तू मेरे पास से यह सीख। यह विद्या सीख। किसी के साथ संबंध मैं ढूँढने नहीं गया था। अपने आप मिले हैं। किसी भी जगह आप पूछे। सूरत में तो मैं बिलकुल अनजान साहब। बिलकुल अनजान। नडियाद तो मेरे शरीर का गाँव। इससे सब को पहचानता। परंतु नडियाद में भी किसी दिन मैं शहर में नहीं गया हूँ। किसी दिन और किसी से संबंध बाँधने भी नहीं गया हूँ।

सूरत में भी वैसा ही। जैसे-जैसे मिलते गये। क्योंकि मुझे इतना विश्वास था कि प्रारब्ध के कारण, प्रारब्ध के कारण जिन-जिन के साथ मेरा निमित्त है, मिलेंगे ही। फिर यदि मैं प्रयत्न करूँ तो मैं अपने आप मिथ्या माना जाऊँगा। आप सब का संबंध भी मुझे अपने आप ही हुआ है। मैं कोई संबंध बाँधने आया नहीं हूँ। इसी कारण से और मैंने कोई विचार करके यहाँ आने का नहीं किया था। नंदुभाई के साथ आना हुआ। दूसरी बार आना हुआ तो यहाँ सब दुकानें बंद थी। सभी हम सब भाई वहाँ आये थे। तब मैंने नंदुभाई को कहा कि, "हमें वहाँ ही जाना चाहिए। संकट के समय में तो हमें वहीं जाना चाहिए। तू जा। मैं तुम्हारे पीछे आता हूँ।" यह '४२ की साल में या ऐसी साल में हुआ था। तब से दक्षिण के साथ का आज भी चाहे मेरा शरीर वहाँ रहता है, परंतु मेरा संबंध यहाँ चालू रहता है।

• धर्म का उदय दक्षिण भारत में से होगा •

दक्षिण भारत को– दक्षिण भारत को– दक्षिण भारत मुझे बहुत प्रिय लगता है, वह भावना के कारण। इस देश में अभी, आप समझना। इस देश में भावना सब भोले हैं। उसका कुछ भावना है। इस देश में जितनी भावना है, उतनी अन्य जगह पर नहीं है। हमारे हिन्दुस्तान में। उसका प्रत्यक्ष प्रमाण तो इसी देश में से हिन्दू धर्म के अनेक संप्रदाय के आचार्य इस देश में से हुए हैं। यह इतिहास की बात है साहब। आप पूछ लेना।

जिसे पूछना हो उसे। फिर से हमारी संस्कृति का उदय होने-वाला है। इस दक्षिण भारत में से ही होनेवाला है। यह भी निश्चित हकीकत है।

• अराजकता का समय आनेवाला है •

जब हम इस देश में हम बसे हैं और रह रहे हैं, वह भी मैं तो ऐसा मानता हूँ कि हमारे किसी प्रारब्ध के पुण्यकर्म का उदय है। और एक काल ऐसा आनेवाला है। यह मैं कोई ज्योतिषी नही हूँ। परंतु यदि आप प्रतिदिन के अखबार पढ़कर देखोगे तो अराजकता फैलती जा रही है। इस सरकार का जो administration पर पकड़ कमजोर होती जा रही है। यू. पी. में सत्तर प्रतिशत प्रत्येक विभाग के आदमी अनुपस्थित थे ! हमारी कल्पना में भी नहीं आये ऐसी इतनी पकड़ कमजोर होती जा रही है। आज आप अलग-अलग जगह देखो तो आज राज्य चलाने की जो शक्ति जो व्यवस्थाशक्ति वह कमजोर होती जा रही है। तब यह जो administration हमारा जो है, वह यदि कमजोर हो जाय तो प्रजा की क्या स्थिति होगी ?

तब मुझे स्वयं को लगता है कि एक समय ऐसा आनेवाला है कि यह अराजकता फैलनेवाली है। यह मुझे बहुत स्पष्ट लगता है। मुझे उसका दर्शन है, ऐसा कहूँ तो भी चलेगा। परंतु इस कारण से डरने की जरूर नहीं है या भय रखने की भी जरूरत नहीं है, परंतु यह काल आनेवाला है हिन्दुस्तान में। आप उसके लक्षण देखो। शुरूआत हो चुकी है। तब

किसी की सलामती नहीं ऐसा काल आनेवाला है। और प्रत्येक देश का देखो कि हमें स्वराज मिला है, परंतु क्रान्ति नहीं हुई है। इस प्रजा में भी नवचेतन प्रकट करने के लिए उथल-पुथल की जरूरत है । यह जमीन भी उथल-पुथल होती है, तभी अनाज पकता है ।

यह स्वराज आया है । परंतु उथल-पुथल हुई नहीं है । अभी । चाहे सरकार अनेक रीति से धनवानों के पास से टेक्ष निकालने की कोशिश कर रही है। परंतु वह उथल-पुथल हुई नहीं है । Topsy-turvey नहीं हो गया है । समाज में एक-एक थर Topsy-turvey नहीं हुए हैं। उथल-पुथल नहीं हुई है। इससे इस प्रजा में प्राण प्रकट करने के लिए, चेतन जगाने के लिए यह उथल-पुथल होनी वह अनिवार्य है। आज नहीं तो कल, कल नहीं तो पचास साल में, साठ साल में कभी भी यह होनेवाला है, होनेवाला है, होनेवाला है। और यह अराजकता आनेवाली है। और आर्थिक परिस्थिति भी हमारे देश की आप देखो तो बहुत ज्यादा खराब है। अत्यंत खराब है। अब उसका किस तरह निकाल आएगा । यह तो सब कोई बैलगाड़ी लुढ़काते जा रहे हैं । उसका सच्चा चिंतक कोई नहीं है । उसके बारे में कोई चाहे जितना मानो कि कोई हो मौलिक विचारक तो भी वह आज अमल कर सके ऐसी स्थिति नहीं है किसी की ।

तब यह अराजकता आनेवाली है, वह मुझे स्पष्ट लगता है । तब भी हमारी कोई सलामती नहीं है । सलामती नहीं

रहनेवाली। यह बात भी उतनी ही मुझे चौकस लगती है। और इस पैसे का भी ऐसा ही है। मेरे जैसा। मेरा तो Charitable Public Trust है। मेरा वहाँ कोई Legal Status नहीं है। मैंने तो ट्रस्ट बनाकर ट्रस्टियों नियुक्त कर दिये हैं। परंतु मुझे लगा कि साला, आश्रम के भी ये पैसे सब। हमारे से तो दूसरा कुछ खरीद किया नहीं जा सकता। चीजवस्तु ले नहीं सकते।

आप पढ़ो तो ये सभी देश यह आफ्रिका के ये सब ऐशिया और ये सब हमारे साथ हिन्दुस्तान के साथ सब जुड़े हुए थे। बाद में वे सब अलग हो गये हैं। तो स्थान भी बदलता है। और काल के भी तबके बदलते हैं। काल के भी तबके आते हैं। एक के बाद एक ऐसे तबके होते हैं। तब इस समय का तबका भी ऐसे प्रकार का है कि बदलाव होनेवाला है। परंतु वह बदलाव को हम नहीं जान सकते। कोई कहे तो भी हम बरत सके वैसा नहीं है।

परंतु प्रत्येक उदाहरण देकर आपको कहता हूँ कि भाई, मैंने ऐसा किया है। मेरे आश्रम के लिए। हमें तो रज़ा भी नहीं मिलती। हमारे यहाँ कायदा ऐसा कि जमीन लेना हो तो जो महसूल हो। जैसे कि एक बीघा का मैं दस रुपया भरता हूँ। दस रुपया भरता हूँ तो उसका दो सौ गुना। ऐसे मैं जमीन खरीद सकता हूँ। उससे ज्यादा दूँ तो Legal नहीं कहा जाएगा। फिर भी भगवान की कृपा से कहो चेरिटी कमिश्नर

ने हमें रज़ा दे दी । चालीस हजार में लेने की इजाजत दे दी । भाई नंदुभाई और रावजीभाई मिलने गये थे और सद्भाग्य से वे (चेरिटी कमिश्नर) पहचानवाले भी निकले । और उनकी बेटी की शादी में मैं गया था । समधी की तरफ से । इसलिए उसने मुझे रज़ा दे दी ।

इससे मैं उदाहरण इसलिए कि मेरे जैसा भी व्यक्ति इस आश्रम की stability के लिए मेरे से तो दूसरा कुछ लेने जैसा होता यदि कानून की रज़ा मिले तो मैं आज ले लूँ, बाकी तो हम ज्यादा पैसा तो रखते नहीं है, परंतु कुछ Earmarked donation हो तो उसे रखना पड़ता है । वह नहीं खर्च कर सकते । फिर भी जितने खर्च कर सकते हैं, उतने पैसे हमने इसमें, आश्रम की stability के लिए मैंने खर्च किये हैं ।

• अराजकता में टिकने का सहारा सिर्फ भगवान है •

मुझे काल ऐसा लगता है कि अराजकता आएगी । तब हमारे कई लोग कहते हैं कि ‘‘तुम्हारा अस्तित्व नहीं होगा । तुम्हारे तुम्हारे इस आश्रम इत्यादि को ले लेंगे ।’’ भले ले ले । हमारी तो किसी की मालिकी है नहीं भाई । हम तो कहते हैं कि समाज की मालिकी है । हमने ट्रस्ट में–ट्रस्टडीड में भी लिखवाया है कि यह जब न चले तब उसे समाज के उपयोग में आये उस तरह उसका उपयोग करना । हमने कोई मालिकी रखी नहीं है । जैसा होगा वैसा । तो हमें कोई हर्ज नहीं है ।

परंतु तो भी जब समाज के उपयोग में आएगा तो भी जमीन होगी तो भी उसको उपयोग में आएगी । तो काल यह एक अराजकता का आनेवाला है। ऐसे अराजकता के काल में जहाँ सलामती का ठिकाना न रहे, तब हम-हमारा सहारा एक भगवान हैं। तब हमें टिका सके, हमें आधार दे सके, आश्रय दे सके ऐसा कोई तत्त्व हो तो यह भगवान हैं ।

• समाज के पतन का कारण—पैसे का महत्त्व •

पैसा आज जगत में पैसा वह भगवान हो गया है । बुरे में बुरा व्यक्ति, चारित्र में अधम व्यक्ति भी पैसे के कारण आगे है। महत्त्व पाता है। आज समाज में। रसिकभाई, आपको याद हो तो वडोदरा में केस हुआ था। एक महिला के साथ उसे । और उसे फेंक दी थी, मार डाला । वह भाई आज पैसे के कारण महत्त्व बहुत है । उसे कोई उसे इन्कार नहीं करता । सब यह महात्मा तो आगे बिठाते हैं, एक सभा में मैंने देखा है। स्वयं देखा है। और केस चला था। सजा हुई है उसे (डॉक्टर को) । परंतु आज पैसे हैं, इसीसे साहब उसका महत्त्व है ।

आज कोई भगवान का या चारित्र्य का महत्त्व नहीं है। इतना समाज हमारा कितना पतन हुआ है समाज का वह दिखाता है। यह एक- यह एक थर्मोमिटर है। हमारे समाज का । कैसा समाज है हमारा ! उसका यह एक थर्मोमिटर है । इससे पैसा- पैसे को महत्त्व, पैसे को

परमेश्वर समझनेवाला हमारा समाज है । उस समाज का पतन ही है । निश्चित । उसमें कोई शंका की बात मुझे लगती नहीं है । यह मैं कुछ घबराने—प्रत्यक्ष लक्षण बताकर कहता हूँ कि इस समाज का पतन ही होनेवाला है । वह भी कब होगा कि यह अराजकता आयेगी तब । उथल-पुथल हरएक स्तर उथल Topsy-turvy हो जानेवाला है । उसमें मुझे बिलकुल शंका की बात नहीं है ।

• भगवान के प्रतिनिधि— महात्माओं का संग विकसित करें •

तब वह जो समय आएगा उस समय हमारा सहारा क्या ? कि यह भगवान । अकेले भगवान हमें तब सहारा दे सकते हैं । तब कि वह भगवान तो हमें दिखता नहीं । तब कि उसके—उसके representative प्रतिनिधि इस पृथ्वी पर हैं । ऐसे प्रतिनिधि ऐसे जो महात्माओं का संग है, उस संग में जिसने दिल लगा दिया है । जिसका दिल उनके साथ मिला हुआ है । यह एक उनका बड़े से बड़ा सहारा है । उस काल में वे हमें मदद देते हैं । मैंने प्रत्यक्ष अनुभव किया है प्रयोग के साथ ।

इतना ही नहीं, परंतु १९३२ की साल में ये सभी जेल में । कोई भी नहीं मिलता । किस तरह यह पूरी संस्था चलाना ? पचहत्तर हजार, अस्सी हजार का खर्च । मुझे तो कोई पहचाने

नहीं। परंतु यह भगवान ने चलाई है। बनी हुई हकीकत आपको कहता हूँ। मेरी तो यह बात किताबों में तो लिखी हुई ही है। इससे मैं ज्यादा विस्तार करता नहीं हूँ। परंतु दस महीने तक मैंने कुछ किया नहीं। भगवान ने मिला दिया। सरसुबा नवसारी प्रांत के और यह बात सब पूरी लम्बी कहता नहीं, क्योंकि किताब में तो लिखा हुआ है मेरी यह हकीकत तो। परंतु उसने पूरे दस महीने तक पैसे दिये। जहाँ वे ले जाय वहाँ मुझे ले जाय। अनाज दिलाते और दस महीने तक ये सभी संस्थाएँ उसने चलाई हैं। तब वे भगवान कहते हैं–

अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम् ॥

(गीता ९/२२)

तब यह तो अनुभव की बात है। हम अनुभव करते नहीं हैं। हम किसी अच्छे व्यक्ति के पाले में पड़े हों तो वह हमें निभाता है। हम यदि उसकी प्रेमपूर्वक प्रेमभक्तिपूर्वक उसकी यदि सेवा की हो, उसके प्रति वफादारी दिखाई हो तो ऐसे व्यक्ति हमें निभाते हैं। संसार में ऐसे चाहिए उतने उदाहरण हैं, तो भगवान क्यों नहीं निभाएँगे हमें ?

• भगवान का सगुण और निर्गुण स्वरूप •

तो यह जो भगवान है, वह साकार भी है और निराकार भी है। सगुण भी है और निर्गुण भी है। तब यह निर्गुण और

सगुण । सगुण यानी कि किसी स्वरूप का दर्शन ऐसा नहीं । उस स्वरूप का दर्शन होता है जिसे-जिसे जिस-जिस प्रकार की भावना ।

त्यागराज स्वामी हमारे वहाँ अभी ही कोई बहुत लम्बा समय नहीं हुआ अभी । सौ वर्ष पहले ही वे शायद । तब सौ वर्ष पहले ही हुए हैं । इस हमारे ही देश में त्यागराज । उनको श्रीराम प्रत्यक्ष । उनका इतिहास पढ़ो । उनका जीवनचरित्र पढ़ो तो श्रीराम उन्हें प्रत्यक्ष थे । और उसके समान कोई संगीतकार तो हिन्दुस्तान में पैदा हुआ नहीं है । कोई राग-रागिनी उसके उपविभाग– उसके उपविभाग उसके ही । उन्होंने अखूट किर्ती, न बनाई हो ऐसा है नहीं । आज भी दक्षिण भारत के संगीतकार तो त्यागराज को ही भजन उसके । तब वह तो प्रयोग किया है न साहब, इतिहास की बात है न ? उसे राम प्रत्यक्ष थे । मीरांबाई को कृष्ण प्रत्यक्ष थे ।

तो वह जो स्वरूप है, उस स्वरूप का तो एक ऐसा आकर्षण है । वह आकर्षण फिर किसी समय टूटता नहीं है । उसके मन में से आकर्षण निकलता नहीं है । बिलकुल निकलता नहीं है । वह कुछ भी किया करता हो, परंतु वह आकर्षण उसके आगे ही आगे रहता होता है । इतना जबरदस्त आकर्षण है उसका । वह ऐसी-वैसी बात नहीं है । और बहुत बड़ी बात है । वे भक्त उनके साथ बात भी कर सकते हैं । खेल भी सकते हैं ।

तो ऐसे जो भगवान का स्वरूप उसे भी मैं सगुण नहीं कहता। मैं तो सगुण क्या कहता हूँ कि **चेतन के जो गुणधर्म तादात्म्यभाव, साक्षीभाव, यह सब गुण हमारे जीवन में प्रत्यक्ष प्रकट हो और हम अनुभव करें, उसे मैं सगुण स्वरूप कहता हूँ। चेतन के गुणधर्म हमारे में प्रकट हो, तब वह सगुण स्वरूप।** और निर्गुण का तो कुछ कह नहीं सकते। शब्दों में निर्गुण कहें तो भी contradiction हो जाय। तो इतना आप कहते हो वह सगुण में ही आ जाता है। तब निर्गुण तो कभी कुछ बोलकर नहीं, सिर्फ अनुभव कर सके ऐसी स्थिति है। परंतु उस निर्गुण की अवस्था में व्यक्ति नहीं रह सकता। चाहे कितना अनुभवी हो तो भी उसे नीचे उतरना ही पड़ता है। उसे नीचे उतरने के बाद ही मनुष्य के साथ का उसका व्यवहार रह सकता है। उसे अवतरण होना ही पड़ता।

• भगवान शंकर का प्रतीकात्मक रहस्य •

तब कोई कहेगा कि भाई प्रत्यक्ष हमारे ऋषिमुनि बहुत सयाने थे। बहुत दीर्घदृष्टि। कि भाई हमें जिस लक्ष्य को प्राप्त करना है, उस ध्येय का conception तो हमारी बुद्धि में प्रकट होना चाहिए न ? वह हमारा कैसा ध्येय ? कैसा हमें जो होना है वह कैसा है ? वह conception में हमारी– हमारी बुद्धि की समझ में आने के लिए भगवान शंकर का एक उदाहरण हमारे सामने– प्रतीक symbol रखा है।

कि आप भगवान शंकर को देखो । तो कामदेव को जला डाला है और पार्वतीजी के साथ खेल रहे हैं । जाँघ पर बैठे हैं । अपनी दाहिनी जंघा पर बैठे हैं । पुत्र भी हुए हैं । दो contradiction है न ? वहाँ मेल हुआ । असुरों के स्वामी । उनके भूत, पिशाच, गण के स्वामी महादेव । आप किसी को भी पूछ कर देखो । और देवों के भी स्वामी । दोनों contradiction का जिसमें ऐक्य होता है । फिर स्वयं तो श्मशान में रहनेवाले, भस्म लगानेवाले, निष्किंचन, परंतु उनका एक गण कुबेर तो विपुल स्वामी । लक्ष्मी का तो जिसे कहा नहीं जा सकता, अपार कल्पना में भी न आये । यह दोनों contradiction का जिसमें मेल होता है । तब यह अनुभव की स्थिति । हमारे ऋषिमुनियों ने रख दी कि ऐसा जब होता है, तब ही होता है । वही इस अवतरण को पकड़ सकता है । Decent of the Divine. यह जो गंगाजी सिर पर उतर रही है, वह तो प्रतीक है– Symbol है । यह जो Decent of the Divine वह तब अवतरण कर सके कि ऐसी स्थिति हो तब ।

• चेतनानिष्ठ में विरोधाभास का मेल होता है •

तो ही उसे पकड़ सके । शक्तिशाली ऐसा ही मनुष्य हो तब । वह हमें हमारे शास्त्रकारों ने समझा दिया की ऐसी स्थिति हो तब । वह अनुभव की स्थिति । परंतु हम कोई उसे स्वीकार नहीं कर सकते । हमारी ताकत नहीं है भाई । हमारी मानसिक

ताकत नहीं है । हम उसे ऐसा आदमी । यह तो शास्त्रों में लिखा है और यह सब समझाया है । इससे हमें अच्छा लगता है और हम कबूल करते हैं । **परंतु प्रत्यक्ष ऐसा कोई मनुष्य हो तो । तो नहीं । साला, लुच्चा है, यह तो । लबारी है, ऐसा ही कहेंगे हम । हम उसे स्वीकार नहीं कर सकते ऐसे आदमी को । क्योंकि असुर का भी स्वामी और देव का भी स्वामी । तो असुर भी आये उसके साथ और देव भी हो । तो कि असुर हो तो हमारा ठिकाना ना रहे । हम अस्वीकार करते उसे । साला, यह तो ऐसा है । यह तो ऐसे सब हैं और उसके साथ और सब । अभी देव हो तो तो हरज नहीं । तो तो हमें अच्छा लगे । परंतु असुरी के साथ खेलता हो और ऐसे करता हो तो हम उसे स्वीकार नहीं करते ।**

अब भगवान शंकर की ही तरह ही वह निष्काम हो गया है । मनुष्य ऐसी तो हमें गारंटी नहीं होती । किस तरह हमें विश्वास हो ऐसे मनुष्य का कि वह निष्काम हो गया ऐसा ? परंतु ऐसे मनुष्य का विश्वास होता है । जगत में उसे ऐसे भी प्रसंग बनते हैं । ऐसे भी प्रसंग अपने आप उसके जीवन में प्रकट होते हैं कि उसका भी सबूत मिलता है । परंतु जिसे जानना हो उसे मिलता है । नहीं मिलता ऐसा नहीं है ।

तो हमारे शास्त्रकारों ने हमारे सामने प्रत्यक्ष सब रखा है कि जिससे हमारी बुद्धि स्वीकार कर सके कि हम ऐसे महादेव के जैसे हो जाँय तो हममें **Decent of the Divine**

उतरेगा । इसके बिना नहीं । तब यह विद्या । यह भी एक विद्या है । तब दूसरी सब विद्याओं को सीखने के लिए हमें कोई न कोई गुरु के पास तो जाना ही पड़ता है । बालमंदिर में पढ़ें, पहली में पढ़े, चौथी में पढ़े, मैट्रिक पास हुए । कॉलेज में गये । तो किसी के पास तो सीखते है न ?

व्यापार में भी ऐसा ही । किसी के पास सीखे बिना तो कोई विद्या हम जान नहीं सकते । सुतार की विद्या हो तो सुतार के पास जाना पड़ेगा । लुहार की विद्या हो तो लुहार के पास जाना पड़ेगा । हीरे की विद्या सीखनी हो तो जो सेठ बैठे हो, उसके पास सीखनी पड़ती है । कुछ भी सीखना हो, रसोई का सीखना हो तो किसी बहन के पास या मा के पास सीखना पड़ेगा । कुछ भी सीखना हो तो वह सिखानेवाले वह जो सीखने के लिए सीखना है, उसका जो जानकार है, उसके पास हम रहें और सीखें तो सीख सकते हैं ।

• स्वविकास की नींव—गुरु में तादात्म्यता •

इससे गुरु की आवश्यकता तो सभी क्षेत्र में है । गुरु बिना तो कोई क्षेत्र में कुछ सीख सके ऐसा है ही नहीं । किन्तु इसकी एक विशेषता है । इस आध्यात्मिक विद्या सीखने के लिए जब तक आप गुरु में हिलमिलकर-मिश्रित न होकर एक न हो जाओ, गल न जाओ, तब तक हमारे में Receptivity ग्राह्यशक्ति ग्रहण कर लेने की शक्ति कभी पैदा न हो । ऐसा

प्रेमभक्तिपूर्वक का उसके साथ हमारा एक हो जाने की शक्ति हमारे में जागे—वह भूमिका विकसित हो तब उसकी तरंगें हमारा हृदय हमारा-भूमिका ग्रहण कर लें । उसे अंग्रेजी में Receptivity कहते हैं ।

वह Receptivity जब तक प्रकट न हो, तब तक भले हजारों वर्ष आप रहा करो, किन्तु कुछ उससे आपको परिणाम नहीं मिलेगा । वह तो बहुत सयत रहा और फिर भी ऐसा का ऐसा रहा । क्योंकि ऐसा का ऐसा रहे । उसका कारण है कि उसे Receptivity प्रकट हुई नहीं है । फिर क्या करे वह ? उसकी तरंगें उसमें कदापि जाय नहीं । जाकर टकराकर वापस ही आती । तब यह Receptivity गुण यानी कि उसकी तरंगे हमारे प्रति आती हो, उसे पकड़ लें, ग्रहण कर लें, सत्कार कर लें । ऐसी स्थिति हमें करनी चाहिए । इसके लिए यह प्रेमभक्ति उसके साथ एक हो जाना । हिल-मिलकर मिश्रित होकर एक हो जाना ।

किन्तु वह भी मैंने किया है साहब । भयंकर अमय विकसित करने मुझे हुक्म हुआ । तो कोई भी स्थान पर भयंकर से भयंकर जगहों में रहा हूँ । कोई भी मुझे हुक्म हुए समुद्र में चले जाने के हुक्म हुए, वे मैंने पालन किये हैं । और मैं ऐसी बात कोई बात नहीं कहता, जिसका कोई साक्षी न हो । जिसका कोई साक्षी न हो ऐसी बात कभी करता नहीं । आज भी वे सब साक्षी हैं । आप अन्य सभी की बात पढ़ो । वे तो हो गई है । किन्तु आज मेरे जीवन के प्रसंगों के साक्षी खड़े हैं ।

• मोटा आपके कुटुम्ब के एक हैं •

मैं तो आपके कुटुम्ब का एक हूँ। मैं तो आपका फरजंद हूँ। इससे में खास विषय आज मैं कहता हूँ कि भई आप सब मेरे पर भाव रखो। मुझे दूसरा कुछ काम नहीं है। पैसे आप देते हो, वह तो बहुत आनंद है मुझे। उसमें मुझे बहुत विशेषता नहीं लगती है। विशेषता तो बाहरवाले मुझे देते हैं। इस जिंदगी में मुझे एक-साथ पच्चीस-पचास हजार देनेवाला कोई मिला नहीं। मेरा और आपका जितना सम्बन्ध है, उतना कुछ रावजीभाई के साथ सम्बन्ध नहीं है। हर वर्ष में पंद्रह-सत्रह हजार तो सही ही उसका। अन्य भी ऐसे भाई हैं। नहीं है ऐसा नहीं। इससे उसकी विशेषता नहीं आंकता हूँ। मुझे तो मेरे कुटुम्ब तरफ से मिलता है, उसकी मुझे विशेषता लगती है। मैं आपमें का एक हूँ। ऐसा मुझे लगा करता है।

• *मोटा* का कर्तव्य—भगवान की भावना का बीजारोपन •

वह और मेरे शरीर तो अब लम्बा टिकेगा नहीं। ये सब उदाहरण इसलिए दिये कि वे सच्चे-सच्चे हैं। आप छान-बीन करके देखो। जिसे जैसे छान-बीन करनी हो, वह छान-बीन कर सकता है। और तो बाद में यह भावना यदि न जागे तो मेरा नसीब। किन्तु मुझे मेरा दिल इतना है कि यह शरीर गिरे उसके पहले आप सभी के दिल में भगवान के संदर्भ की भावना का बीज बोया जाय। वह मुझे .... वह यदि हो तो

मुझे मेरे कर्तव्य से मुझे .... मुझे उस तरह आनंद हो कि चलो यह मेरा कर्तव्य हुआ ।

किन्तु अनेक ठिकाने देखो साहब, यह इतिहास । यह भी इतिहास है कि कितने भी भक्त हुए हो बाहर सब प्रसिद्ध होते हैं । सब उसे भक्ति दे । स्वयं के कुटुम्ब में नहीं साहब । मुझे मेरे सब आदमियों ने मना किया कि अबे, तू तेरे नडियाद में मत कर तू । तेरे गाँव मे । मैंने कहा गाँव में ही जाना अच्छा । हमारा आचरण कैसा था ? किस तरह बरते थे ? क्यों नहीं ? कोई लोग को चार लोगों को जानना हो तो जानने का मिले न । गाँव में अच्छा । किन्तु पाँच हजार मील दूर बैठे हो तो हम कौन हैं । कैसे हैं ? क्या पता लगे ?

आज नडियाद में जाकर बैठा हूँ । वहाँ अच्छी तरह से मान–आदर होता है । इतना ही नहीं, किन्तु आप देखो । सभी भक्तों का उनके ज्ञातिजनों ने तिरस्कार किया, अवगणना की । मेरे वहाँ ऐसा कुछ नहीं है । उलटा मेरी ज्ञातिवाले वसंतपंचमी उत्सव मनानेवाले हैं । भई, मेरे गाँव में भी इस समय रक्षादिन बहुत अच्छी तरह से मनाया । जो देखा हो, जो हाजिर हो वह जाने । यह दिलीपभाई था । कितनी सुंदर तरह मनाया था उन लोगों ने !

• चेतनानिष्ठ की ऋण अदा करने की रीत •

तब............ किन्तु यह एक ऐसा इतिहास का बनाव है । नरसिंह मेहता देखो, तुकाराम देखो, ज्ञानदेव देखो । वे सब हो

गये । उनके समाज ने, उनके कुटुम्ब ने उनको कुछ गिने नहीं हैं । तो आप तो मेरा कुटुम्ब हो, किन्तु आप गिनो या मत गिनो, आप तो मुझे, गिनते हो ऐसा मैं समझता हूँ । आपने मुझे मदद की है । मैं बोल सकता नहीं मैं किन्तु मेरा ऋण तो कब अदा होगा कि आप सब के दिल में यह भावना का बीज बोयेगा और वह मैं कुछ छोड़नेवाला नहीं । किन्तु मेरा शरीर गिर जाएगा, वह कुछ जीवन का अंत नहीं है ।

और मैं तो बहुत समय से कहता हूँ कि मैं फिर से जन्म लेनेवाला हूँ । और वह स्त्री का लेनेवाला हूँ ऐसा भी कहता हूँ । इससे आपके साथ का मेरा सम्बन्ध जो मैंने कायम रखा है । इससे आज मेरे पास आनेवाले हो, आनेवाले हो, आनेवाले हो, उसका मुझे आज अभी भी उतना ही विश्वास है । किन्तु वह विश्वास उस काल की बात है तब ।

मेरा शरीर छूटते पहले सब में इतना थोड़ा-सा भावना का बीज यदि रोपा जाय न तो मुझे बहुत संतोष हो । और ये उदाहरण मैंने दिये हैं, उसका आप विचार करना । आप जाकर सब को पूछ सको । छान-बीन कर सकते हो । भाई नंदलाल ने तो देखा है यह सब ।

• चेतनानिष्ठ में चार प्रकार के परमहंस •

तब यह..........ऐसे जो आदमियों ऐसे आदमियों को (कोई बालक बीच में जोर से बोलता है तो श्रीमोटा उसके अभिभावक को टकोरते हैं । कुछ बाधा नहीं । उसके प्रति लक्ष

मत रखो। उसे करने दो.....हं...अ...। उसे रोको मत भाई) ऐसे जो आदमी हैं, उसका भी हमारे शास्त्रकारों ने अभ्यास किया।

कि उसकी Categories की। प्रकार किये बनाये कि बालवत्, जड़वत्, पिशाचवत् और हंसवत्। ये चार प्रकार के परमहंस कहे। इससे भी आगे की स्थिति है। किन्तु ये चार प्रकार तो उन लोगों ने बता दिये। तब बालवत् हो तो भी हम उसे साला, ये सब क्या ? यह माँगे, वह माँगे, इसमें मन हो जाय। उसमें। यह तो साला, बहुत रागवाला है। ऐसा कह दें हम। बालवत् बरते। कुछ अच्छा देखे तो बालक को लेने का मन हो जाता है न ? वैसा उसको अगर कुछ मन हो जाय तो हम खलास ! मन से उतार दो। हम उसे कि इसमें और इसमें राग लग जाता है। इसे इसका तो मोह है इसे। किन्तु बालवत् भी होते हैं। उसे हम नहीं पहचानते।

जडवत्-काष्ठवत् पड़ा रहे। ये मैंने देखे हैं। हं...अ... ? बालवत् का अनुभव है मुझे। और जड़वत् बिलकुल निश्चेष्ट रूप से पड़ा रहे। खाने की कोई स्पृहा नहीं। पानी पीने की स्पृहा नहीं। कोई उसे खिलाये तो खाय। पानी पिलाये तो। मैं उस प्रकार चार-पाँच-छ दिन तक बिलकुल खाये-पीये बिना पड़ा रहे देखे हैं। कराची में। ओलिया को एक। बिलकुल फूटपाथ पर। तब बिलकुल उसे कोई................ फिर कोई आदमी आये। उसे पानी पिलाये। खिलाये तो खाय। मैंने और हेमंतभाई ने दोनों ने देखे हुए हैं।

जब तीसरा एक प्रकार कहा कि पिशाचवत् । पिशाच की तरह बरते । उसे किस तरह हम पहचाने आप कि ऐसे पुरुष हैं ? किन्तु हमारे शास्त्रकारों ने ये चार Categories की । पिशाच जैसा भी बरते तो भी वह ज्ञानी हो । कारण क्या कि भगवान जो हैं, चेतन है, वह सत में भी बरते, असत में भी बरते । असत में भी चेतन तो है । कोई नकार सके नहीं । तब वह पिशाच जैसा भी बरते तो भी वह ज्ञानी है । किन्तु हो कोई भी एक हं...अ... भई । कोई भी एक ही हो । किन्तु ऐसे होते हैं सही । और हंसवत् यानी कि discorimination सुंदर रूप से । हंस जैसे पानी और दूध मिश्रित हो तो नीरक्षीर न्याय से वह दूध केवल ले ले ऐसे ।

ऐसे जो चार प्रकार के परमहंस कहे । तब हमारे लोग अनुभवी थे । उन्होंने देखा कि इस प्रकार भी ऐसे लोग बरते । वह शास्त्र में और बड़े बड़े लोगों ने कबूल की बात । सभी ने । रामकृष्ण ने कहा । श्री अरविंद ने लिखा है यह । किन्तु यहाँ प्रत्यक्ष कोई हो तो उसे कोई स्वीकार नहीं करते । कितना ही आपका सम्बन्ध हो न ।

• गुरुमहाराज की सिखावन अनुसार चलता हूँ •

इससे मेरे गुरुमहाराज ने मुझे कहा, भई, तु चेतकर रहना । यह तू तेरा शरीर गृहस्थाश्रमी है । यह बावलापन लस्टम-पस्टम रूप से मत करना । अन्यथा तेरा काम बिगड़ जाएगा । ये सब के साथ तुझे रहना हैं और मिश्रित होना है । इससे ये सब नाज़-

नख़रे तू मत करना। इससे तो मेरे गुरुमहाराज की सिखावन से मैं चलता हूँ। और कितनेही भाव होते हैं। किन्तु मैं व्यक्त करता नहीं हूँ। किसी को जानने भी नहीं देता। किन्तु मैंने ये प्रसंग कहे वे सब सच्ची बात है। उन प्रसंग पर से आप समझो तो अच्छी बात है और आज का दिन ऐसा है कि मुझे आपको साफ साफ सच्चा कहना चाहिए। इससे मैंने ये सब बात रखी हैं।

• मोटा—पीढ़ी के हितेच्छु हैं •

श्रीमोटा – कितने बजे भाई ?

एक भाई – नौ।

श्रीमोटा – दूसरा तो मुझे विशेष कहना नहीं है। आपके दिल में मेरा स्थान रखना और आपका एक बालक हूँ। इस पीढ़ी का। और पीढ़ी का बालक हूँ। मात्र एक कल्पना की दृष्टि से नहीं कहता। हकीकत की दृष्टि से कहता हूँ। उस हकीकत से आपके द्वारा समझ हो तो समझना। और एक उदाहरण आपको दे दूँ। चंद्रकांत जानता है और मामा भी जानते हैं। फिर से अधिकतर।

एक समय मेरे मन में जागा कि यह पीढ़ी हम पारा लें तो अच्छा। किसी तरह से। बिलकुल बनी हुई सौ प्रतिशत की सच्ची बात है। आपके द्वारा स्वीकार हो या स्वीकार न हो उसकी मुझे परवा नहीं कि आप से ले सको इतना लो। ऐसा भी कहा था मैंने। मेरा एक काल ऐसा था कि मैं व्यापारी

नहीं, इससे मेरे में विश्वास न बैठे मैं समझ सकता हूँ। किन्तु मैंने कहा था। वह बात सच्ची थी। और ले सको उतना लो। एसा भी मैंने कहा था। राह देखने का कहा था। फिर नफा हुआ था उसमें से। फायदा हुआ था, वह बात सच्ची है। फिर मैंने कोई दिन मन में ऐसा उगा नहीं करने का। किन्तु दूसरे रूप से मैंने इस पीढ़ी के काम-काज में मैंने रस लिया है। पक्का रस लिया है। वह मेरे मन से विश्वास की बात है।

अतः मैं कहता हूँ कि इस पीढ़ी का मैं बालक हूँ। ज्यों का त्यों नहीं कहता। मात्र कल्पना की दृष्टि से कहता नहीं मैं। बिलकुल उचित रीति से, सच्चे रूप से स्वीकार करो या स्वीकार मत करो उसके लिए मैं बिलकुल निःस्पृह हूँ। अब तक निःस्पृह ही रहा हूँ। किन्तु हूँ सही।

और मेरा शरीर ज्यादा टिकने का नहीं है। वह बात भी मुझे विश्वास है। क्योंकि उनहत्तर हुए। भले अस्सी हो मानो कि। किन्तु पूरी जिंदगी में पूरे काल की गिनती मैं दस-ग्यारह वर्ष क्या हिसाब में ? इतनी अवधि में भी हम सब प्रेम से हिल-मिलकर मिश्रित हों। और यह एक भावना का मुझे दूसरा कुछ नहीं चाहिए। एक भावना का बीज रोपा जाय। सद्‌भावना का एक बीज रोपा जाय। भगवान सम्बन्ध एक भक्ति को बीज रोपा जाय वही मेरा कर्तव्य है। हरिःॐ तत्....सत्...।

• • •

॥ हरिःॐ ॥

दिनांक २१-७-१९६८ के दिन कुंभकोणम् में गुरुपूर्णिमा के दिन श्रीमोटा के साथ एक जिज्ञासु भाई की प्रश्नोत्तरी

• श्री हरिभाई का उद्बोधन •

जिज्ञासु : अभी Reader's Digest में ...... नाम का लेख.... है। फिर उसमें ऐसा कहते हैं, व्यक्ति को वैसा हम साधारण रीति से जानते हैं कि कई बार ऐसा बनता है कि कम distance के अंदर या लंबे distance में भी कई बार ख्याल आता है कि मुझे उसने याद किया। उसके लिए उसने तीन-चार उदाहरण दिये। Reader's Digest में अभी। यह तो मानो कि ऐसी एक...... हम कहते हैं न कि ..... कि जो न समझ सकते हो या telepathy को न मानते हो ऐसे लोगों को भी ऐसा अनुभव हो रहता है कि जिससे करके वे लोग भी फिर मान्य कर देते हैं।

उस तरह ऐसा एक उदाहरण देता है कि एक महिला फ्रान्स में रहती थी। वह उसके बेटे के साथ अमेरिका शीप में गई। जब उसने अमेरिका में पैर रखा उसी समय वहाँ युरोप में युद्ध शुरू हो गया। इससे अमेरिका से वापस आने की संभावना न हुई।

वहाँ उसे एक दिन रात को सो रही थी, तब उसे एक स्वप्न आया। उस सपने में उसने देखा कि बहुत ही गुस्से में पेरिस के अपने घर तरफ वापस आ रही है। खुद जिस मकान में रहती है, जिस फ्लेट में रहती है, उस मंजिल पर बहुत जल्दी चढ़ रही है। गुस्से में और गुस्से में ...... वहाँ जाने के बाद उसने दरवाजा खटखटाया..... और उसी सपने में। जिस तरह दरवाजा खटखटाती है, उसी तरह एक आदमी खोलता है। तो स्वयं के फ्लेट में दूसरा आदमी, बिलकुल अनजान व्यक्ति, नाटा है ...... भाववाला है। और थोड़ा वयस्क है। उस आदमी ने कहा कि ''आओ।'' ऐसा कहकर की ''आपको किसका काम है ?'' इससे वह उसकी परवाह किये बिना एकदम अंदर दाखिल होने का प्रयत्न करती है, तब वह व्यक्ति हाथ डालकर .... कि आओ अंदर और वह अपने घर में एक नई व्यक्ति के रूप में स्वागत पाती है और अंदर जाकर देखती है तो अपने फर्निचर में जो सब सजाया हुआ है, उस पर किसी के चद्दर बिछाकर रखी है और कमरे के बीच एक ..... पड़ा है और उस तरह उसकी आँख में अचानक आँसू आ जाते हैं। एकदम गुस्से के कारण।

वह व्यक्ति जाग गई और देखती है कि ..... फिर भूल गई वह बात। तब वह लड़का है वह बड़ा हो जाता है। और लड़का युद्ध में खत्म हो जाता है। मर भी जाता है और युद्ध जब पूरा होता है। छ साल बाद। तब वह महिला पेरिस वापस जाती है। तब वह जाती है, तब उसका जो कम्पार्टमेन्ट है,

उसका जो अपार्टमेन्ट एक अमेरिकन ओफिसर ने occupy किया हुआ है। इससे उसे खाली करके चले जाने के लिए फोन पर फोन करती है, परंतु वह दाद नहीं देता । वह उसे एपोइन्टमेन्ट देता है। इससे वह महिला चुपके से कमरे की ओर जाती है। और उपर चढ़कर वह दरवाजा खटखटाती है तो अंदर से बदमाश व्यक्ति खोलता है और उस आदमी का, उस व्यक्ति का चेहरा देखते ही उसे तुरंत .... होता कि छ साल पहले एक ..... कद के आदमी को देखा था। वह यही है। वह आदमी ...... नाटा और ...... वाला और हाथ रखा जाय ऐसा है। वह गुस्से में ऐसा कहता कि आ अंदर ऐसा कहकर बुलाता है और गुस्से में दाखिल होकर देखती है ....

तो एक ही समय दो व्यक्ति .... बात करते है टेलीपथी काम करती है ..... जो वस्तु उस महिला को सपने में आने की संभावना ..... मैंने आपको पहले बात की थी। मुझे याद नहीं है, परंतु चाचा बीमार हुए '५५ की साल में उसके पहले एक दिन रात को मुझे सपना आया कि जैसे कि दीवार से सटकर पलंग है और पलंग में चाचा नग्नावस्था में सोये हुए हैं और मैं पीछे से देखता हूँ और मैं जैसे कि रो रहा हूँ। इसलिए कि अब मानो कि अभी .... जैसा समय आये तो जो होनेवाला है, वह होगा.... उतने में मैं जाग गया। जाग गया तब .... मैं रोता था, परंतु आँखो में से आँसू बह रहे थे। उस समय हुआ कि ऐसा सपना आने का कारण क्या ? उस समय वे बीमार नहीं थे और कुछ भी नहीं था फिर .... उसी प्रकार दीवार से

सटकर पलंग था और हम चाचा को नहला रहे थे। उस समय ...... नहला रहे थे, तभी मुझे ख्याल आया कि यह दृश्य मैंने डेढ़ साल पहले मैंने सपने में देखा और मैंने माँ से बात की थी। चाचा को तो बात नहीं की मानो कि— आपका मैंने ऐसा दृश्य देखा। परंतु वह दृश्य देखा, तब उस समय मुझे लगा कि यही दृश्य मैंने देखा है पहले। अब जो उस दूसरे अमुक प्रकार के दृश्य ऐसे जनरल .... होते हैं। परंतु यह तो मानो निश्चित हो।

उसी तरह चाचा को कुछ अनुभव हुआ कि एक दिन रात को सो रहे थे और नींद में उनको सपना आया कि एकाएक वह मानो कि बीमार हो गये हैं ..... और तीसरे दिन पत्र आया कि .... अकस्मात हुआ है और अस्पताल में हैं और अच्छे हो जाएँगे। आज जब ऐसा समझो कि उनको जो आया था सपना उस तरह उनको एक्सीडेन्ट भी हुआ था। यह बहुत समय पहले .... डेढ़ साल पहले मुझे ऐसा सपना आया था कि जो बना ..... पर का अनुभव है। उसकी possibility कहाँ से हो ? उसमें telepathy का तो कोई सवाल ही नहीं होता है।

श्रीमोटा : नहीं। नहीं। नहीं। नहीं।

जिज्ञासु : और future में जो ..... इस तरह होनेवाला है, इस बारे में मुझे बताने कि किसी शक्ति को आवश्यकता लगी उसे क्या आवश्यकता ?

श्रीमोटा : ...... दो तीन तरह से इसका जवाब दिया जा सकता है और rationally यदि जवाब देना हो तो दूसरी हमारे

सिवा कोई ऐसी शक्ति चेतन प्रकार की अंदर जुड़े बिना । तो हमारे स्वयं में एक सात प्रकार की ग्रंथियाँ पड़ी हुई हैं । थाइरोईड ग्लेन्ड, पीच्युटरी ग्लेन्ड, प्रोस्टेट ग्लेन्ड । यह तो अब अेलोपेथी से इतना सारा प्रमाणित हो चुका हैं कि सात ग्रंथियाँ हैं । उनमें दिमाग के अंदर जो पीच्युटरी ग्लेन्ड है ..... दिन प्रतिदिन यह जो telepathy वह कहते हैं कि उसके पीछे भारी शक्ति है । यह पीच्युटरी ग्लेन्ड और उसे ऐसे उदाहरण भी बने हैं । जो ... नाम की किताब भी है । वह गिर जाता है, बाँधते बाँधते काम में । पीटर हरकोस उसका नाम । राज का काम करते-करते पाइट पर से ..... उसे उसका आघात लगता है । उसे उस पीच्युटरी ग्लेन्ड का । उससे कुछ विकास होता है और कुछ भी थोड़ा बदलाव उसके कारण इस साहित्य का सब जान सकता था । आदमियों के विचार उस आदमियों का कुछ बताया उसका कपड़ा स्पर्श कराये तो भी .... तब वह कोई आध्यात्मिक तो व्यक्ति था नहीं कोई ।

तब यह हमारे में एक ऐसी शक्ति रही हुई है । यह शक्ति पीच्युटरी ग्लेन्ड है । इस पीच्युटरी ग्लेन्ड में से अमुक रस प्राप्त होते हैं । ग्लेन्ड सिर्फ । थाईरोईड ग्लेन्ड कहो । मामा को थाईरोईड ग्लेन्ड .... की इस प्रकार की एक .... शक्ति है । इस समय प्रोस्टेट ग्लेन्ड का भी ऐसा ही है । यह जो वीर्य की शक्ति कहो, तेजस कहो तो एक प्रकार की दृढ़ता, अटलता, मानसिक शक्ति यह हमारे प्रोस्टेट ग्लेन्ड का स्थूल जैसा है उसका कार्य प्रोस्टेट ग्लेन्ड का वैसा सूक्ष्म भी इस प्रकार का उसका कार्य

है। दृढ़ता the power of determination, दृढ़ता, अटलता, तेजस वह सब प्रोस्टेट ग्लेन्ड का functioning। उस तरह पीच्युटरी ग्लेन्ड इतनी सारी ..... even the past, even the future कि उसी समय उसके ख्याल में वह आ जाता है। क्योंकि सब को क्यों नहीं होता और हमें होता है ? यह सवाल होता है न हमें ? तब यह एक ..... एक समझने जैसी बात है, इसमें कि व्यक्ति गहरा सोचे कि यह दूसरे सब को नहीं होता। और हमें होता है। तो हमें हो तो सही न क्योंकि उसे और साबित हुआ फिर। वैसे तो हम कल्पना से यह मान लेते हैं। इसमें बिलकुल कल्पना की बात नहीं है। Reality की बात है इसमें। परंतु दूसरे लोगों को न हुआ और हमें हुआ तो यह बताता है कि एक प्रकार की ऐसी एक भूमिका हमारी है कि इस मार्ग पर आगे बढ़ सके ऐसी भूमिका हमारी है सही। तब उस भूमिका को विकसित करने की हमें सभानता नहीं रहती है। यह साबित कर देता है।

अमुक मनुष्यों को। मुझे भी इस बचपन से ही हिमालय के सपने आते और सब दृश्य देखता। और पहली बार तो गया, तब जो-जो मैंने दृश्य देखे उन स्थानों पर .... करके भी मैं गया था वहाँ और मुझे लगा कि यही दृश्य बचपन में मैं देखता था। तब भी मुझे तब मुड़ा तब मुझे आई सभानता और हुआ कि यह एक एक एक प्रकार की tendency जो है, वह मेरे इस मार्ग में बढ़ने के लिए एक भूमिका रूप से है, वह मुझे तब समझ का एक प्रतीक के रूप में जागृत हुआ।

इससे अभी जो घटना हो रही है, वह एक हमारे अपने में ही ऐसी शक्ति रही हुई है और वह शक्ति थोड़े बहुत अंश में इस प्रकार की है कि थोड़े बहुत अंश में भी विकसित हुई है और इसमें मुख्य ग्लेन्ड पीच्युटरी ग्लेन्ड बहुत बड़ा रोल अदा करती है। यह पीच्युटरी ग्लेन्ड वह हम समझे उसे हम सिर्फ स्थूल ही जानते हैं। यह दीखती है। आप disection करो तो आपको ग्लेन्ड निकालकर दे सके। थाइरोईड ग्लेन्ड निकालकर दे सके। प्रोस्टेट ग्लेन्ड निकालकर दे सके। ऐसी सात प्रकार की ग्लेन्ड हैं। अनेक प्रकार की ग्रंथियाँ हमारे शरीर में, उसे disection करके खोजी हैं उन लोगों ने। अब उस पर विशेष वे लोग संशोधन करते जा रहे हैं कि इस शरीर के लिए ही यह ग्लेन्ड का काम है या उससे विशेष प्रकार का है और जैसे-जैसे संशोधन करते हैं। वह कोई सिर्फ शरीर के लिए नहीं है।

ये जो ग्लेन्डस हैं। उसका शरीर पर्याप्त तो संबंध है। उससे भी कुछ विशेष ज्यादा उसका functioning है। काल्पनिक स्थिति एक प्रकार की। उससे यह सब जाना जा सके इतनी सारी पीच्युटरी ग्लेन्ड की शक्ति है। तब वह कुछ अंश में हमारे में कुछ थोड़ी बहुत भी थोड़ी-सी तिल जितनी कहे तो। क्योंकि हमें बारंबार ऐसा नहीं होता। जीवन में दो-चार बार या पाँच बार ऐसा हुआ हो तो हमारा जीवन तो कई वर्षों तक टिका हुआ है। उसके वर्ष के हिसाब में दो-चार बार आये हो तो कोई हिसाब ही नहीं .... क्षुल्लक कहा जाएगा। तो यह तो विश्लेषण के अंश में हमारी पीच्युटरी ग्लेन्ड

विकसित हुई है वैसा यह साबित होता है । ऐसा यह साबित होता है, वही बताता है कि हम इस मार्ग पर अभिरुचि को विकसित करें तो विकास होने की बहुत बड़ी संभावना है । यह तो मानो कि किसी तीसरी व्यक्ति के बीच कुछ .... अंश में Divine Power को दूसरे के बीच जुड़े बिना यह मैंने समझाया ।

अब एक दूसरी भूमिका । क्योंकि अकेला .... दोनों में पहलू नहीं समज सकते । और उसे हम अनुभव कर सकते हैं ।

अब एक दूसरा प्रश्न लेता हूँ । ये नंदुभाई यहाँ बैठे थे । मौन में । और यह युद्ध सेकन्ड वर्ल्ड वोर हुआ, तब यह खबर नहीं थी । और उसने पेरिस ज्वालाओं के साथ जलते देखा था । पेरिस । नंदुभाई ने मौन में । उन्हें स्वयं को अनुभव है । क्योंकि अंदर तो उसे कुछ खबर ही न थी । कि वे अखबार इत्यादि तो वे पढ़ते नहीं थे । वह तो उसने लिखा कि ऐसा हुआ । उसने देखा प्रत्यक्ष ।

इतना ही नहीं, परंतु कहाँ उनके भाई मर गये थे, वे कीकाभाई थे । बंसीभाई थे । बंसीभाई नहीं थे । उनके सगेभाई... हाँ .... यह... उनकी पत्नी का देहांत हो गया होगा और चिता जल रही है । सब गये होंगे और वह भी उन्होंने .....

जिज्ञासु : ....

श्रीमोटा : नहीं उनके भाई ।

जिज्ञासु : नंदुभाई के ।

श्रीमोटा : बंसीभाई । वह भी उन्होंने देखा था ।

जिज्ञासु : बंसीभाई के पत्नी का देहांत हो गया ।

श्रीमोटा : मर गये और चिता जल रही है, वह सब भी प्रत्यक्ष देखा था । उसने सब ..... रखा ही होगा न । लिखा है कि यह सब देखा था । तब उस समय वह एक ऐसे मौनरूम में एक चेतना का वातावरण है । हमारे वहाँ भी है वातावरण ऐसा । बहुत सालों से—बहुत समय से देखता हूँ कि एक यह भगवान का स्मरण होता होगा, वह बिलकुल उसकी तरंगें कहाँ से कहाँ हो और एक वातावरण.... हो जाय ।

अनेक व्यक्ति हमारे यहाँ आते हैं । मौनमंदिर में । किसी दिन पूरे जन्म में भी नाम नहीं लिया हो । परंतु ऐसे व्यक्ति बारह-बारह घंटे तक चौदह घंटे, सोलह घंटे ज्यादा से ज्यादा आया है । परंतु बारह घंटे या ग्यारह घंटे तो एवरेज कह सकते हैं । होता है । अनुभव नहीं होता है, उसका कारण कि continuity नहीं है । अखंडता नहीं है उसकी ।

यहाँ अनेक लोग बैठते हैं । मामा या कोई बैठे तो तो जो नहीं होता है, उसका कारण कि वैसा वातावरण जमा नहीं है । यहाँ अखंड हुआ करके तो उसकी एक तरंगें ओर एक वातावरण वहाँ रहा करता है । वह हमारे वहाँ आश्रम में भी अनेकों को होता है ऐसा । ऐसा हो सकता है । तब एक यहाँ अलग तरह से ही हमें सोचना पड़े । प्रत्येक ...... हम जो सोचे वह बात अलग । यहाँ एक बात अलग । यहाँ एक प्रकार का

चेतना का एक वातावरण .... गया है और वह एक समय पर उस तरह भाव की स्थिति में हों। भजन करते सो गये हों। भगवान का नाम लेते–लेते। उस तरह बहुत साधन कर सकते हैं। ध्यान यह वह ..... ये सब साधन भी करते, तब एक भाव की स्थिति जागृत हो जाय और आँख खुल जाती है। आँख खुल जाती है वह .... इतनी उसके साथ के हमारे उस समय के एक संस्कार। हमारे में तो पड़े होते हैं, सब के। कई सारे। वह संस्कार जाग गया हो तो वह संस्कार प्रत्यक्ष हो जाता है। आकार ले लेता है। उस तरह एक इसका संबंध अभी .... साथ में होने से इस प्रकार की संभावना हुई।

अब एक दूसरी दृष्टि ...... अब एक तीसरी दृष्टि ली कि यह तो पहले से जो घटना बनती है, वह तो पाँच–छ वर्ष बाद बनती है और पाँच–छ वर्ष पहले अनुभव होता है यह तो। तो उसका किस तरह ? उसका समन्वय किस तरह करना हमें ? तो प्रत्यक्ष हमें आज हुआ और आज का आज हमें भान हुआ तो तो फिर भी समझ सकते हैं। किन्तु पाँच–छ वर्ष पहले से यह तो घटी हुई घटना है। तो उसका समन्वय किस तरह करना ? उसको समझाता हूँ।

कि हमें हमारे जो हैं। हम जी रहे हैं काल और स्थल की दुनिया में। Time and space। किन्तु Time and Space वह relative है। वह तो आज साबित हुआ है। Relative है वह तो हमने ... साबित किया है और बड़े सब सायन्टीस्टों ने फिर इससे हम मानते हैं। हमें कुछ उसके ..... अनुभव नहीं

है। किन्तु यह भी स्वीकार कर लेते हैं कि नहीं यह बात सच्ची है कि relative। तब वहाँ कोई आगे या पीछे कुछ वह है नहीं Time में। तब ऐसा कुछ आंतरिक उस समय पर जब कि छ वर्ष पूर्व उस महिला को आदेश दिया उसने .... फिर भी हरज नहीं। तब उस समय उसे क्या हुआ होगा ? सामान्य रीति से तो व्यक्ति को होता नहीं हैं। कि कुछ उसके दिल में किसी प्रकार का .... हुआ होना चाहिए। कुछ। जैसे यह ..... तो अमुक प्रकार के अमुक अमुक .... हो तो ..... योग्यतावाला उसे। यदि यह पूरा सभी को और स्वयं ...... हो तो उस तरह की पोजीशन उस तरह का फिर उसे जमाना भी है। सब किया हो तो ही आये।

तब इस महिला को छ वर्ष पहले से ही यह जो दिखा था, तब हमारे ..... तब मानो कि उसके being में कुछ change हुआ होगा। सामान्य यदि हो सपने में भी ऐसा नहीं आएगा। तो कुछ change हुआ होना चाहिए उसके being का। सो रही होगी, परंतु सोते हैं, तब शरीर सोता है। मन, बुद्धि, चित्त, प्राण, अहम् ये सब कोई सोये हुए नहीं होते। वे तो जागते ही होते हैं। यह तो हम बुद्धि से भी कबूल करेंगे। नहीं तो हम देखेंगे किस तरह दृश्य ? उस समय सब आदमियों से मिलते हैं, देखते हैं, करते हैं ...... परंतु अंदर से सब हमारा मन, बुद्धि, चित्त, प्राण और अहम् इत्यादि सभी जागते होते हैं। तब वह जो change होता है, तो change क्यों हुआ उस पर सब हम आते हैं।

किसी प्रकार का change हुआ, तब यह जो एक उसे Super Natural Power तो न कहें, परंतु कुछ हमारे से सविशेषरूप से ऐसी कोई शक्ति के कारण जो यह छ साल पहले का जो देख सकते हैं। तब कुछ change उसे हुआ होना चाहिए। तब वह जो change होता है। हुआ हैं उसमें, तब किस कारण से हुआ, उसे यदि हम सोचें तो सपना तो है ही। यह तो आपने बात कही उस पर से कहता हूँ। तो वह सपना तो है ही। तो सपने का संबंध हमारे ....पहले के साथ तो है ही न ! तो उसे घर का, उसके स्वयं के घर का जो ममत्व है। घर के साथ का राग है, मोह है, वह उसके चित्त में पड़ा हुआ है।

अब उसे जब किसी कारण से बैर हुआ हो, कुछ भी हुआ हो। मानो उसे किसी कारण से अब उसे सख़्त मानसकि चोट लगे हमारे मोह की, राग की। अंदर। किसी कारण से। तब दिन के समय में तो पूरा सब हमारा मन, बुद्धि, चित्त, प्राण, अहम् सब अनेक प्रकार की प्रवृत्ति में व्यस्त ही होता है और हमें स्वयं हमारे स्वंय के बारे में सोचने का अवकाश होता ही नहीं है। मनुष्य को यदि सोचे ...... सही तरीके से देखो तो अच्छा statement (विधान) सच लगेगा। क्योंकि हम इतने सारे हमारे ..... हमारे ..... हमारे मन, बुद्धि, चित्त, प्राण और अहम् पूरी प्रवृत्ति में व्यस्त रहते हैं कि हमारे स्वयं में कैसे-कैसे स्तर हैं, कैसे विकार हैं ... राग है, कितना मोह है, यह सोचने का मनुष्य को अवकाश ही रहता नहीं। बिलकुल। और वहाँ अवकाश होता ही नहीं है।

तब दिन के समय में तो आ सके ऐसा नहीं है। क्योंकि उसका मनादिकरण तो प्रवृत्ति में व्यस्त रहता है। उसे उसके राग .... की मानसिक चोट चाहे लगी होगी। परंतु इस प्रवृत्ति में व्यस्त होने से वह वहाँ manifest होता नहीं है। रात्रि में वह होता है। रात्रि में कोई प्रवृत्ति में व्यस्त नहीं होते हैं। इससे जो पड़े हुए संस्कार हैं, उसे जो मानसिक चोट लगती है और उसके साथ। परंतु मानसिक चोट तो कइयों को लगती हो, उसे अकेले को नहीं। अनेकों को लगती है। अनेकों को ऐसा दर्शन होता नहीं। यह फिर एक फर्क है। तब एक मानसिक चोट है। एक कारण है। कुछ ना कुछ। हम। उसने भले लिखा न हो।

हमारा चित्त। हमारी चित्तवृति हमारा एक तंत्र वह चित्त। उस तंत्र के उदय अनुसार रात्रि में हमें जो सपने आते हैं। उसमें भी किसी न किसी प्रकार के दिन के .... दिन के समय में हमारी प्रवृत्ति में किसी न किसी प्रकार के मानसिक रूप से, इस तरह से, उस तरह आघात-प्रत्याघात हुए हो—होने के कारण ही रात को हमें ये सपने आएँगे। ये सपने अलग-अलग आते हैं। संकर हो जाते हैं। खीचड़ी उसमें हो जाती है। अनेक ये सब बाबत इकट्ठी हो जाती हैं। उसका भी सायन्स है एक। उसका आंकलन किया जा सकता है।

तब उस तरीके से उसे कोई मानसिक चोट लगी हुई है। परंतु उसे यह दिखता है इस तरह का। उसमें उस मानसिक चोट में वह .... वह जानती नहीं है कि भविष्य में मैं जाऊँगी। यह

देखूँगी और ऐसा है वह भी नहीं है । उसने सिर्फ एक ऐसा सपना देखा । वह सपना बाद में उसे मालूम पड़ता है कि यह reality थी । बाद में यानी कि छ साल बाद उसे मालूम पड़ता है तब वह । वह जो reality उस समय एक स्वप्न ही थी । परंतु सही रूप में थी reality । तब उसे मूल कारण सपने का । कारण कि आघात-प्रत्याघात दिन की प्रवृत्ति में होते हैं । वह संक्षुब्ध-क्षुब्ध-क्षुब्धता आ जाती है, तब एक क्षुब्धता.... आघात-प्रत्याघात हुए तो उसका संबंध है, हमारे मन के साथ, दिमाग के साथ, हमारे ज्ञानतंतुओं के साथ । जैसे हमें क्लेश हो, शोक हो, हर्ष हो, आघात लगे । यह होता है उन सभी को संबंध है हमारे ज्ञानतंतु के साथ ।

यह तो मैं सब बिलकुल बरतकर कहता हूँ । किसी प्रकार का आपको तर्क—मेरी falacy हो तो मुझे कहना । आपके मन में । ऐसा नहीं कि **मोटा** को कैसे कह सकते हैं ? तब यह .... इस .... इस ज्ञानतंतु के साथ संबंध होता है । हरएक को । तब यह ज्ञानतंतु का संबंध है, उसे दिखाता है । अब वह ज्ञानतंतु का संबंध यह जो हमें यह जो हमारे दिमाग में । हमारे में ये सब ज्ञानतंतु की .... ऐसे ज्ञानतंतु के भी अलग-अलग चैतन्य और सब .... ये सब गठाने होती है वहाँ । जैसे थाईरोईड ग्लेन्ड... ग्लेन्ड कहते है उसे । ग्रंथि । गठाने नहीं कही जाएगी । ग्रंथि । इस प्रकार की ग्रंथि है । वे ग्रंथि यह सभी जो ज्ञानतंतुओं की ही ग्रंथियाँ हैं .... और वहाँ यह पिच्युटरी ग्लेन्ड रही हुई है । और पिच्युटरी ग्लेन्ड के साथ जो ज्ञानतंतु जुड़े हुए हैं, परंतु

जो कोई उसके इस तरह ज्ञानतंतु जुड़े हुए है जो टाईम और स्थल के साथ जुड़े हुए हैं। तो कि उसकी साबिती क्या ? ऐसा कोई कहे तो हम मना नहीं कर सकते। क्योंकि disection करने से आ सकते नहीं ।

जिज्ञासु : वे disection करने से नहीं दिखते वे ।

श्रीमोटा : क्या ..... ?

जिज्ञासु : Abstract being है ।

श्रीमोटा : Abstract है। तत्त्व है। तत्त्व यह। तब तो पिच्युटरी ग्लेन्ड है जो उसके साथ इस प्रकार के ज्ञानतंतु । क्योंकि मुझे आपकी तरह ऐसे साधना के काल में अनेक सपने आते थे, इतना ही नहीं, परंतु actually मुझे साधना का .... तब पहले मैं ऐसा समझता कि साला, सपना यानी मिथ्या ऐसा हो गया । तो मैं कुछ उस पर ध्यान देता ही नहीं था । तब लगातार पाँच-सात दिन तक एक का एक संपूर्ण detail के साथ आया करता था। साला, एक का एक क्यों आया करता है ? ऐसा विचार होता है न ?

हमारा शरीर है, वह शरीर स्थूल भी है, सूक्ष्म भी है और कारण भी है । तीन प्रकार के शरीर हमारे में हैं । उस तरह हमारे में जो ज्ञानतंतु हैं । वे एक हैं वे स्थूल । वे शरीर की अंदर, रगों की अंदर सब तरह से, उससे छोटी से छोटी रगों में बाल जितनी हैं। बाल से भी छोटी से छोटी रग हो ये ज्ञानतंतु हैं। और उसे देख सकते हैं। उससे भी यह ज्ञानतंतु भी सूक्ष्म हो। और कारण है वह तो abstract है। शरीर भी कारण शरीर

तो बिलकुल abstract और सूक्ष्म शरीर है। उसका आकार है किन्तु ...... कारण उसका प्रमाण भी हमारे लोगों ने दिया है। अंग्रेज सरकार में हाथी हो या मानव हो या बड़ा हो, परंतु उससे विशेष नहीं। ऐसा सूक्ष्म शरीर भी हमारे में रहा हुआ है। किन्तु ये सब एकदूसरे के साथ जुड़े हुए हैं। एकदूसरे के साथ इतने सारे जुड़े हुए हैं कि एकदूसरे के साथ का संबंध कायम है।

उसी तरह ये जो ज्ञानतंतुओं, ज्ञानतंतुओं के द्वारा ही शरीर को यह सब समझ हमें है। जो कुछ बाबत की, व्यवहार की बाबत की कहो, संबंध बाबत की कहो। हमारे काम, क्रोध, मोह, लोभ, मद, मत्सर, अहंकार उस बाबत की भी। सब तरह की समझ इन ज्ञानतंतु के कारण ही है। चाहे उसे किसी को पूछकर देखो। तो वह बात बिलकुल सच है। तो इस तरह ये जो ज्ञानतंतु जो हैं। वे जो स्थूल हैं। बाल से भी छोटे-छोटे परंतु सूक्ष्म सही। उसके अलावा भी ये सब ज्ञानतंतु जुड़े हुए हैं हमारे दिमाग में। और वह पिच्युटरी ग्लेन्ड के आगे-पीछे उन सब की रचना है सब और यह जो-जो यह जो स्थूल रीति से है, और सब सूक्ष्म ..... वे हैं, वे अनेक प्रकार के हैं। अब ये जो Time and Space के भी ज्ञानतंतु। उसकी भी समझ हमें ज्ञानतंतु के कारण ही पड़ती हैं। तब वे भी पिच्युटरी ग्लेन्ड के साथ जुड़े हुए हैं।

तो अब एक सवाल ऐसा है कि काल है। वह काल आप जो सपने में देखो तो आप प्रत्यक्ष उस काल का अनुभव करते हो तो वह बात हुई हो कई वर्ष पहले। सपने में आप देखो

तो सामान्य रूप से प्रत्येक मनुष्य को .... प्रत्येक मनुष्य को हो चुकी बात .... कि दो-चार दिन की हुई बात या उस दिन की हुई बात ज्यादा से ज्यादा तो वह भी एक .... परंतु ज्यादातर मनुष्य को यह सपना होता है वह यह .... है अब वे हो चुकी सभी हककीत हो ।

जिज्ञासु : इस लाईफ की ?

श्रीमोटा : इस लाईफ की भी हो । उस लाईफ की भी हो । वे जुड़ी हुई होती हैं । इस लाईफ की भी । परंतु वह opening हुई होती है तब .... और opening हुई हो । हो तो उस लाईफ की कोई भी एक आती है । परंतु हमें opening न हुई हो तो हमें कोई भी एक कुछ हकीकतें पूर्व के जीवन की प्रत्यक्ष होती है । और at least संस्कार रूप से तो होती हैं । तब उनका देखो तो उनके टाईम-स्थल से संभाली हुई होती नहीं है ।

बहुत साल पहले की घटना हो चुकी हो, वे संस्कार पड़ चुके हो, वे आज सपने में जागृत होते हैं । तब सपने में Time and Space में यदि आप देखो तो सब प्रकार से आपको मालूम हो जाय वैसी हकीकत है । परंतु उसमें होता है क्या कि हो चुके हो, भूतकाल की बात आती है । भविष्यकाल की बात आती नहीं । सामान्य रूप से । सामान्य रूप से भविष्यकाल की बात नहीं आती । बहुत कम .... शायद ही आती है । परंतु वह हम वह .... वह उसकी हमें समझ संपूर्णरूप से हो । उसका

मूल किस तरह समन्वय किस तरह कर सकते हैं, वह हम देखें।

तब इससे हम देखते हैं कि सपने के समय में भूतकाल में बन चुके हो। आज हम प्रत्यक्ष देखते हैं। इससे काल–काल की पेटी में है वह जैसे इस तरह की संभावना है और हम प्रतिदिन के हमारे experience से अनुभव से जानते हैं कि यह तो बहुत काल पहले ऐसा हुआ था। परंतु आज हमें दिखा। तब पहले की .... भूतकाल की हो चुकी जैसे आज दिखती है तो भविष्य का भी हम देख सकते हैं। यह बन सके वैसी एक possibility है, ऐसी मान्यता पर अब हम आ सकते हैं। यह possibility है ऐसा मानना पड़ेगा। क्योंकि जो भूतकाल की संभावना। भूतकाल में हो चुकी है। वे संस्कार पड़े हुए हैं। उसका recording हो चुका है। वह जो हुआ परंतु उसमें से मूल बात हम लाना क्या चाहते हैं कि काल .... काल। बहुत वर्षों पहले हो चुका वह आज हम देख सकते हैं। उसका recording हो चुका है वह बात पक्की। उसका recording हो चुका था। तब recording हो चुका होते हुए भी बहुत सालों पहले की बात आज हम देखते हैं। तब वह काल जैसे सपने को उड़ाता है। पहले भूतकाल को आज प्रत्यक्ष करने की शक्ति है तो वह भविष्यकाल के लिए भी वह संभावना हो सके उतना हम possible है उतना हम मानें।

फिर अब आगे विचार ज्यादा करते हैं। परंतु इतना मानने में हम कुछ अत्युक्ति करते हैं या कल्पना दौड़ाते हैं ऐसा कुछ

नहीं है। तो हमारे अंदर यह जो पिच्युटरी ग्लेन्ड है, उसकी शक्ति भारी। हालांकि आध्यात्मिक विद्या में भी ऐसी शक्ति है। परंतु वह खर्च नहीं होती।

एक दूसरी एक ऐसी विद्या है, जो संजय को प्राप्त हुई थी। संजय को प्राप्त हुई थी वह ऐसी एक विद्या है, वह धृतराष्ट्र के पास बैठे-बैठे वहाँ देख सकता था। युद्ध देख सकता था और कहा करता था। धृतराष्ट्र को। वह आज टेलिविझन की भी आज वही शक्ति है। और यह नया हो गया है सब। टेलिविझन। उसके भी वेव्ज भेजता है। तब यह जो विद्या है, वह विद्या जैसे-जैसे आगे बढ़ती है आध्यात्मिक, आत्मा के प्रदेश में, तब आत्मा के प्रदेश में Time and Space नहीं है। बिलकुल नहीं है।

जिज्ञासु : .....

श्रीमोटा : .... हो सकता है।

जिज्ञासु : .... लेकिन हो जाते होंगे।

श्रीमोटा : हाँ ...... परंतु हो जाते हैं। परंतु यह तो possibility की बात की। परंतु हम actually reality पर आये।

जिज्ञासु : ....

श्रीमोटा : यह reality पर इसलिए होता है उसे कि यह अपने स्थल पर ममत्व है एक प्रकार का। उसे कोई न कोई कारण से ... कहे, उस कारण से कि यह सब तूटफूट जाएगा। कोई भी कारण से। कोई कारण उसने दिया भी नहीं

है और हम जानते भी नहीं है । परंतु कुछ उसे मानसिक चोट पहुँची होगी । और इतना सारा सख़्त आघात जब हो जाता है । किसी समय तब उस आघात के कारण मनुष्य .... जैसे .... जाता है । कई बार जब बहुत आघात होता है, मनुष्य मूढ़ हो जाता है । मूढ़ । जड़ जैसा हो जाता है ।

उस उसकी वर्तमान स्थिति से बिलकुल अलग प्रकार की स्थिति हो जाती है .... हो चुके हो ऐसे हम मनुष्यों देखते हैं । तो उसी तरह ऐसा जब आघात लगता है, तब अंदर का कोई करण तब उसे खुला हो जाता है । उसे पिच्युटरी ग्लेन्ड कहो, कुछ भी कहो, परंतु उसे किसी ऐसे उस आघात के कारण से । हमारा.... हमारे शरीर के अनेक केन्द्र हैं । Knowledge का भी केन्द्र है । ज्ञान का भी अंदर दिमाग में केन्द्र है । उस आघात के कारण कुछ खुलता है और खुले .... वह खुलता है जब, तब Time and Space वहाँ पर होते नहीं हैं ।

ऐसे पुरुषों के अनेक अनुभव भी है । तब Time and Space रहते नहीं होने से पीछे की घटना का जिस पर हमारा ममत्व है, जिसके कारण आघात लगा है, वह बीच में उसे दिखता है । प्रत्यक्ष । तब वह प्रत्यक्ष इसके कारण उसे उस समय होता है । मूल में तो उसे आघात लगा होना चाहिए । यह मेरा अनुमान है । उसने कहा होता तो तो विशेष विश्वासपूर्वक कह सकता । वह अचानक कुछ कोई विचार अंदर उसे उस प्रकार का विचार हुए बिना । पानी को तालाब का पानी एकदम स्थिर हो । पत्थर डालने पर कुँडरें होते हैं । उसके सिवा तो हो सकते

नहीं । इससे किसी भी प्रकार की ऐसी उसके मानस में कोई हलचल हुई होनी चाहिए । उसे जो सपना उसे जो आया अनेक सालों बाद जो दिखनेवाला स्वयं है उसकी बाबत को जो सपना आया । उसके बारे में उसे कोई आघात या कोई हलचल हुई होनी चाहिए उग्र प्रकार की । और उसे ऐसे आघात के कारण अंदर का कोई करण कोई ऐसा करण खुल जाय अथवा तो वहाँ .... कहें और उसके कारण Time and Space .... जाय ।

यह स्थिति । उस स्थिति के अंदर Time and Space है नहीं, होते हुए भी । Time and Space में होते हुए भी, वे होते हुए भी उसकी मर्यादा नहीं है । उसकी काल और स्थल की .... उसे अनुभव से यह experience होना ही चाहिए । अनुभवी पुरुषों को । उस स्थान पर नहीं हो, फिर भी कोई निमित्त प्रकट हो तो वह सूरत में प्रत्यक्ष हो सकता है वह । और नड़ियाद में प्रत्यक्ष या अमेरिका में हो सकता है । या मंगल में हो सकता है । शुक्र में या पूरे ब्रह्मांड में प्रत्यक्ष हो सकता है वह । वहाँ जो-जो परिस्थिति हो, जिस तत्त्व अनुसार की उस अनुसार होगा । पृथ्वी में तो पाँच तत्त्व अनुसार हो सकता है । प्रत्येक स्थान पर अलग-अलग तत्त्व predominant होते हैं । हमारें यहाँ जल और पृथ्वी ये दो predominant । हमारी पृथ्वी पर । दूसरे ठिकाने अलग-अलग तत्त्व predominant । उदाहरण के लिए सूर्य है, वहाँ तेज predominant । तब दूसरी जगह अलग-अलग तत्त्व predominant हो, उस तरह जिस

जगह जो तत्त्व predominant हो, उस तत्त्व के अनुपात में वहाँ वह हाजिर हो सके ।

तब Time and Space उन लोगों को नहीं है । Time and Space में रहने पर भी नहीं है । यह अनुभव हुए बिना संपूर्ण ज्ञान उसे अनुभव हुआ है नहीं कह सकते ।

जिज्ञासु : मानो कि किसी को कोई एक व्यक्ति उस संसारी व्यक्ति को जो आध्यात्मिक ज्ञान में .... गया । उसे यह पिच्युटरी ग्लेन्ड के कारण कहो या किसी भी आध्यात्मिक कारण से भी उसे एक flash कुछ दिखा । flash हुआ । तो उसमें से एक यह भी possibility साबित हो सकती है न कि अमुक व्यक्ति का उस लाइन में आगे जाने का कारण यह कि flash के कारण से उस flash की उन लोगों को continuity हुई है ।

श्रीमोटा : बराबर है । बेशक । अब ..... परंतु सच तो मनुष्य की तरह व्यापारी लाभ देखे या न देखे ? कि साला, पाँच पैसे मिले । तो जिस तरह मनुष्य को extraordinary एक सर्वसामान्य से किसी अनोखे प्रकार का ऐसा जब उसे अनुभव होता है, तब उसके बारे में मनुष्य को ज्यादा सोचना चाहिए कि इस कारण से मुझे हुआ तो मेरी कोई संभावना सामान्य से कोई विशेष होनी चाहिए । यदि मनुष्य गहरा सोचे तो, क्यों सब को क्यों नहीं होता ऐसा ? नंदुभाई को तो मौन में हुआ कि मौन के वातावरण के कारण एक मानो । आपको कोई मौन का वातावरण था नहीं । उस महिला को वातावरण था नहीं ।

तब वह हुआ उसमें एक प्रकार की विशिष्टता क्या है ? किस कारण से ऐसा हुआ ? उसके मूल में उतरें हम यदि तो यह समझ में आता है कि एक ऐसे प्रकार की possibility हम में है कि इस तत्त्व को हम विकसित कर सकते हैं। जो बीजरूप से बीज है। तिल है, उसके सौवें भाग का कह सकते हैं, उससे भी कम कहें तो भी हमें बाधा नहीं है। तब था वह हमें साबित हुआ है।

तब यह साबित हुआ है यह बताता है कि किसी काल में divine सत है हमारे में। हाजिर रहा हुआ है। इस प्रकार के संस्कार रहे हुए हैं। इस प्रकार का ...... रहा हुआ है। तब यह possibility है, उसे क्यों न विकसित करें उस तरफ ध्यान नहीं जाता हमारा। उसका महत्त्व जागा नहीं है। बहुत ही एकदम। कुछ नहीं। एक सपने की तरह निकल गया। परंतु उसका ordinary नहीं है। यह ordinary नहीं है। यह हमारी बुद्धि कबूल करती है। नहीं कबूल करती ऐसा नहीं है। परंतु फिर भी उसका विशिष्ट तत्त्व, उसका महत्त्व हमारे मन में जागा नहीं है। इससे खत्म। फिर समाप्त।

कुछ आया आपको जगाने के लिए कि देखो भाई ! है यह शक्ति। परंतु हम जागते नहीं है। इससे निकल जाता है। उस एक आदमी को। अंधा आदमी एक यह जिस दरवाजे में प्रवेश करेगा उसे राजगद्दी मिलेगी। तो घूमते घूमते आया। तो जहाँ दरवाजा आया वहीं पर खुजली आई उसे। दरवाजा चला गया।

तब किसी पल ऐसी divinity जागेगी । हमारे में भगवान की कृपा से कोई पल ऐसी प्रत्येक मनुष्य को जागती होती है । किसी के कोई भी बाकी नहीं । मनुष्यमात्र को कोई एक पल ऐसी जागती होती है । उस पल का फिर मनुष्य विचार करता ही नहीं । उसका महत्त्व उसमें जागता नहीं है । कुछ भी नहीं वह मनुष्य जागे, मनुष्य सोचे तो उसे लगे बिना रहेगा नहीं ।

मनुष्य सोचे । मनुष्य ऐसा सोचे कि यह मेरी बुद्धि से करता हूँ, मेरी चतुराई से करता हूँ तो बुद्धि तो चतुराई अनेक में होती है । वह तो खाली विचार .... होता है । अहम् उसे होता है । बुद्धि से सब होता रहता है ऐसा भी नहीं होता । तब बुद्धि की अपेक्षा, बुद्धि जिसके हुक्म में है........... वाला कोई ऐसा expression व्यक्तव्य हमारे जीवन में प्रकट हुआ, कि जो ऐसा out of ordinary कि सामान्यरूप से कोई एक अलग ही अनोखे प्रकार का है, ऐसा बुद्धि हमारी स्वीकार करती है तो भी उसका महत्त्व हमें जागा नहीं है । उसके बारे में कोई विचार भी नहीं किया ।

जिज्ञासु : वह भूमिका भी जिसे आई हो ।

श्रीमोटा : हाँ ....

जिज्ञासु : .... जागी हो ।

श्रीमोटा : हाँ ....

जिज्ञासु : फिर उस तरह भी आने की संभावना सही ?

श्रीमोटा : संभावना तो हो । परंतु उसके संबंध की

सभानता हमारी प्रकट हुई हो तो विशेष लाभ होगा । तो सभानता कैसे जागे ? वह तो आये साहब । आपको गरज जागे । गरज जागे, गरज जागे तो अपने आप जागे । आपके वहाँ ग्राहक आये । तो दुकान पर बैठे हो । इस दुकान पर बैठे हो आप । गद्दी पर । और पचास हजार का ग्राहक आया । तो उसका व्यवहार देखो तो कहीं भी थूंकता हो और जैसी-तैसी गंदी गालियाँ बोलता हो और उसे attend करो एक तो ऊबे हुए हो .... अंदर । अभी मेरा सौदा बिगड़ जाएगा । ऐसी सभानता होने से । उसका ऐसा-वैसा व्यवहार सहन कर लेते हो । वह सौदा बिगड़ जाएगा ऐसी आपको सभानता है और सौदे की गरज है । तब ऐसी गरज जिसे प्रकट हो और उस गरज की जिसे सभानता रहे तो काम हो सकता है ।

॥ हरि:ॐ ॥

''मैं सर्वत्र विद्यमान हूँ''

– मोटा

॥ हरि:ॐ ॥

श्रीमोटा-वाणी [४]

श्री रमणभाई अमीन द्वारा आयोजित वसंतपंचमी दीक्षादिन उत्सव प्रसंग पर श्रीमोटा की पावन ध्वनिमुद्रित वाणी

वडोदरा, ता. ३०-१-१९७२

● समाज को उन्नत करने की जरूरत ●

परमार्थ ऐसा करो कि जिससे समाज उन्नत हो । समाज उन्नत हो ऐसी प्रवृत्ति की आज जरूरत है ।

समाज ऐसे ही उन्नत नहीं होगा । मर्दानगीवाला, साहसिक, हिम्मतवाला, धैर्यवाला, किसी में जीवट के साथ कूद पड़े, उस उम्र में समाज नहीं होगा, वहाँ तक स्वराज्य आया हुआ यथायोग्य नहीं है । इससे धर्मादा ऐसा करो कि जिससे समाज उन्नत हो । ये हमने अस्पताल में दिये, यह मैंने मंदिर बँधवाया और धर्मशाला में दिये, वह बात अभी एक बीस साल, पचीस साल तक जाने दो । आपको जो पैसे देना हो, वे उस तरह दो कि जिससे समाज उन्नत हो, उसमें आप परमार्थ करो इतनी मेरी विनती है ।

(सन् १९७४ की एक पावन वाणी का अंश मोटा)

मई १९८३ ''हरिवाणी''

: अनुवाद :

भास्कर भट्ट

रजनीभाई बर्मावाला 'हरि:ॐ'

हरि:ॐ आश्रम प्रकाशन, सूत

॥ हरिःॐ ॥

• विषय-सूचि •

१. उत्सव मनाने का और भोजन में सादाई का कारण ८९
२. उत्सव में पधारने के लिए कायमी निमंत्रण ९१
३. समाज के परमार्थ के लिए भेंट-सौगात की बिक्री ९१
४. तिनके में से मेरु ९३
५. साधु-संन्यासी ऐश्वर्य का त्याग करें ९५
६. भगवान की भक्ति— स्मरण सभानतापूर्वक करो ९६
७. मिरगी के रोग में भी प्रभुकृपा ९८
८. समाज लक्ष्मी से उन्नत नहीं होगा ९९
९. मिरगी के रोग से हरिस्मरण १०१
१०. नामस्मरण की महिमा और प्रताप १०२
११. स्मरण में दिल लगाने से जीवन भंगार कैसा यह ? १०३
१२. देशसेवा में भी रागद्वेष हैं १०८
१३. **मोटा** का शरीर— असह्य रोगों का संग्रहस्थान फिर भी सक्रिय १०८
१४. भगवान को प्राप्त करने के अनंत मार्ग हैं ११०
१५. मौनमंदिरो की स्थापना— स्वमंथन और स्वदोषदर्शन १११
१६. अनुभवी मौलिक है, सर्जनशील है ११४
१७. पल पल पर .... पलटना .... रूपम् रमणीय पाया ११४
१८. हमारा देश संशोधन में आगे बढ़े ११५
१९. असह्य रोगों में भगवान की कृपा ११६
२०. त्याग और परमार्थ करो ११८
२१. **मोटा** की प्रभु-प्रार्थना त्यागी-परमार्थियों के लिए ११९

• • •

॥ हरिःॐ ॥

श्री रमणभाई अमीन द्वारा आयोजित वसंतपंचमी दीक्षादिन उत्सव प्रसंग पर श्रीमोटा की पावन ध्वनिमुद्रित वाणी

वडोदरा, ता. ३०-१-१९७२

• उत्सव मनाने का और भोजन में सादाई का कारण •

पहले एक मुद्दा मैं स्पष्ट कर लूँ कि ऐसे उत्सव मैं होने देता हूँ। बाकी मैं तो गरीब से गरीब आदमी हूँ। सच ही कहता हूँ। आज भी मेरा कुटुंब – शरीर का कुटुंब है, वह गरीब है और ऐसी गरीबी में पलकर बड़ा हुआ हूँ कि आपको कल्पना नहीं आएगी। ऐसी गरीबी के कारण मुझे—हमें ऐसे ठिकाने में रहना पड़ा कि जहाँ चमड़े की गंध आती, चमड़े पड़े हुए हों सब। ऐसे लोगों के बीच मुझे रहना था। आठ साल की उम्र थी, तब से तो मैं खेत में पौद-शालिधान-पौद बोने को ले जाता और वह गरीबी तो देखी है ये सच ही कहता हूँ वहाँ ...... मेरे काम देश में फैले हुए काम ऐसे लेता हूँ—और वह भगवान के हुक्म से मेरे दिल में ऐसा होता है। प्रवचन में उसके बारे में मैं कहूँगा आपको। तब मैं ऐसे उत्सव करूँ इससे मुझे भगवान की कृपा से यह जो रकम मिलती है, उसके लिए मैं होने देता हूँ।

भोजन में खीचड़ी और सब्जी बनाने का मैंने खास मैंने बहुत आग्रह किया । रमणभाई साहब को, धीरजबहन को कि प्रभु, मेरा कहा मानो, मेरा रस्ता तो लीक के अनुसार नहीं है । ये दाल-चावल और लड्डु खाने की बात छोड़ दो अब । इतने पैसे अच्छे काम में उपयोग हो और आप तो बहुत मुझे मदद करते हो । उस बारे में मेरा बोलना निरर्थक है । इसलिए मेरा कहा मानो आप । वे लोगों ने कहा, "**मोटा,** नहीं अच्छा ये खीचड़ी और शाक ।" मैंने कहा, "खीचड़ी और शाक ही चाहिए ।" मैं तो सभी को मेरे उत्सव में – भविष्य में जो भगवान की कृपा से हो उसमें – सभी को कहता हूँ कि आप यदि आओ तो भाव से आना । त्याग करने के हेतु से आना । परमार्थ करने के हेतु से आना । खाली-खाली घूमने के हेतु से या चलो घड़ी-दो घड़ी घूम आते हैं, उस हेतु से कोई मत आना । **नहीं आओगे तो चलेगा । एक भी व्यक्ति नहीं आएगा तो चलेगा मुझे ।** किन्तु आओ तो जीवन में ये त्याग, परमार्थ ..... और स्वार्थ तो रचापचा रहा ही है । स्वार्थ से ..... स्वार्थ तो आपको कोई नहीं कहेगा आपको करना पड़ेगा । वह तो सटा हुआ है गले से । खून-खून में फैल गया है । लेकिन यह परमार्थ और त्याग फैले ... यदि हमारे देश का उद्धार करना हो तो इससे ही होगा भाई । इससे मैंने बहुत आग्रह किया, कि भाई, आप खीचड़ी और शाक ही रखो । और मेरा कहा माना इससे मैं उनका आभार मानता हूँ ।

• उत्सव में पधारने के लिए कायमी निमंत्रण •

पत्रिका हम बहुत संभालकर तो रखते हैं भाई हरएक को भेजने की और उसकी सूची भी रखते हैं । गाँव के अनुसार सूची रखते हैं । जिनके दान मिलते हैं, उनको तुरंत ही जोड़ देते हैं । किन्तु किसी को भूलचूक से न मिली हो तो यह मेरा हमेशा का निमंत्रण है, कि पत्रिका न मिले तो भी उत्सव का पढ़कर आपको जानकर जरूर पधारना है ।

एक कोई भाई है, वे हर महीने मुझे ड़ाक के पेकेट में टिकट पर्याप्त होती है, उसमें हर महीने बीस-बीस रुपये भेजते हैं । हालांकि यह गैरकानूनी है । इस तरह रुपये नहीं भेजना चाहिए । परंतु भगवान की कृपा से हर महीने मिलते हैं सही मुझे । वे यहाँ यदि पधारे हो और नंदुभाई को मिलेंगे तो मैं बहुत राजी होऊँगा । भले उनका नाम बताये तो मैं जाहिर नहीं करूँगा । मैं मेरी बही में एक सज्जन उस रूप से लिखूँगा । हालांकि ये भी लिखते हैं तो सही ही हम । किन्तु वे भाई मिलेंगे तो राजी होऊँगा ।

• समाज के परमार्थ के लिए भेंट-सौगात की बिक्री •

ये सामने दीवार पर फोटो हैं । रामरातडीया भाई ने बहुत प्रेम से, बहुत भावना से और बहुत मेहनत ली है । विद्यानगर में विद्यार्थियों ने मेरा उत्सव मनाया, तब हमें पूछा-गाछा नहीं । हमारी सलाह भी नहीं ली थी । मैं तो जो उत्सव होता है, उसमें किसी दिन जिसे जैसा करना हो वैसा करने दूँ । मुझे तो खबर

नहीं हुई थी । आखिर तक । अंतिम दिन मालूम पड़ा । उस भाई ने बहुत उत्साह से ३,३०० रुपये उन्होंने दिये हैं ।

तब मैं तो ऐसा आदमी कि अबे ! सभी के पसीने के आये हुए पैसे इसमें तो नहीं खर्च डालूँगा, भाई ! मुझे कुछ ..... मैं तो ये फोटो मिले उसे बेचकर ये पैसे मैं जमा करवाता हूँ । अच्छे काम में खर्च हो जाय । हर साल १२००-१३०० । एक बार तो १८०० रुपये मिले थे । हमें तो ये शिक्षा मिली है । **गहनें भी माँगता हूँ । किन्तु गहनें पहन कर– कपड़े भी पहने हुए दे तो बेच ड़ालता हूँ । धोती भी ज्यादा हो तो बेच देता हूँ । यह सब भगवान के लिए है भाई, कि मैं तो जी कर ..... मेरे गुरुमहाराज कहते, ''मेरे बेटे, तुम सँभालना, यह डंडा देखा कि ?''** मेरे गुरुमहाराज डंडा रखते । किन्तु परम कृपा से डर तो नहीं था । मैं डरता तो नहीं । उसे बहुत प्रेम करता हूँ । किन्तु आज भी डंडे को सामने रखा है । जीताजागता कि सब जो भी है भगवान के लिए है । अतः जो कुछ मुझे मिलता है ..... साहब, मिठाइयाँ भी मिलती हैं– सब कुछ मिलता है, फल भी मुझे मिलते हैं । मैं तो गरीब आदमी साहब । बहुत गरीब । ये कुछ कहने के खातिर कहता नहीं । साहब .... भोगने का तो बहुत मन हो गरीब आदमी को । किसी दिन पूरी जिंदगी में भी देखा न हो । परंतु मेरे गुरुमहाराज, मेरा भगवान, हजार हाथवाला बैठा है सिर पर । वे कहते, ''**बेटा, भोगना नहीं । यह सब है, वह मेरे लिए है । इससे जो कुछ मिलता है, मिठाईयाँ भी जो-जो किसी**

ने मदद की हो, प्रेम रखते हो, उसे दे देते हैं । गहनें मिलते हैं । माँगता हूँ सही । आज भी बहनें प्रेम से दें । सब को मेरी प्रार्थना है कि आप दो, भाई ! परमार्थ सीखिये । स्वार्थ को सिखाने की जरूरत नहीं पड़ेगी । परमार्थ और त्याग सीखो । मेरे लिए यदि भाव रखते हो तो यह करने की आवश्यकता है ।

तो ये फोटो दीवार पर हैं, वे यदि कोई ले ले तो मुझे तीन सौ–तैंतीस सौ रुपये मिले तो मुझे काम में आ जाएँगे । मेरे लिए ये लोगों ने इकट्ठे किये हुए उसमें खर्च किया । बाकी, कोई मेरी रजा ले तो मैं रजा ना दूँ । अबे ! तुम ऐसे पैसे चंदा करके लाया ये भगवान के लिए मिले थे । मुझे फोटो क्या करना है ? अरे ! मैं तो जीताजागता तो यहाँ बैठा हूँ । कोई भाई देखना आप थोड़ा और तैंतीस सौ से ज्यादा यदि मिलेगा तो ये भाई ने जो मेहनत की है, जिस भावना से उसने किया है, उससे पहले तो मेरा साहित्य पढ़ गये और यह सब मेहनत की है । तो ३३०० उपरांत मिले तो ।

श्रीमोटा : (श्री नंदुभाई को) कहूँ क्या ?

श्री नंदुभाई : कहिए ।

श्रीमोटा : ये उसे ३३०० से ज्यादा मिले, वे सब उसे हमें दे देना हैं । वह आप थोड़ा देखना ।

• तिनके में से मेरु •

अब आज तो मुझे यह कहना है कि ननिहाल जाना और माँ परोसनेवाली ऐसा प्रभु ये आज का इस समय का उत्सव । ये

तो भगवान हमारे में कहावत है कि छप्पर फाड़ के पैसे देते, लक्ष्मी देते। ऐसा मेरे लिए एक बड़ा ..... जीवन में इतना बड़ा प्रसंग हो गया। तेरह लाख के काम लिए हैं। वे क्यों लिए हैं और किस लिए मैं सब करता हूँ वह बाद में कहूँगा। लेकिन सात लाख रुपये तो हो गये और सब भाइयों की ...... यहाँ हरि:ॐ आश्रम की जो एक कमिटी– समिति हुई है, उन लोगों का तो ऐसा पक्का विचार है कि १०॥ लाख रुपये **मोटा** को कर देना। कि बेचारे शरीर से **मोटा** भटक-भटक करते हैं, लेकिन भाई मैं भटकता बंध नहीं होऊँगा, किन्तु जहाँ मुझे रोट खाने का निमंत्रण मिलेगा। १०००-२००० दोगे तो कहीं भी जाऊँ मैं। मुझे शरीर .... शरीर तो मेरे भगवान ने मुझे दिया है और वह संभालेगा। परंतु मैं कोई शरीर मात्र नहीं हूँ। यह मेरे जीवन का जीताजागता प्रयोग है। जिसे समझना हो वह समझ ले।

तब, यह एक ऐसा-एक अनमोल प्रसंग मेरे जीवन में भगवान ने मुझे दिया कि बेटा, जीतेजागते देख ले। कि जो भगवान का होता है, तिनके का मेरु कर देते हैं। तिनके का मेरु– यह अत्युक्ति की बात नहीं। हकीकत है। बिलकुल सच्ची हकीकत। अभी जिसे समझ न पड़ती हो तो कालोल गाँव में जाना भाई, और जिस ठिकाने मैं रहता था, एक छोटी सी जगह– छोटा कमरा। आगे एक छोटी सी– अभी तो मेरा भाई सोमाभाई यहाँ आये हुए हैं– और आज दूसरा कहते मुझे आनंद होता है कि आज अभी मेरी माँ जीवित है। वह माँ

नहीं, मुझे जन्म देनेवाली नहीं, परंतु मुझे गोद जिसने लिया है। किसी को आश्चर्य होगा। परंतु बिलकुल सच्ची बात। उस मा का मेरे पर जो प्रेम है। उसने मुझे सब कुछ उसका दे दिया। उसके बेटे– सब मेरे भाई आज आये हैं। लखपति– लाखोंवाले हैं। उन्होंने मुझे इतना नहीं दिया है। देते हैं सही। मदद करते हैं। किन्तु मा ने तो जितना उसके पास था, वह सब कुछ दे दिया। और कहा फिर मेरे बड़े भाई के सामने, नंदु के सामने कि, ''मेरा देहांत हो जाय तब जितनी मेरी रकम हो, वह इस **मोटा** को दे देना।''

तब, ये सभी भाई आज प्रसंग में पधारे हैं। इससे मुझे भी आनंद हुआ। लेकिन ये सब से विनती है कि भाई, लाख आपके आपके पास– पैसे हैं आपके पास और सब जो धनी हैं, उनको कहता हूँ कि यह काल सब विपरीत आ रहा है। यह काल ऐसा विपरीत आ रहा है कि किसी के भी पैसे चाहे जितने होंगे।

• साधु-संन्यासी ऐश्वर्य का त्याग करें •

तो– भी ये पैसे तो हमारे अनुभवियों ने, ऋषिमुनियों ने कहा है, कि भाई, ये पैसे तो चल हैं। अचल नहीं। अचल तो अकेला भगवान है मेरा। तब ये पैसे तो आज है और कल नहीं। ये पैसे आपके स्वार्थ में, भोगने में, ऐश्वर्य में, विलासितता में मत भोगो। यह सब को मेरी बात कहनी है। इस अनुभव से आचरण कर– मेरे गुरुमहाराज का डंडा सामने के सामने

है, ''बेटा, तू आचरण किये बिना का मत कहना।'' आज मुझे लाखों रुपये मिलते हैं। **मैं चाहूँ तो मेरे रहने का मकान सब सुंदर बना दूँ। परंतु मैं आज कहता हूँ, मेरे भगवान के बुलाने से, कि मेरे गुरुमहाराज कहते हैं और कहता हूँ, कि हमारे पंथ के– हमारे– जो भगवान के मार्ग पर निकले हुए ऐसे साधु-संन्यासी हमारे देश में पड़े हैं। हरएक संगमरमर के– ऐसे संगमरमर के बनाते हैं, साला। मुझे ऐसा होता है कि पसीने से कमाकर बेटे बनाओ न! लोग भले उन्हें देते हैं, प्रेम से। उसकी ना नहीं। परंतु यह सब भोगते हैं ....** मेरे भगवान के पास अनंत गुना ऐश्वर्य है। अनंत गुना ऐश्वर्य है। परंतु वह ऐश्वर्य आप जरूर भोगो। जो व्यापारी लोग हैं। पुरुषार्थ करते हैं, उद्योग करते हैं और कमाते हैं, वे भले भोगे। परंतु उनको भी मेरी विनती है कि त्याग और परमार्थ दो आगे रखना। और फिर भोगना। किन्तु ये हमारे साधु–संन्यासियों का पहले काल आनेवाला है। हमारा– समाज जब जागेगा, ये गरीब जब जागेगा, हमारे देश में सच्ची क्रांति जागेगी, तब सभी का हिसाब होगा।

• भगवान की भक्ति–स्मरण सभानतापूर्वक करो •

तब मैं तो बात कह रहा था– तिनके की, कि ऐसी गरीबी में जीवन जीया हूँ, कि कोई गिनती नहीं थी। कोई हिसाब नहीं था, कुछ जिसकी पात्रता नहीं थी। ऐसी एक गरीबी में समाज के अंतिम हद के स्तर का यह जीव हूँ मैं। बिलकुल अतियुक्ति

बगैर कहता हूँ। ऐसे जीव को ये भगवान की भक्ति करता है .... भगवान की भक्ति एक ऐसा सामर्थ्य प्रेरित करती है। ये आप उदाहरण जीताजागता देख लो। हमारा समाज कब्र को पूजनेवाला है। मेरा भगवान— मेरे गुरुमहाराज मुझे कहते, **"अबे ! बेटा" उन्नीस सौ और बाईस की साल में मुझे कहा, एक मुझे मेरा नडियाद का आश्रम है उस पेड़ पर मुझे बिठाया .... उस पेड़ पर बिठाकर कहा— उपर हं...अ ... डाल पर, तब वहाँ पर एक कबीर आश्रम था। कि, "बेटा, जा पेड़ पर बैठ। रात को सोना नहीं और भगवान का नाम तू ले।" परंतु उसके पहले तो कहा, जा। तू एक दस-बारह बड़े पत्थर ले आ। इससे ले आया। मैं तो समझा कि ये पत्थर इसलिए मंगवाये हैं कि, "यदि तू सो गया तो यह पत्थर तुझे मारूँगा।"** मैं तो समझा कि व्यर्थ ही कहते हैं। वे कोई पत्थर मारे हमें कुछ ? मैं तो उपर बैठकर भगवान का भजन गाऊँ, बोलूँ, भगवान का नाम बोलूँ। परंतु साहब, सचमुच उसने ऐसा तो पत्थर मारा कि मेरी जाँघ में लगा। अभी भी जब मुझे भाव से मेरे गुरुमहाराज का स्मरण होता है, कोई निमित्त संजोग से, तब मेरी जाँघ में अभी मुझे यह उमड़ता है। लुढ़का, वह हाथ में ड़ाली आई तो रह गया। मैंने कहा, "**प्रभु, मैं तो भगवान .....** " "**साले !" कहे, "नींद में बोलता था तू तो जागता .... जो भी कुछ जागते करें। जागते-जागते करें उसका फल है।"** मैं .... तो तब समझता नहीं था। बहुत रो (raw) था। गँवार था बिलकुल।

इससे मुझे तब समझ न आयी । **आज समझ आई है कि जो कुछ करें ज्ञानपूर्वक और उसके हेतु की पूरी सभानता के साथ । वह योग्य है ।** तब मुझे खबर न थी । तो ऐसी गरीबी में से उसने ये भगवान की भक्ति करते-करते तार दिया ।

• मिरगी के रोग में भी प्रभुकृपा •

और भगवान सीधा नहीं भाई हँ...अ... मेरा बेटा वह भी शरारती है । हम ऐसे न पकड़े तो वह तो फिर बायाँ कान पकडाये वैसा भी है । कि मुझे ये हिस्टीरिया यानी मिरगी का— बहनों को हो उसे हिस्टीरिया कहते हैं और मरद को मिरगी का रोग होता है— वैसा मुझे रोग हुआ । साहब, तब मैं ये सेवा के काम में तो लग चुका था । इन्दुलाल याज्ञिक अभी जीवित हैं । तब हरिजन अंत्यज सेवा मंडल नाम— उनके मंत्री के रूप में मैं लगभग पौने दो साल तक मैंने काम किया और तब यह रोग हुआ । परंतु मुझे देश के प्रति बहुत देशभक्ति थी । तब भी इतना ही अनंत जोश था और कॉलेज-आर्टस कॉलेज वडोदरा में से ही छोड़कर विद्यापीठ में गया । गाँधीजी ने प्रवचन किया कि, ‘‘अबे ! मेरे साले, तुमने तो एक डिग्री का मोह छोड़कर दूसरी डिग्री का मोह तो कायम रखा तुमने । कुछ तुमने छोड़ा ? मेरी तो ऐसी मरजी कि तुम युवा लोग देश के काम में लग जाओ । और इस देश के गाँवो में जाकर काम करो । ऐसी मेरी तो मरजी थी, और तुमने तो यह मोह कायम रखा ।’’ तुरंत ही साहब निकल पड़ा । तुरंत ही—उसी पल में । एक मिनट

के लिए भी रुका नही मैं। और उस काम में लगा मैं। तब उस समय मैं जब इन्दुलाल के साथ अंत्यज सेवा मंडल का मंत्री था। हमारी गुजरात विद्यापीठ में से सब से पहले मैं उसमें जुड़ा। तब यह मिरगी का रोग हुआ। परंतु मैंने काम बंद नहीं किया। मुझे जाना हो बैंक में—पैसे लाने का, अनेक बार पैसे होते जेब में। रास्ते में साइकिल पर से गिर जाता। बहुत लगता परंतु आज मैं याद करता हूँ कि भगवान कितना सारा ....। मेरे पर कृपा की। एक बार मेरा पैसा गया नहीं। अनेक आदमी चारों ओर आ जाते लेकिन भगवान ने मुझे संभाला है। ये सब उपकार मैं याद करता हूँ, आज तब मैं गद्‌गद हो जाता हूँ। तब उस स्थिति में यह मिटे कैसे ? मैं ऊब गया था। मुझे ऐसा हुआ कि ये महिलाओं को रोग होता है। इतना मैं संयम नहीं रख सकता ! इसकी अपेक्षा तो बेहतर है मर जाना। आत्मसमर्पण कर देना। ऐसा सोचकर नर्मदा में कूद भी गया साहब, हाँ ! अभी मुझे याद है वह प्रसंग। मेरे पैर पानी को छुए थे, उस स्पर्श का भी मुझे आज अनुभव है। किन्तु नर्मदा में से एक बड़ा बगूला निकला कि उस बगूले ने मुझे फेंक दिया। किनारे से कितना सारा दूर ! जगत में कितनी ऐसी घटनाएँ बनती हैं कि हमारी बुद्धि नहीं समझ सकती।

• समाज लक्ष्मी से उन्नत नहीं होगा •

आज इतनी सारी वड़ोदरा के भाइयों ने, दूसरे अहमदाबाद के भाइयों ने, मुंबई के भाइयों ने जो मदद की है मुझे ! मुझ

गरीब को कल्पना नहीं कि मुझे सात लाख रुपये मिले। मेरी ऐसी कोई प्रतिष्ठा नहीं है। यह सब काम मैंने उठाया है। अकेले हाथ से करता हूँ। रचनात्मक काम में मैं तो पड़ा हुआ आदमी। मेरे साथ बहुत लोग हैं। ये महासभावाले बहुत हैं। किन्तु सब बखान करते हैं, कि "**मोटा,** काम तेरा अच्छा है।" मेरे गुरुमहाराज कहते, "बेटा, लीक पर चलना नहीं। लीक पर नहीं चलना।" "लीक पर चलनेवाले जीवन की जरा भी न कीमत है।"

हमारा मार्ग मस्ती का है, मस्त का है। खाखीबाबा का है, इससे हमारे काम भी मौलिक हैं। मुझे तो ऐसी समझ है, मेरे गुरुमहाराज के आशीर्वाद से, भगवान की कृपा से कि जो अनुभवी हो। यदि काल को न परख सका, काल का धर्म न परख सका, तो वह नहीं चल सकता और **हमारे देश में, हमारे समाज में, ये मर्दानगी, साहस, हिम्मत नहीं हो तो हमारा देश उन्नत किस तरह होगा ? देश उन्नत सिर्फ लक्ष्मी से कभी होनेवाला नहीं। साहब, लक्ष्मी साधन है, जरूरत है, परंतु लक्ष्मीवाले के पास गुण और भाव नहीं हो तो वह स्वच्छंदी हो जाएगा। उस लक्ष्मी का दुरुपयोग होनेवाला है और लक्ष्मी वह शक्ति है, माता है,** तब मेरे गुरुमहाराज ने मुझे जो कहा, तब इस तरह तिनके का मेरु बना देते हैं।

• मिरगी के रोग से हरिस्मरण •

इस तरह मुझे मिरगी तो हुई। फिर मुझे फेंक दिया था। उसमें से एक साधु महात्मा मिल गये, कि, "बेटा, तू हरिःॐ कर।" मैंने कहा, "भाई ऐसा ये भगवान का ऐसा हरिःॐ बोलने से कुछ मिटेगा कुछ रोग ?" कुछ जड़ी-बूटी जानते होते और मुझे कुछ दी होती तो राजी होता। कि चलो ये महात्मा घूमते हैं तो जंगल की जड़ी-बूटी जानते होंगे और मिट जाएगा मुझे। लेकिन उसमें मुझे विश्वास न हुआ। वहाँ से वडोदरा आया। मेरे दूसरे आध्यात्मिक मा थे। इसी राज्य के एक दीवान थे, मणिभाई जशभाई, पेटलाद के। उनका बेटा भी बहुत बड़ा अमलदार था। जूनागढ़ के नवाब के पास। उनके पत्नी थे, वे बहुत भक्तिवाले। ये मेरे .... गरीब विद्यार्थी के रूप में उनके वहाँ रहता और मेरे पर बहुत भाव रखते। सही रीति से देखूँ तो उस मा का मेरे पर ऋण है। यह जो भक्ति मेरे में फूटी वह उनके कारण। वह सयाजीराव महाराज साहब थे। वे सब वह .... पूरे हिन्दुस्तान में प्रसिद्ध ऐसे मौलाबक्ष को—मौलाबक्ष तब हिन्दुस्तान के प्रतिष्ठित गायक को यहाँ ले आये थे। उनके पास सीखे हुए और भक्ति के पद वे गाते। उसके मुझे संस्कार पड़े थे। तो उसके बाद भगवान का नाम ..... तो मैं वडोदरा आया। तो तीसरी मंझिल से, सीढ़ी उतरने जाता था, वहाँ मुझे मिरगी आई और लुढ़का और गिरा.... सीढ़ियाँ पर से फिसल फिसल कर—और नीचे ईंट की फर्श थी। वहाँ मेरा शरीर बहुत

छिलाया। तब वहाँ मुझे उसके दर्शन हुए। आँखे तो मेरी खुली थी। किन्तु तब मेरी बुद्धि ऐसी नहीं– नहीं समझ सकता। कि यह भ्रम है। ''अबे, कि लड़के इतना दुःखी होता है तो भगवान का नाम लेकर तो देख, प्रयोग तो करके देख, तुम बुद्धिमान हो तो .....! तू अभी rational नहीं।'' ''क्यों बापजी ?'' ''तो प्रयोग किये बिना तुम ऐसे ही कहते हो कि नहीं इससे नहीं होगा !'' तो, वे तो फिर अदृश्य हो गये। मैं थोड़ा स्वस्थ हुआ। इससे मेरी आध्यात्मिक मा को बात की, ''अबे, लड़के तू कुछ कर।'' **फिर मैंने बापुजी को पत्र लिखा। गांधीजी को, कि ऐसा मुझे रोग है, इस तरह इस मिरगी में मैं गिरा था, वहाँ मुझे दर्शन दिये और मुझे ऐसा कहा कि, ''तू ये भगवान का नाम ले .... '' तो उनका पत्र मेरे पर आया कि, ''भाई, सच्ची बात है। तू भगवान का नाम ले और तुझे मिट जाएगा।'' उनमें मुझे अनंत विश्वास। गांधीजी में। तब से लेने लगा।**

• नामस्मरण की महिमा और प्रताप •

इस स्मरण की महिमा का बहुत गाया मैंने साहब। पहले तो मैंने लिखा ही है। किन्तु अभी–अभी के जो काव्यों में चार पुस्तक प्रकट हुई हैं। दूसरी तीन प्रकट होनेवाली हैं। तैयार हो गई हैं दो तो। तीसरी अब लगभग तैयार होने आई है। उसमें मैंने स्मरण के बारे में बहुत गाया है। मस्ती से गाया है। स्मरण को दोहराया है, लहेराया है और अभी मैं कहता हूँ साहब कि

आज हमारे देश में भगवान के स्मरण की महिमा उसके नाम की महिमा गिनते हैं। बहुत पहले से। आज की बात नहीं है। अनेक संत–भक्त हमारे देश में भगवान का नाम लेकर भक्त हो गये हैं। उन सब के नाम लेने की मुझे कोई जरूरत नहीं है। परंतु कई कहते हैं कि ये स्मरण और ये नाम नहीं बराबर। उससे क्या हो जाएगा ? मन दृढ़ हो जाएगा। मैं कहता हूँ। मैं जीताजागता साक्षी बैठा हूँ। कि उसने मुझे मेरी बुद्धि को सतेज की है। वृत्ति के बारीक से बारीक, छोटे से छोटे, वृत्ति के टुकड़े को, उसने मुझे उसके मूल समझाये हैं। उसके बारे में सब मैंने बहुत लिखा है। तटस्थता यदि मेरे में आई हो.... यह मेरा जीवन भंगार जैसा है।

स्मरण में दिल लगाने से जीवन भंगार कैसा यह ?

यह मुझे भान आया है। उस भान ने मुझे जगाया है। अरे ! बिलकुल। दूसरा मैं कहता हूँ आपको बात। स्मरण की। स्मरण की हकीकत बनी हुई है कि ये स्मरण की। मुझे साँप काटा बोडाल आश्रम में। अभी हाल में ही बारडोली सत्याग्रह में हमारी जीत हुई थी भगवान की कृपा से और तब वल्लभभाई को सरदार का बिरुद मिला था। उसके बाद तुरंत ही बोरसद तालुके के बोडाल गाँव में हमारे आश्रम का उनके हाथ से उद्‌घाटन होनेवाला था। तब हम सब वहाँ गये थे और ठक्कर बापा भी थे। श्रीकांत सेठ थे। हमारे संघ के सभी मंत्री परीक्षितलाल, हरिवदन ठाकोर, हेमंतकुमार नीलकंठ सब थे और

पहली बार ये बोडाल गाँव में सरदार पहली बार ही सरदार बारडोली जीत करके आये थे । इतने सारे लोग इकट्ठे हुए थे । हमेशा मेरी आदत एकांत में सोने की । '२१ के दिसम्बर के बीच में से लगाकर '३८ की साल तक कोई दिन घर में सोया नहीं । कोई दिन । भयंकर से भयंकर जगहों में सोया हूँ । बाहर ही सोता ।

श्रेयार्थी या तो भगवान के मार्ग पर जानेवाले के लिए एकांत वह बहुत जरूरी वस्तु है । यह मेरा शरीर चला जाएगा, तब लोग कहेंगे कि **मोटा** वैसे तो एकांत प्रिय था सही । मेरे आश्रम भी दूर हैं, एकांत में । तब बहुत लोग थे, इससे मुझे मैं तो एकांत में आज सोनेवाला व्यक्ति, कि हमें इन सब में अनुकूलता नहीं । इससे मैं तो जाकर दूर .... दूर सोया । बहुत दूर जाकर खेत में । एक पेड़ के नीचे । **फिर ठक्करबापा निवृत्त हुए उनके काम में से । इतने सारे अपने काम में दक्ष, चौकस, यदि कोई मेरे में आई हो चौकसी व्यवस्था की । तो उनके कारण है ।** डायरी लिखे बिना तो किसी भी दिन सोते ही नहीं । इससे कहे कि अबे इन सब में हमें नहीं अनुकूल होगा सोना । इससे श्रीकांत सेठ अभी जीवित हैं । श्रीकांत सेठ तो भाई कि अबे वह भगत भी अकेला सो गया है । चलो हम वहाँ जाँय । तो एक तरफ ठक्करबापा और एक तरफ श्रीकांत सेठ और बीच में मैं । वहाँ मुझे साँप काटा । साँप काटा तब जहर का असर हुआ और मुझे वह बेहोश करने की कोशिश करे और शरीर में तो इतना दर्द हो हो कर सिर

में आकर ब्रह्मरंध्र की जगह इतना सारा जैसे करोडों मन के हथौड़ें ठोक रहे हो .... कण-कण होते जा रहे हो ऐसी मुझे सभानता भी थी मुझे..... भगवान की कृपा से लग गई ...... ध्येय हमने प्राप्त किया नहीं है और मरना नहीं है। दृढ़ निश्चय हो गया साहब । इससे तब से भगवान का स्मरण हरि:ॐ हरि:ॐ हरि:ॐ बोलने लगा। बापा तो जाग गये और सब कहे क्या है किन्तु बोलता ही नहीं। कुछ भी किसी को जवाब दिया नहीं था। छिहत्तर घंटे तक साहब। यह मैं ऐसे-वैसै वात नहीं करता हूँ। छिहत्तर घंटे तक नोन-स्टोप। लगातार एक-सा भगवान का स्मरण चलता ही रहा और उस समय ब्रह्मरंध्र में आकर हथौड़ें.... दस दस मन के मानो हथौड़े पड़ते और टुकडे टुकडे हो जाय और वेदना का तो त्रास कि हद नहीं। शरीर के रोम-रोम में जो वेदना प्रकट हुई थी और मुझे बेहोश होने की......उस समय बहुत जोर से भगवान का स्मरण .... और उस समय हेतु की सभानता के साथ कि मरना नहीं है ..... उस ध्येय का ध्येय हमने अभी प्राप्त किया नहीं है। मरना नहीं है उस प्रकार की उ.....तनी सारी alert और creative ऐसी सक्रिय सभानता के साथ। कोई कहेगा भगवान के स्मरण में ऐसी सभानता नहीं रहती वह अनुभव बेटे करो। करो प्रयोग और करके देखो। इतनी सारी सभानता के साथ। किसी को तर्क होगा, किसी को हुआ, इससे बात करता हूँ कि अबे, वह तो व्यर्थ छोटा जलसर्प ऐसा होगा। जहर बिना का। साहब, ऐसा नहीं। उसकी भी बात कर लूँ इससे किसी को शक न हो।

श्रीमोटा : ओ... रावजीकाका, लंबे पैर करके नहीं बैठते सभा में। (हरि:ॐ आश्रम, नडियाद के प्रमुखश्री को श्रीमोटा की टोक)

भाई, फिर तो ठक्करबापा ने सब को कहा भाई, तुम देख क्या रहे हो, इस लड़के को। किसी ने कहा कि आसोदर में साँप उतारते हैं, वहाँ ले जाओ। इससे खटिया में डालकर बापा ने भी मुझे उठाया था और ले गये वहाँ। वहाँ से दूर तो होगा लेकिन ..... ले गये। मैं तो कुछ भी नहीं दूसरा। भगवान के नाम का उच्चारण ही करता रहा। वहाँ ले गये। उसे दूसरी जो कोई उसे आती थी वह विद्या का उपयोग किया, लेकिन कुछ हुआ नहीं। दूसरे गाँव ले गये। किन्तु वहाँ भी कुछ नहीं हुआ। मैं तो कुछ जवाब ही न दूँ किसी को। ठक्करबापा ओ..... गुस्से हुए। परंतु मैं तो भगवान का नाम ही लिया करूँ। वहाँ से दूसरे गाँव कुछ न हुआ। फिर तो ठक्करबापा सब को हमारे सब कार्यकर्ताओं को गुस्सा होकर कहने लगे अरे ..... ये सब जाने दो। कुछ नहीं उसे दवाखाना में ले जाओ। बोरसद से मोटर ले आओ। इससे कोई लड़का दौड़ा साइकिल लेकर दूर बोरसद ..... तो मोटरवाले को किसी ने कहा, भाई, चलो तो फिर पैसे हैं ? तो कहा नहीं। इससे बेचारा वापस आया वह तो। वापस आया इससे अबे क्यों ? कहे कि साहब, ये तो पैसे बिना नहीं आता है। अबे, किसी को भान भी नहीं हुआ कि उसे पैसे दें। कैसे तुम तो आदमी ? इससे फिर पैसे लेकर भेजा। इस सब में दस-बारह घंटे हो गये थे। साहब।

मैं तो बोलता ही रहा । मोटर आकर मुझे आणंद में ये रायण का दवाखाना है । वहाँ डॉक्टर कूक थे । उसे रायण का दवाखाना कहते हैं न रावजीकाका ?

रावजीकाका : हाँ, जी ।

आणंदवाला, उस रायण के दवाखाने में ले गये । ठक्करबापा के साथ सब बात की उसने डाक्तर को । ऐसा ऐसा है भाई, ठक्करबापा ने कहा । समय बीत गया इससे अब उन्होंने स्टमक वोश किया । Intestine– आंतो को धोया और उस पानी का pathological analysis यानी कि ये Allopathy पद्धति से जो उसका पृथक्करण किया और चार घंटे तक फिर मुझे उन लोगों ने आकर ठक्करबापा को सब को यह लड़का जिंदा है किस तरह ? लेकिन ये मिशनवाले के डॉक्टर पादरी लोग होते हैं । वे हमारे सभी डॉक्टर से भगवान में विश्वासवाले ज्यादा । कि यह लड़का भगवान के नाम के कारण जिंदा है । कि अब इसमें कोई उपाय दूसरा हो सके ऐसा नहीं है । इससे मुझे तो अभी की जो हाईस्कूल है दादाभाई नवरोजी वहाँ ठक्करबापा ले गये । वहाँ छिहत्तर घंटे तक साहब नामस्मरण चला । **मैं कहता हूँ कि ऐसा घोर संग्राम ऐसा युद्ध वह भगवान के स्मरण का प्रताप है ।**

वह है प्रताप पद की रजधूलिका का,
ढिंढोरा पीटकर जगत को कहूँ ध्यान लेना ।

वह.... वह ..... यह अन्य किसी से नहीं होगा । चाहे जितनी भाँग पीओ, गाँजा पीओ, L.S.D. लो । किन्तु यह एक

घोर संग्राम वह नहीं कर सकेगा साहब– तब बाद में दूसरे साधन तो मुझे इसमें से सूझे थे। भगवान के स्मरण में से और वह भगवान की कृपा से हुए हैं।

• देशसेवा में भी रागद्वेष हैं •

लेकिन मुझे ऐसा लगा कि मेरे गुरुमहाराज ने कहा अब तू यह सेवा-बेवा छोड़ दे। परंतु देश की भक्ति का एक जुनून था। भगवान की कृपा से वह साला, छूटे कैसे ? सब छूटे परंतु यह जुनून नहीं छूटता। किन्तु ये बीस साल सेवा करने के बाद बात आपको कहता हूँ। कि, अबे, देख तू, यह तो सब रागद्वेष हैं। अरे हो ? मैंने कहा। ये सब कितने पूरा जीवन समर्पण कर दिया है और सब काम करते हैं न ! किन्तु जैसे भगवान ने बहुत अनंत कृपा कर के अर्जुन को विश्व के दर्शन करवाये। विश्वस्वरूप के दर्शन करवाये। वैसा मेरे गुरुमहाराज ने कृपा कर के मुझे दर्शन करवाये। रागद्वेष के। और मैं ऐसे-वैसे मानता नहीं। मान लूँ वैसा आदमी नहीं। मेरे जीवन के बारे में मैंने प्रयोग उन्होंने मुझे करवाये हैं।

• *मोटा* का शरीर– असह्य रोगों का संग्रहस्थान फिर भी सक्रिय •

आज भी वह प्रयोग मेरे गुरुमहाराज कहते कि अनुभव की बात सब बात तू करता, लेकिन प्रयोग बगैर गलत साहब। यह मेरा शरीर आज कोई पाँच हजार रुपये यदि दे तो मेरी

तैयारी है । मैं क्लिनीक में, कहे उस क्लिनीक में जाने को तैयार हूँ । और मेरे रोग ऐसे हैं, कल्पना के नहीं । वह जाँच कर ले । और कई रोग ऐसे हैं प्रत्यक्ष सभी रोग प्रत्यक्ष दिखे । एक सिर का यह ग्लुकोमा दिखे ऐसा नहीं साहब । यह साफा इससे बाँधता हूँ । मेरी तैयारी है । किसी की तैयारी हो पाँच हजार रुपये देने कि तो मेरी तैयारी है सबूत कर ले । और इतना ही नहीं, परंतु १३२ नाड़ी हुई हो, तब नडियाद से हजार रुपये के लिए साहब । मेरे भगवान का प्रसाद है । मैं तिरस्कार करूँ किस तरह ? तो मैं गया वहाँ । और वहाँ प्रमुख थे डॉक्टर हीराभाई साहब । ये हमारे काँटावाला साहब बैठे हैं, वे जानते हैं । प्रसिद्ध डॉक्टर वहाँ के । मैंने कहा, ''साहब, जरा नाड़ी जाँचिये न ।'' वह १२० ! अररर ! तो अभी । आप यहाँ रह जाईए अभी । हम जा सकते नहीं । ऐसी स्थिति में भी साहब वहाँ से वापस डेढ़ सौ मील गया सूरत । कल भी १२० नाड़ी थी । आज तो जाँची नहीं । हाँ, जाँची थी डॉक्टर ने । ११० है आज । परंतु मैं कुछ यह शरीर मेरा यह कुछ शरीर नहीं । अंदर जो बोल रहा है, वह शरीर नहीं । वे मेरे गुरुमहाराज ने कहा प्रयोग बिना की बात भाई सब गलत ।

तब यह जो हकीकत है, यह हकीकत तो भगवान का— कृपा का प्रसाद है । तो मेरी आप सब को प्रार्थना है कि हम सब इकट्ठे होते हैं और मेरे पर भाव रखते हो, वह मैं भाव को, ऐसे ही माननेवाला आदमी नहीं भाई । आपमें वृत्ति जागेगी तो सक्रिय होती है । सक्रिय होती है साहब । काम की वृत्ति हुई

तो सक्रिय होगी। लोभ की वृत्ति हुई तो सक्रिय होगी। मोह की वृत्ति हुई तो भी वह सक्रिय होगी। तो भगवान की वृत्ति चुपचाप कैसे बैठी रहेगी ?

• भगवान को प्राप्त करने के अनंत मार्ग हैं •

मेरे भगवान ने और मेरे गुरुमहाराज ने बताया कि, **भाई, इन उपदेशों से नहीं सुधार होगा इस देश में। यह समाज उपदेश से उन्नत नहीं होगा** और यह मेरी बात गलत हो तो आप सब विचार करना।

आज शहर-शहर में सप्ताहें होती हैं। उसे मेरा कम महत्त्व देने का हेतु नहीं है। भाई। मेरे भगवान का। इस सूर्यनारायण के अनंत मार्ग हैं, अनंत किरणें हैं। गलत हो तो आप मुझे कहना। अनंत हैं। भगवान को प्राप्त करने के अनंत मार्ग हैं। एक मार्ग नहीं। अनंत मार्ग हैं। भगवान रामकृष्ण परमहंस की बात करूँ। आज भले कोई उसे माने या ना माने, उसे परंतु मैं तो कहता हूँ कि उसकी बात सच है। वह अर्वाचीन है। अनुभवी मात्र अर्वाचीन है। वह पुराना हो सकता नहीं। पुराना होने की इच्छा हो तो भी नहीं हो सकता। हालांकि इच्छा ही ना कर सके। उसे किसी ने पूछा, ''भाई ये सब क्या ? यह तंत्र और वाम-मार्ग। उसने भगवान ने कहा। कितने उदार थे और कितने अनुभवी ! कि भाई, घर में गटर के मार्ग से भी जा सकते हैं। घर में गटर के मार्ग से भी जा सकते हैं। बोलो, आपको सब को और आज के विचारकों जो मौलिक विचारकों

हैं, उसे शायद यह नहीं उतरे, लेकिन साहब बात उसकी सच्ची है। अनंत मार्ग हैं। भगवान के मार्ग पर। उस चेतन को अनुभव करने के अनंत मार्ग हैं। उस मार्ग को आप कैसे ना कह सकते हो ? आपने अनुभव नहीं किया हो। आपका मार्ग अलग हो। आपकी बुद्धि अभी इस चेतन के जितनी चेतनवाली– चेतन–चेतना से भरी हुई। अनंत विस्तार तक पहुँची हुई नहीं है ऐसा मैं कहता हूँ आज। इसलिए जो जिस मार्ग पर जाता हो, वह सब मार्ग भगवान के मार्ग पर है। यह नहीं है। यह हो ही नहीं सकता, यह बात नहीं।

• मौनमंदिरों की स्थापना–प्रयत्न और स्वदोषदर्शन •

दूसरा, ये जो सब मैं कर्म करता हूँ। भगवान के मार्ग पर सब को मोड़ सकूँ ऐसा नहीं है। संभव ही नहीं है। बहुत सारी कथाएँ होती हैं; सप्ताहें होती हैं, उपदेश होते हैं, साधु–संन्यासियों जगह–जगह पर इन उपनिषदों के पाठ करते हैं। कुछ फायदा हुआ नहीं है अभी तक। इससे एक तरफ से मैं स्वयं प्रयत्न करे। प्रत्येक व्यक्ति स्वयं प्रयत्न करे ऐसे उपाय के लिए सब मौनमंदिर किये हैं। मैं किसी को उपदेश देता नहीं हूँ। कहता नहीं कुछ भी।

प्रामाणिकता, वफादारी, हृदय–निष्ठा से प्रयत्न करता जो,
विजय के मार्ग की चाबी, जरूर उसे मिल जाती है।
प्रामाणिकता, वफादारी, हृदय–निष्ठा से प्रयत्न करता जो,
विजय के मार्ग की चाबी, जरूर उसे मिल जाती है।

वह चाहिए आपमें । हमारे समाज के लिए मुझे कहते थोड़ा दुःख होता है लेकिन बात सच्ची है । मेरे आश्रम में आज अमेरिकन सब बैठने आते हैं । उन लोगों में इस तरह मुझे ज्यादा अच्छा लगता है । हमारे से ज्यादा वे frank हैं, sincere हैं । यानी कि सब साफ, खुले दिल के हैं । मेरे आश्रम में अनेक बैठते हैं सब । किन्तु जिस तरह से वे लोग प्रयत्न करते हैं, जो वफादारी उनका जो काम लिया उसके प्रति उनकी जो प्रामाणिकता है, जो वफादारी है, जो हृदय की निष्ठा है, उसमें हमारी कमी है । तो यह जो एक भाई बैठा है । सामने ही है देखो .... कभी के वे बैठे हैं । अभी ही, अभी ही वह मौन में से उठकर आया । तो एक तरफ से यह मैं प्रयत्न करता हूँ कि,

प्रामाणिकता, वफादारी, हृदय-निष्ठा से प्रयत्न करता जो,
विजय के मार्ग की चाबी, जरूर उसे मिल जाती है ।

इससे वह किया करे कोई । बाकी यह उपदेश से या ये सप्ताहों से या ये कथाएँ करने से कुछ होनेवाला नहीं । अरे भाई, उससे उसमें तो उसके संस्कार तो फूटेंगे । हमारा समाज दिन पर दिन ज्यादा अभिमुखतावाला । भगवान की अभिमुखतावाला होता मुझे अनुभव में आता नहीं है । इससे मैंने यह मार्ग लिया कि हरएक व्यक्ति को बैठने दो अंदर और अपने आप प्रयत्न करने दो । कुछ नहीं तो उसे समझ आएगी कि मेरे में कैसा-कैसा भरा पड़ा है । अनेक प्रकार का । उस बेचारे को कुछ

काम नहीं। कुछ सामने आकर उसकी आँख, हमारी कर्मेन्द्रियाँ, ज्ञानेन्द्रियाँ वहाँ से मिलता ही नहीं खुराक । इससे अंदर के संस्कार बाहर आते हैं । रस्सी की ऐंठन निकलती है, वैसे वे संस्कार उसे मालूम पड़ते हैं । कुछ ऐसे बने हुए उदाहरण साहब, कि उसे ऐसे सिनेमा के पर्दे पर जैसे दृश्य दिखते हैं और उसे अपने कर्म दिखते हैं प्रत्यक्ष, स्थूल रीति से । इससे उसे पछतावा भी हुआ है । और वापस भी मुड़े हैं । तब इस तरह प्रयत्न अपने आप करे उसमें से उसे भगवान की कृपा से जो होना हो, वह हो जाय। बाकी मैं उपदेश में बिलकुल मानता नही हूँ ।

यह तो एक प्रवचन ऐसे उत्सव हो तब करता हूँ। या तो कोई मुझे ले जाय भाई जिस तरह सोलिसीटर या वकील को फीस देकर कोई ले जाय तब उसका केस चलाना पड़े । तब जो कोई मुझे दे और मुझे ले जाय । बहुत लोग मुझे रोट खाने बुलाते हैं। निमंत्रण देते हैं। मदद करते हैं और कराते हैं। तब एक तरफ से यह काम करता हूँ, तब सिर्फ मैं बोलने का करता हूँ । बाकी नहीं करता । मेरे में । आश्रम में आये तो इधर-उधर दूसरी बात करूँ । बहुत कहते ज्ञान की बात करो । तो मैं मना कर दूँ भाई, तुम रहने दो, व्यर्थ यह सब । कुछ करना नहीं । सिर्फ स्वार्थ में डूबा हुआ आदमी । कोई प्रयत्न करता हो तो मैं बहुत राजी होता हूँ ।

• अनुभवी मौलिक है, सर्जनशील है •

तो एक तरफ यह काम करता हूँ। अनेकों को ऐसा होता है कि **मोटा,** ये क्या सब चेष्टा लेकर बैठे हो ? परंतु मेरे सामने मेरा भगवान है। मेरा गुरुमहाराज मेरे सामने हैं। मेरा आदर्श चेतन है। वह पलपल सक्रिय है। कितना ही सर्जन करता है। गलत बात हो तो आप सोचना बुद्धि से और मुझे कहना बाद में। यह हो जाने के बाद। तो मैं कबूल करूँगा। मेरी समझने की तैयारी है। मैं किसी प्रकार का आग्रह रखता नहीं हूँ। मैं ही सच्चा हूँ, यह बात भी मैं गलत मानता हूँ। किन्तु मुझे लगता है कि मेरे सामने जो मेरे सामने है, वह भगवान मेरा है, पलपल सक्रिय सर्जन करता है। तो अनुभवी व्यक्ति से किसी न किसी प्रकार का सर्जन होता है। एक ही प्रकार हो। अनंत मार्ग हैं सर्जन के भी। वह ठोस होना चाहिए। वह सर्जन और मेरे दिल में ऐसी समझ है कि अनुभवी मौलिक है।

• पल पल पर....पलटना....रूपम् रमणीय पाया •

उसको तो रमणीय कहा है। भगवान हमारा सौंदर्य है। उसके समान किसी को सौंदर्य है ही नहीं। वह पल-पल पर मौलिक है। पल-पल में उसमें नवीनता है। अनुभवी व्यक्ति ऐसा मौलिक होना चाहिए। दूसरी मुझे ऐसी समझ है कि लीक अनुसार नहीं। इससे मेरे गुरुमहाराज की कृपा से भगवान के अनंत उसकी कृपाप्रसादी से मुझे लगा कि **इस समाज में मर्दानगी, साहस, हिम्मत, ये सब प्रकट हो तो ही धर्म रह**

सके उसमें । अन्यथा कहाँ से बेचारा रहे ? गुण और .... गुण बिना कहाँ से ? गुण बिना ।

इस मार्ग में इतने सारे पराक्रम की जरूरत पड़ती है साहब, यह देवासुर संग्राम जागता है तब । यह कल्पना की हकीकत नहीं है । तब यह जो मर्दानगी, यह जो पराक्रम यह जो चाहिए, वह बड़े से बड़े सेनाधिपतिओं से भी बढ़ जाय ऐसा है । तब ये सब सर्जन । हमारे देश में हजारों मील का समुद्र । परंतु समुद्र रौंदने का जिस समाज को दिल ना हो वह समाज कैसा ?

• हमारा देश संशोधन में आगे बढ़े •

हमारे गुरुमहाराज मेरे भगवान मुझे ऐसे दर्शन कराये इससे ऐसे करूँ । दूसरा मुझे ऐसा लगा मेरे में देशभक्ति आज भी है । किसी से ज्यादा-कम की बात नहीं करता । मेरे स्वयं की बात करता हूँ । आज मेरे में देशभक्ति उतनी ही है । इससे ही मैं काम लेता हूँ कि इस दुनिया के देशों में मेरा भारत देश वह आगे की पंक्ति में रहे । वह तभी रह सकेगा कि अनेक प्रकार के संशोधनों में आगे रहे । मेरे पास तो कोई शक्ति नहीं है । मैं तो मेरे भगवान को प्रार्थना करता हूँ कि भगवान, **तू हमारे देश में हमारे देश के नेताओं में सद्बुद्धि प्रेरित कर कि अनेक क्षेत्रों में हम संशोधन कर सकें । हमारा देश गरीब है । मुझे लगा कि अकेली प्रार्थना सक्रिय भी मुझे कुछ करना चाहिए । इससे ये तीन काम लिए ।**

खेती में संशोधन हो बहुत जरूर का साहब । मैं तो कहता हूँ कि यह गरीबी हटाने का भगवान की कृपा से यत्किंचित् एक तिल के लाखवाँ जितना प्रयत्न कर रहा हूँ । कि उसमें जो संशोधन होगा और खेती की पैदावार बढ़ेगी तो सब को लाभ होनेवाला है । आज दवा के बिना किसी को चलता नहीं है । उसमें शोध होगी तो कितने सारों को .... । उसी तरह यह सायन्स और विज्ञान में **संशोधन होगा तो हमारा देश–हमारा देश दूसरे देशों की पंक्ति में भी रह सकेगा । अभी अनेक क्षेत्रों में ऐसे संशोधन की जरूर हैं । ऐसे दूसरे अनेक क्षेत्रों मुझे लगा कि बुक ओफ नोलेज की हमारे वहाँ मिलती नहीं हैं । हमें सायन्स और ऐसे अनेक काम मुझे जो हुए नहीं हैं । किसी की कल्पना में भी आते नहीं हैं । ऐसे काम मेरे गुरुमहाराज मुझे सुझाते हैं और यह सर्जन हैं ।** मुझे ऐसा लगा कि भगवान कि कृपा से एक तिल जितना भी यदि मेरे में इस बारे में मेरा भगवान यदि अंदर से प्रकट हुआ हो तो ऐसा सर्जन भी मेरे से होना चाहिए । परंतु मेरे गुरुमहाराज कहते हैं, कि बेटा, प्रयोग बगैर की बात गलत । यह मेरा शरीर ऐसा ही है साहब ।

• असह्य रोगों में भगवान की कृपा •

यह मुसाफिरी के लायक नहीं बिलकुल .... आज यहाँ से मुझे चलकर जाना हो तो अभी जा नहीं सकता । तब तो भी

मैं काम करता हूँ। वह मेरा बल नहीं है। अंदर का आंतरिक बल मेरा भगवान प्रकट हुआ है, उसका बल है। प्रयोग बिना मैं कुछ मानता नहीं हूँ। बिलकुल नहीं साहब। आज बैठा हूँ यहाँ मुक्ताबहन और विनोदभाई .... तब परिणाम बाहर आ गया था, भाई, डायाबीटीस शरीर को नहीं है। परंतु मेरा विचार ऐसा कि भाई मुझे नहीं वह बात सच्ची। लेकिन शरीर का कोई अंग हमारा कमजोर हो गया है, इससे हमसे नहीं लिया जाएगा। **मोटा** ले लो, ऐसा करके आग्रह करने लगे। मैंने उनका मान रखने के लिए एक टुकडा लिया। नंदुभाई ने कहा, **मोटा** ले लो, कोई हरज नहीं मेरे पास है पट्टी। वह जिमने के बाद दो घंटे बाद जाँच लेंगे। फिर मैंने तो लिया। लेकिन कुछ भी दूसरा लिया नहीं हं...अ.... कि केलेरी की बात को मैं मानूँ। सच देखना चाहिए। अकेली जलेबी बहुत खाई, किन्तु मैंने और फिर समझदारी से खाई कि उस diabetes का बिगड़ा हुआ अंग स्वस्थ है या बलवान है कि क्या ? यह मुझे मालूम पड़ेगा। इसलिए लो ज्यादा। साहब जाँचा तो मिले नहीं, राम तेरी माया। तो मैं कहता हूँ मेरे गुरुमहाराज कहते कि ऐसे ही बेटा, नहीं मानी जाएगी तुम्हारी बात। यह ग्लुकोमा है। ग्लुकोमा। वह इतनी सारी अंदर वेदना – शूल लगे कि दीवार में सिर पटककर मर जाय। वृद्धा को पूछना कि ग्लुकोमा हो, तब क्या होता है ? वह पूछकर विश्वास तो करना भाई। परंतु यह भगवान की......वह **उस**की परम कृपा है।

• त्याग और परमार्थ करो •

तो मेरी आप सब को प्रार्थना है कि हम सब को मिलने का हुआ है तो कुछ सार्थक करें । इसलिए अकेले स्वार्थ में मत राचो । त्याग और परमार्थ करो । नहीं करोगे तो भी करना पड़ेगा । ऐसा काल आ गया है कि जबरदस्ती करायेगा । यह काल ऐसा आता है कि जबरदस्ती करायेगा आपके पास त्याग । उसका कोई परिणाम नहीं आएगा । ज्ञानपूर्वक, हेतु की सभानता के साथ, हर्ष के मिजाज से त्याग करें, जो परमार्थ करें, उसका फल है । बाकी नहीं । लेकिन यह काल ऐसा आता है कि जबरदस्ती यह सरकार जबरदस्ती ले जाएगी । हमारे में भक्ति प्रकट हुई हो, देश के प्रति तो तो प्रेम से दे दें ।

इसलिए अब मुझे पाँच मिनट की ही देर है । यहाँ सभी भाइयों ने यह यहाँ की समिति के सभी भाइयों ने इतनी सारी मेहनत की है, अहमदाबाद के भाइयों ने, सब के नाम तो नहीं दूँगा । कितनी सारी मेहनत की है इस बार । इससे यह सूरत के और अन्य सभी भाइयों आये हुए को मेरी प्रार्थना है कि आज आपकी यहाँ पर समर्पण विधि करो और दो तब थोड़ा ज्यादा देना । हर बार जैसा करना नहीं । और ये बहनों से मेरी प्रार्थना है कि मुझे गहनें पहनने हैं । गरीब आदमी । किसी दिन पैसे देखे नहीं हैं । साहब, तो मुझे ये गहनें पहनाइये । ये गहनें सत्कर्म में सत्कर्तव्य में उपयोग आएँगे । यज्ञ है यह तो । और एक व्यक्ति ने मुझे पूछा कि **मोटा** आप भक्त की व्याख्या मुझे

दीजिये । मैंने कहा, दे दूँ । भाई मुझे देरी क्या ? लाओ न ! तुरंत ही उसके सामने ही लिखा भी नहीं मैंने ।

समर्पण करे सब जो भी कुछ हरि के पाद भक्त जो,
भक्त को अच्छा बुरा नहीं, भक्त के कर्म यज्ञ हैं ।
समर्पण करने को कुछ ना रहे बाद में भक्त को,
ऐसे भक्त का संपूर्ण जीवन यज्ञ भव्य है ।

तब यह सब को फिर से प्रार्थना है कि इस थाली में रखो । **यहाँ कोई ऊपर मत आना । और मुझे हार पहेनाने का कृपा करके कोई करना नहीं ।** और कृपा करके बहनों को प्रार्थना है कि गहनें देना ।

यह काल ऐसा आएगा कि ये गहनें भी नहीं रहेंगे । चीन का उदाहरण लो– चीन का । चीन ने कहा किसी के पास सोना रखना नहीं । और घर में यदि रखा हो तो लड़के अपने उनके बाप को फाँसी पर लटका देते । तो ये रखा हुआ, संभाला हुआ संभाला नहीं जाएगा । ऐसा काल आनेवाला है । मैं कोई घबराता डराता नहीं हूँ । परंतु यह प्रेम से त्याग करो । और मुझे दो और इस यज्ञ के कार्य में भाग लो ।

• *मोटा* की प्रभु-प्रार्थना त्यागी-परमार्थियों के लिए •

ये सभी भाइयों ने अहमदाबाद के, वडोदरा के, अन्य स्थानों के भाइयों ने बहनों ने ये मेरे लिए जो मेहनत ली और बीते कल ही मुझे हुआ कि, मैं क्या बदला दूँ ? मेरे से तो कुछ दिया जा सके ऐसा नहीं है । इससे मैं तो मैं तो भजन

करूँ भगवान का। वह भजन करके मेरा कहना मैं पूरा करता हूँ। इतने में समय भी हो जाएगा।

हुए उपकारों को प्रभुमय भावना जीवन,
हृदय उभारने के लिए कृपा से प्रार्थना हुई है।
संभव नहीं चुकाना किसी का कोई बदला अन्य रीति से,
हरि को प्रार्थना भाव से करूँ दिल जहाँ मैं उस लिए।
हमारे से तिनका भी न तोड़ कुछ सकेगा वह,
मदद करने ही सब पात्र समर्थ सिर्फ हरि स्वयं।
मदद का योग्य बदला वह, पूरा वह चूका सकेगा वह,
किस तरह और फिर कब हरि वह योग्य जानता है।
फिर कहता है, सुनो साहब;

यह एक हम सभी समझ लें.... होनेवाले कर्म। जब कर्म हो रहे हो, उसी पल में exactly at that very moment बाद में नहीं।

होते कर्म में सचमुच हो हृदय का भाव जैसा उस,
अनुसार वहाँ परिणाम सब निश्चित प्राप्त होता है।
हुए उपकारों को प्रभुमय भावना जीवन,
हृदय उभारने के लिए कृपा से प्रार्थना हुई है। हरिः....... ओ.......म् तत् सत्।

• • •

हरि:ॐ आश्रम में उपलब्ध हिंदी पुस्तकों का लिस्ट

क्रम	पुस्तक	प्र.आ.
१.	पूज्य श्रीमोटा एक संत	१९९७
२.	कैंसर का प्रतिकार	२००८
३.	सुख का मार्ग	२००८
४.	दुर्लभ मानवदेह	२००९
५.	प्रसादी	२००९
६.	नामस्मरण	२०१०
७.	हरि:ॐ आश्रम (श्रीभगवानकेअनुभवकास्थान)	२०१०
८.	श्रीमोटा के साथ वार्तालाप	२०१२
९.	विवाह हो मंगलम्	२०१२
१०.	बालकों के **मोटा**	२०१२
११.	विद्यार्थी **मोटा** का पुरुषार्थ	२०१२
१२.	मौनमंदिर का मर्म	२०१३
१३.	मौनमंदिर का हरिद्वार	२०१३
१४.	मौनएकांत की पगडंडी पर	२०१३
१५.	मौनमंदिर में प्रभु	२०१४

●

English books available at Hariom Ashram Surat.
January - 2020

No.	Book	F. E.
1.	At Thy Lotus Feet	1948
2.	To The Mind	1950
3.	Life's Struggle	1955
4.	The Fragrance Of A Saint	1982
5.	Vision of Life - Eternal	1990
6.	Bhava	1991
7.	Nimitta	2005
8.	Self-Interest	2005
9.	Inquisitiveness	2006
10.	Shri Mota	2007
11.	Rites and Rituals	2007
12.	Naamsmaran	2008
13.	Mota for Children	2008
14.	Against Cancer	2008
15.	Faith	2010
16.	Shri Sadguru	2010
17.	Human To Divine	2010
18.	Prasadi	2011
19.	Grace	2012
20.	I Bow At Thy Feet	2013
21.	Attachment And Aversion	2015
22.	The Undending Odyssey (My Experience of Sadguru Sri Mota's Grace)	2019

●

॥ હરિ:ૐ ॥

उत्तम दान – समाज में गुण और भावना प्रगट करे वह

उनके जीवन में ऐसे कई प्रसंग बनते हैं कि उसे मालूम हे कि अमुक व्यक्ति के जीवन के साथ पूर्वकाल का मेरा ऐसा संबंध है । वे कहते नहीं हैं । परंतु यह संबंध है । तब पहले भी जन्म था, अभी भी जन्म है और इसके बाद भी होगा । परंतु इस जन्म का हमारा जो शरीर है, उसमें जो गुण और भाव प्रकट हुए होंगे, वे हमारे साथ आनेवाले हैं । इससे मैं जो कोई धनवान बहुत भावनावाले हो तो ***मैं कहता हुं भाई, आप धर्मादा करो । परंतु इस प्रकार का करो कि जिससे सामनेवाले व्यक्ति में गुण और भावना प्रकट हो । वह उसके साथ-साथ आएगा और समाज को ज्यादा कल्याणकारक है । इस प्रकार की भावना ।***

– ***श्रीमोटा***

‘श्रीमोटावाणी-३’, प्र. आ., पृ. ३१

किंमत : रु. १०/-